बैंक ऑफ़ बड़ौदा
Bank of Baroda

# अक्षय्यम्

जनवरी – मार्च 2021

बैंक ऑफ़ बड़ौदा की हिंदी पत्रिका

## प्रमुख गतिविधियां

### महाराजा सयाजीराव लोक भाषा सम्मान समारोह आयोजित

दिनांक 19 जनवरी, 2021 को प्रधान कार्यालय, बड़ौदा में विश्व हिंदी दिवस का आयोजन किया गया. इस कार्यक्रम में चौधरी, धोडिया, गामित एवं कुंकणा बोली के संरक्षण हेतु कार्य करने वाले डॉ. विक्रम चौधरी को 'महाराजा सयाजीराव लोक भाषा सम्मान–वर्ष–2019' से सम्मानित किया गया. इस अवसर पर मुख्य महाप्रबंधक श्री के सत्यनारायण राजू, महाप्रबंधक श्रीमती अर्चना पांडेय, श्री पी एस रेड्डी, श्री जी के पानेरी तथा अन्य स्टाफ सदस्य उपस्थित रहे.

### अंचल कार्यालय, पटना द्वारा महामहिम राज्यपाल की अध्यक्षता में हिंदी ई संगोष्ठी का आयोजन

दिनांक 08 मार्च, 2021 को अंचल कार्यालय, पटना द्वारा 'सशक्त नारी–आत्मनिर्भर भारत' विषय पर हिंदी ई संगोष्ठी का आयोजन किया गया. कार्यक्रम में मुख्य अतिथि एवं अध्यक्ष के रूप में झारखंड राज्य की महामहिम राज्यपाल श्रीमती द्रौपदी मुर्मु तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में ओडिया चलचित्र कलाकार कुमारी निकिता मिश्रा उपस्थित रहीं.

### 'मौजूदा समय में मातृभाषाओं के संरक्षण की आवश्यकता' विषय पर व्याख्यान आयोजित

दिनांक 19 फरवरी, 2021 को प्रधान कार्यालय, बड़ौदा में 'मौजूदा समय में मातृभाषाओं के संरक्षण की आवश्यकता' विषय पर प्रसिद्ध साहित्यकार, भाषाविद्, सांस्कृतिक एवं सामाजिक कार्यकर्ता प्रो. कानजी पटेल के व्याख्यान का आयोजन किया गया. इस अवसर पर बैंक की मेधावी विद्यार्थी सम्मान योजना के अंतर्गत महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय, बड़ौदा में एम.ए. (हिंदी) में प्रथम एवं द्वितीय स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया. कार्यक्रम में बैंक के मुख्य महाप्रबंधक (परिचालन) श्री वेणुगोपाल मेनन एवं अन्य कार्यपालकगण उपस्थित रहे.

बैंक ऑफ़ बड़ौदा Bank of Baroda

# अक्षय्यम्

बैंक ऑफ़ बड़ौदा की तिमाही हिंदी पत्रिका

वर्ष – 18 ❊ अंक – 65 ❊ जनवरी – मार्च 2021

**कार्यकारी संपादक**

**वेणुगोपाल मेनन**

मुख्य महाप्रबंधक (राजभाषा, संसदीय समिति एवं का.प्र.)

**संपादक**

**पुनीत कुमार मिश्र**

सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा एवं संसदीय समिति)

**सहायक संपादक**

**अम्ब्रेश रंजन कुमार**

वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा)

**अमित बर्मन**

प्रबंधक (राजभाषा)

**–: संपर्क :–**

**राजभाषा विभाग**

बैंक ऑफ़ बड़ौदा, बड़ौदा भवन,

पांचवी मंजिल, आर सी दत्त रोड

अलकापुरी, बड़ौदा – 390007

फोन : 0265-2316581

ईमेल : rajbhasha.ho@bankofbaroda.com

bobakshayyam@gmail.com

बैंक ऑफ़ बड़ौदा के लिए **पुनीत कुमार मिश्र,**

सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा एवं संसदीय समिति)

द्वारा बड़ौदा भवन,

बैंक ऑफ़ बड़ौदा, पांचवी मंजिल, आर सी दत्त रोड,

अलकापुरी, बड़ौदा – 390007 से संपादित एवं प्रकाशित.

**रुपांकन एवं मुद्रण**

जयंत प्रिन्टरी एलएलपी, मुंबई

प्रकाशन तिथि : 10-05-2021

# अनुक्रमणिका

## इस अंक में

प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी का संदेश ..... 04

कार्यपालक निदेशकों की डेस्क से ..... 05-06

कार्यकारी संपादक की कलम से / अपनी बात ..... 07

अपनी भाषाई विरासत को जानना और समझना जरूरी..... 08-10

'बैंकिंग में अनुपालन संस्कृति' विषय पर
अखिल भारतीय वेबिनार का आयोजन ..... 11

ई-कॉमर्स : सुविधाएं और चुनौतियाँ ..... 12-14

राजस्थान : पधारो म्हारे देश..... 16-19

बैंकिंग में अनुपालन संस्कृति की आवश्यकता ..... 22-23

हमारा स्वास्थ्य और कोलेस्टेरॉल की भूमिका..... 28-31

सुखद पड़ाव ..... 37

## स्थायी स्तंभों में

26 आइये सीखें भारतीय भाषाएँ

36 बैंकिंग शब्द मंजूषा

37 अनुभव-अभिव्यक्ति

43 अपने ज्ञान को परखिए

48 पुस्तक-समीक्षा

50 चित्र बोलता है

अक्षय्यम्, बैंक ऑफ़ बड़ौदा की सभी शाखाओं/कार्यालयों में नि:शुल्क वितरण के लिये प्रकाशित की जाती है. इसमें व्यक्त विचारों से बैंक का सहमत होना आवश्यक नहीं है.

# प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी का संदेश

प्रिय बड़ौदियंस,

बैंक की हिंदी पत्रिका अक्षय्यम् के माध्यम से आपके साथ संवाद स्थापित करना मेरे लिए आनंदकारी होता है. इस चुनौतीपूर्ण दौर में अपनों से अपनत्व के साथ निरंतर संवाद बहुत जरूरी है. हम विगत वर्ष से ही लगातार अभूतपूर्व वातावरण में जी रहे हैं. परिस्थितियां लगातार बदल रही हैं. हम सभी इसका बड़ी बहादुरी से सामना कर रहे हैं. उतार-चढ़ाव का दौर बदस्तूर जारी है. हम इस संकट भरे दौर के साक्षी मात्र नहीं हैं बल्कि हम अपने व्यक्तिगत एवं सामूहिक प्रयासों से लगातार इससे संघर्ष कर रहे हैं. इस लड़ाई में हमने सुख और दुःख दोनों को बहुत ही करीब से देखा है. पूरे विश्व के समक्ष आई कोरोना की दूसरी लहर पहले से कहीं अधिक जोखिम भरी है. यह हमारे जीवन और देश की अर्थव्यवस्था के लिए खतरा है. ऐसे विकट समय में आपने तमाम सावधानियां बरतते हुए देश की अर्थव्यवस्था के लिए और ग्राहकों के लिए निर्बाध बैंकिंग सेवाएं जारी रखी हैं. मैं जानता हूं कि इस महत्वपूर्ण कार्य को करते हुए आपने इसकी कीमत भी चुकाई है और हमारे कुछ साथियों और उनके परिवारों को इस संकट के कारण अपने प्राणों की आहुति देनी पड़ी है, जिनके प्रति मैं संवेदना व्यक्त करता हूं. इसके बावजूद हम सभी ने अपने सामूहिक प्रयासों से अपने कार्य को आगे बढ़ाया है.

तमाम विपरीत परिस्थितियों में भी बैंकिंग के सफ़र को निर्बाध जारी रखने हेतु आप सभी के साहसिक प्रयासों की मैं सराहना करता हूं. हम सभी के लिए यह जरूरी है कि इस दौर में हम अपना कार्य करें परंतु स्वयं को सुरक्षित और स्वस्थ रखने में कोई कसर बाकी न छोड़ें. बैंक भी इस दिशा में जो भी संभव है, आवश्यक कदम उठा रहा है.

कोरोना की लहर से स्वयं को सुरक्षित रखने के लिए टीकाकरण ही एक उपाय माना जा रहा है. बैंक के सभी स्टाफ-सदस्यों और परिवारों को समय से टीका लग पाए इसके लिए बैंक ने अनिवार्य कदम उठाए हैं और हमारे कई स्टाफ-सदस्यों ने टीके लगवा भी लिए हैं. अब भारत सरकार ने भी 18 वर्ष से अधिक आयु वाले नागरिकों को टीका लगवाने की प्रकिया शुरू कर दी है. हम सभी को कोरोना महामारी से बचने के लिए भारत सरकार के सभी नियमों का पालन करना आवश्यक है और लगातार सामाजिक दूरी बनाए रखनी है.

इस दौर में वर्चुअल तथा डिजिटल माध्यमों को बढ़ावा देना जरूरी है. इसके साथ ही आज नई कार्यप्रणालियों को अपनाने की आवश्यकता है जो हम सभी को कार्य का सुरक्षित माहौल प्रदान करें. तदनुसार, हमें मोबाइल बैंकिंग और इंटरनेट बैंकिंग जैसे डिजिटल माध्यमों के उपयोग हेतु ग्राहकों को जागरूक करने की आवश्यकता है. यह हमारे और ग्राहक दोनों के लिए सुरक्षित सेवा प्रदान करने के साथ-साथ जीवन को सुरक्षित रखने का माध्यम होगा.

शुभकामनाओं सहित,

**संजीव चड्ढा**

## कार्यपालक निदेशक की डेस्क से...

प्रिय साथियो,

अक्षय्यम् के माध्यम से आप सभी के साथ संप्रेषण स्थापित करना मेरे लिए अत्यंत हर्ष का विषय होता है.

वर्तमान परिदृश्य में पूरी मानव जाति अपने भौतिक अस्तित्व के लिए अनेकानेक रूपों में संघर्षरत है. आज विश्व एक अजीब सी स्थिति से गुजर रहा है, जहां व्यक्ति न चाहते हुए भी अपनी असहायता की स्थिति प्रकट कर रहा है. एक ओर जहां कभी सामाजिक समरसता और निकटता की ओर पुरजोर प्रयास किए जा रहे थे, वहीं अबकी परिस्थितियों ने सामाजिक और वैयक्तिक दूरी बनाने के लिए विवश कर दिया है. इसका आशय यही है कि मनुष्य को उसके समक्ष उपस्थित परिस्थितियों के अनुरूप अभीष्ट परिणाम की प्राप्ति हेतु स्वयं को रूपांतरित अथवा परिवर्तित करना पड़ता है. आज की परिस्थिति कोई नई नहीं है, बल्कि इस तरह की परिस्थितियां प्राचीन काल में भी समय-समय पर उत्पन्न होती रही हैं. इसके अतिरिक्त यह भी सत्य है कि हम उन दिनों इतने अधिक सशक्त नहीं हुआ करते थे, जितना आज हैं. किन्तु संघर्षमय समय के अंतराल में विकसित हुई हमारी तकनीकी पहलें हमें आत्मनिर्भर बनाते हुए हर प्रकार की विषम परिस्थितियों का सामना करने में सहायक रही हैं. यह न सिर्फ वैश्विक परिस्थितियों के संदर्भ में तथ्यपरक है, अपितु बैंकिंग जगत के लिए भी उतना ही समसामयिक है.

विपरीत वैश्विक परिस्थितियों के बावजूद हमने कुछ विशिष्ट गतिविधियों को छोड़कर बैंकिंग व्यवसाय से संबंधित लगभग सभी महत्वपूर्ण दायित्वों का निर्वहन करते हुए अपने सभी मानदंडों के अनुरूप अपेक्षित लक्ष्य को प्राप्त करने हेतु हर संभव प्रयास किए हैं. हमने बैंक को एक नया रूपांतरित स्वरूप प्रदान करने के लिए कई नवोन्मेषी कार्य आरंभ किए हैं और दिन प्रति दिन ऐसे और नए प्रयास अभी भी जारी हैं. समग्र रूप से इन प्रयासों में हमने अनुपालन संस्कृति को अत्यधिक महत्व देते हुए बैंकिंग व्यवसाय से जुड़े विविध प्रकार के जोखिमों को अत्यल्प करने के प्रयास किए हैं.

संस्थागत मूल बैंकिंग व्यवसाय में राजभाषा हिंदी की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही है. वैश्विक संकट के बावजूद हमने राजभाषा कार्यान्वयन के सभी आयामों पर अपनी उत्कृष्टता को रेखांकित किया है. इन आयामों के तहत वर्चुअल माध्यमों से विविध गतिविधियों के आयोजन को अंजाम देने के साथ ही सृजनात्मकता को भी निरंतर जारी रखा है, बैंक की हिंदी पत्रिका 'अक्षय्यम्' इसका जीवंत उदाहरण है. मुझे आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि मौजूदा कठिनाइयों के बावजूद भी भाषा के संबल और स्टाफ सदस्यों के संगठित प्रयासों से स्थापित यह परंपरा सदैव जारी रहेगी.

मैं पत्रिका के इस अंक के माध्यम से आप सभी को सुखद, स्वस्थ एवं सफल जीवन हेतु अपनी मंगलकामनाएं देता हूं.

शुभकामनाओं सहित,

शांति लाल जैन

## कार्यपालक निदेशक की डेस्क से...

प्रिय साथियो,

पत्रिका के इस अंक के माध्यम से आपसे संवाद करते हुए मुझे अमेरिकी मूल की फिल्म निर्देशिका एवं लेखिका एमी पोहलर की पंक्ति, ''विषम परिस्थितियां कभी-कभी ऐसा कुछ सिखा जाती हैं, जिन्हें हम सीखने की जरूरत नहीं समझते थे.'' (*Sometimes painful things can teach us lessons that we didn't think we needed to know - Amy Poehler*) याद आती है. हम सभी एक कठिन दौर से गुजर रहे हैं. पिछले वर्ष से शुरू हुए इस उतार-चढ़ाव का दौर हम सभी के लिए अभूतपूर्व चुनौती लेकर आया है. वर्तमान पीढ़ी में से शायद ही कोई ऐसा हो जो अपने जीवनकाल में पहले कभी ऐसी स्थिति का साक्षी रहा हो.

परिस्थितियां जैसी भी हों, समय और जीवन चक्र को हर हाल में आगे बढ़ना होता है. मौजूदा हालात में समय की गति वही है परंतु मानव समाज के आगे बढ़ने की गति प्रभावित होकर धीमी हुई है. हम सभी बहुत कुछ सोचने को मजबूर हुए हैं. वास्तव में इन हालातों के बारे में हम सभी अपरिचित थे. इस दौर ने हम सभी को एक साथ कई सावधानियां बरतने और अपने आस-पास के बारे में गंभीरता से सोचने-जानने पर विवश किया है. निश्चित रूप से यह दौर नकारात्मकता को छोड़ सकारात्मकता के साथ आगे बढ़ने का है. परंतु यह भी सत्य है कि हमने इस दौर में कई नुकसान उठाए हैं जिनकी भरपाई नहीं की जा सकती. जीवन का कोई विकल्प नहीं है. इस दौर ने हमसे कई अपनों को छीना है. बैंकिंग उद्योग की बात करें तो हम सभी बैंककर्मी लगातार विपरीत हालात में भी बैंक के कार्य को आगे बढ़ाने और समाज को भी इस दौर में ज़रूरी सहायता पहुंचाने में सदैव सक्रिय रहे हैं. अपने इस मिशन में हमें कई अपूरणीय क्षति का भी सामना करना पड़ा है. इस आपदा से प्रभावित हमारे साथियों और उनके परिवारों की दुःख की घड़ी में हम सभी बड़ौदियन हमेशा उनके साथ खड़े हैं.

इस विषम परिस्थिति में बैंक ने भी अपने स्टाफ-सदस्यों के लिए समय रहते परिस्थिति-अनुकूल कई व्यवस्थाएं की हैं. इस दौर में मैं आप सभी से यही अपेक्षा करूंगा कि अपनी एवं अपने परिवारजनों की सुरक्षा सर्वोपरि रखते हुए अपना उचित कर्तव्य निर्वहन जारी रखें, सतर्क रहें, सुरक्षित रहें. मैं आप सभी के स्वस्थ जीवन की कामना करता हूं.

शुभकामनाओं सहित,

विक्रमादित्य सिंह खीची

## कार्यपालक निदेशक की डेस्क से

प्रिय साथियो,

पिछले कई दशकों से पत्र-पत्रिकाएं संवाद का एक सफल माध्यम रही हैं. पत्रिकाएं न केवल हमारी भावनाओं एवं विचारों की संवाहिका होती हैं बल्कि ये हमारी सृजनात्मकता को उजागर करने का एक माध्यम भी होती हैं. आपकी इन्हीं सृजनात्मकताओं, सफलताओं और संघर्षों की साक्षी हमारी हिंदी पत्रिका अक्षय्यम् के माध्यम से आपसे संवाद स्थापित करना हमेशा से मेरे लिए एक सुखद अनुभूति रही है.

इस तिमाही की समाप्ति के साथ हम अपनी विभिन्न व्यावसायिक और आर्थिक सफलताओं के साथ नए वर्ष में प्रवेश कर रहे हैं. प्रत्येक सफलता अपने साथ जीत को दोहराने के लिए कड़ी मेहनत करने, इससे अधिक हासिल करने तथा हासिल की गयी सफलताओं को बनाए रखने की चुनौती का संदेश लेकर आती है. इस वर्ष हमने कोविड-19 वैश्विक महामारी के कारण चल रहे लॉकडाउन से ग्राहकों को हो रही असुविधाओं से उन्हें बचाने तथा उन्हें बैंकिंग सेवाएं निर्बाध उपलब्ध कराने के उद्देश्य से डिजिटल बैंकिंग एवं मोबाइल बैंकिंग में कई नई सुविधाओं को जोड़ा है. साथ ही व्हाट्सऐप बैंकिंग जैसे डिजिटल चैनलों की शुरूआत करके बैंकिंग को ग्राहकों के लिए और सुविधाजनक एवं आसान बनाया है.

इन बैंकिंग सुविधाओं के साथ-साथ हमारी यह भी कोशिश रहती है कि हम अपने ग्राहकों को ये सभी सुविधाएं उनकी अपनी भाषा में उपलब्ध कराएं जिसके लिए हमने अपने सभी उत्पादों विशेषकर डिजिटल उत्पादों में हिंदी के साथ-साथ क्षेत्रीय भाषाओं को शामिल किया है. हालांकि इस वर्ष में बदलावों का दौर रहा है फिर भी सभी आर्थिक एवं सामाजिक बदलावों और उनके साथ आने वाली चुनौतियों के बावजूद भी हमारे ग्राहक और उनके प्रति हमारी प्रतिबद्धता में कमी नहीं आयी है. हम अपने ग्राहक अनुभव को बेहतर से सर्वोत्तम बनाने के लिए निरंतर प्रयासरत हैं.

हमें इन व्यावसायिक कार्यकलापों के साथ-साथ राजभाषा कार्यान्वयन की दिशा में भी अपनी स्थिति को मजबूत बनाए रखते हुए नित नई उपलब्धियों को हासिल करने की दिशा में नवोन्मेषी पहलों को आगे भी जारी रखना है. मुझे विश्वास है कि जिस प्रकार हम इस वैश्विक महामारी का बड़ी ही सावधानी और धैर्य के साथ सामना करते हुए अपने ग्राहकों को निर्बाध एवं सुरक्षित सेवाएं प्रदान कर रहे हैं, उसी प्रकार आगे भी हम इस आपदा से उत्पन्न हुई चुनौती को अवसर मानकर उत्कृष्टता के साथ ग्राहकों तक अपनी सेवाएं पहुंचाते रहेंगे और बैंक की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए प्रयासरत रहेंगे.

मैं यह कामना करता हूं कि आप सभी उत्तम स्वास्थ्य और प्रसन्नता के साथ सदैव इस प्रगति के पथ पर अग्रसर रहें.

शुभकामनाओं सहित,

अजय के खुराना

## कार्यपालक निदेशक की डेस्क से

प्रिय साथियो,

बैंक की हिंदी गृह पत्रिका 'अक्षय्यम्' के माध्यम से आपसे पहली बार संवाद करते हुए मुझे हार्दिक प्रसन्नता हो रही है. हमारा देश पिछले एक वर्ष से कोविड-19 महामारी का सामना कर रहा है जिसके कारण हमारी तेजी से विकसित होती हुई अर्थव्यवस्था भी प्रभावित हुई है. बैंकिंग उद्योग जो हमारी अर्थव्यवस्था की एक महत्वपूर्ण कड़ी है, वह भी इससे प्रभावित हुए बिना नहीं रह पायी है. हालांकि हमारी अर्थव्यवस्था में चालू वित्त वर्ष की अंतिम तिमाही से सभी क्षेत्रों में मजबूत रिकवरी के संकेत मिलने लगे हैं.

जब हम आपदा या किसी प्रकार की विपत्ति का सामना करते हैं तो हमें बहुत कुछ सीखने को भी मिलता है. हमारा बैंक पिछले कुछ वर्षों से तेजी से डिजिटल प्रक्रिया को अपना रहा था और पहले से ही डिजिटल रूपान्तरण की प्रक्रिया को पूरा करने की ओर अग्रसर था. हमने इसी बात को ध्यान में रखते हुए अपने ग्राहकों को सारी बैंकिंग सुविधाएं एक क्लिक पर उपलब्ध करानी शुरू कर दी जिससे हम आपदा से बहुत ज्यादा प्रभावित हुए बिना बैंकिंग सेवा प्रदान करते रहे. ग्राहकों ने भी परिवेश और समय को ध्यान में रखते हुए तेजी से डिजिटल संसाधनों को अपनाया, परिणामस्वरूप हमारे ग्राहक आधार में भी वृद्धि हुई.

मेरा यह मानना है कि प्रशिक्षण एवं निरंतर कौशल विकास से हमें समय और बदलते परिवेश के हिसाब से अपने-आप को तैयार रखने में मदद मिलती है. इसी को ध्यान में रखते हुए बैंक अपने कर्मचारियों के कौशल विकास के लिए लर्निंग डेवलपमेंट के नए आयाम विकसित कर रहा है. बैंक ने अपने स्टाफ सदस्यों के मनोबल को बढ़ाने के लिए कई एचआर पहलें भी की हैं.

बदलते परिदृश्य में अब बैंक ब्रिक-मोर्टार की अवधारणा से काफी आगे आ गए हैं और बैंकिंग सुविधाएं केवल ऋण प्रदान करने तक ही सीमित नहीं रह गयी है बल्कि आने वाले समय में बैंकिंग अवधारणा में एक विश्वास आधारित परिवेश की कल्पना है. जब हम विश्वास आधारित परिवेश की बात करते हैं तो भाषा और तकनीक की भूमिका काफी अहम हो जाती है. हम एक बहुभाषी देश हैं और हमारा लक्ष्य समाज के प्रत्येक वर्ग तक अपने उत्पादों को पहुंचाना है. हमें तेजी से अपने उत्पादों के प्रचार-प्रसार में और अपनी डिजिटल प्रक्रिया में हिंदी और अन्य क्षेत्रीय भाषाओं का समावेश करना होगा. मुझे अत्यंत खुशी है कि हमारे बैंक के डिजिटल प्लेटफॉर्म पर हिंदी एवं कई क्षेत्रीय भाषाओं का समावेश है. कहीं-न-कहीं इससे बैंक में एक सुदृढ़ राजभाषाई अनुपालन संस्कृति भी प्रदर्शित होती है. मैं सभी बड़ौदियन से अनुरोध करता हूँ कि आप अपने दैनिक कार्यों में राजभाषा का समावेश करें ताकि हम अपने उत्पादों को लोगों तक उनकी भाषा में पहुंचाते रहें और बेहतर ग्राहक सेवा के साथ व्यवसाय विकास में उतरोत्तर वृद्धि करते रहें.

शुभकामनाओं सहित,

देबदत्त चाँद

## कार्यकारी संपादक की कलम से...

प्रिय साथियो,

बैंक की तिमाही हिंदी पत्रिका 'अक्षय्यम्' के माध्यम से आपसे संवाद करने का अवसर प्राप्त कर हर्षित महसूस कर रहा हूं. मैं यहां संवाद शब्द को रेखांकित करना चाहूंगा क्योंकि आज के समय में इसकी महत्ता पहले से अधिक बढ़ गई है. अपने परिवारजनों एवं साथियों से संवाद करते रहना सुखद अनुभूति प्रदान करता है और आज के दौर में खुश रहना अति महत्वपूर्ण है. यह पत्रिका हमारे बड़ौदियन साथियों को कविताओं, कहानियों, संस्मरण आदि के माध्यम से अपनी बात कहने का अवसर प्रदान करती है.

इस चुनौतीपूर्ण माहौल में भी हमारा बैंक राजभाषा कार्यान्वयन की निरंतरता को बनाए रखने के प्रति प्रयासरत रहा है. मार्च, 2021 तिमाही के दौरान राजभाषा संबंधी कई कार्यक्रम उत्साहपूर्ण माहौल में सफलतापूर्वक आयोजित किए गए. विश्व हिंदी दिवस-2021 के अवसर पर आयोजित समारोह में हमने पी.आर.बी.आर्ट्स एंड पी.जी. आर. कॉमर्स कॉलेज, बारडोली (गुजरात) के गुजराती विभाग के एसोशिएट प्रोफेसर डॉ. विक्रम चौधरी को ''महाराजा सयाजीराव लोकभाषा सम्मान-2019'' से सम्मानित किया. अंचल के राजभाषा प्रभारियों के लिए अर्द्ध-वार्षिक समीक्षा बैठक के आयोजन के अलावा हमने अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के अवसर पर ''मौजूदा समय में मातृभाषाओं के संरक्षण की आवश्यकता'' विषय पर व्याख्यान आदि का भी आयोजन किया. ये सभी आयोजन राजभाषा एवं क्षेत्रीय भाषाओं के प्रति बैंक की प्रतिबद्धता को भी दर्शाते हैं.

साथियो, आज के परिदृश्य में राजभाषा कार्यान्वयन अन्य बैंकिंग कार्यों के समान ही चुनौतीपूर्ण हैं परंतु तकनीक ने अपनी उपयोगिता बखूबी साबित की है. उपर्युक्त राजभाषा कार्यक्रमों को यथा संभव वर्चुअल माध्यम से आयोजित करने का प्रयास किया गया है. तकनीक की सहूलियत और स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता के कारण महामारी खत्म होने के बाद भी हमें वर्चुअल माध्यमों को वरीयता देने की जरूरत है और इस अभूतपूर्व संकट से उबरने के बाद अपने स्वास्थ्य के प्रति अपना दृष्टिकोण बदलने की नितांत आवश्यकता है.

तमाम कठिनाइयों के बावजूद सभी स्टाफ सदस्यों के सहयोग से हमने बैंक में राजभाषा कार्यान्वयन को आगे बढ़ाया है. मेरा विश्वास है कि आगे भी साथ मिलकर हम राजभाषा कार्यान्वयन को नई ऊंचाइयों पर ले जाने में सफल होंगे और इस पत्रिका के नाम की भांति अपनी उम्मीदों को अक्षय बनाए रखेंगे.

शुभकामनाओं सहित,

वेणुगोपाल मेनन
मुख्य महाप्रबंधक

## अपनी बात

कहा गया है कि **शरीरमाद्यं खलु धर्म साधनम्** अर्थात् शरीर ही सभी धर्मों (कर्तव्यों) का साधक होता है. जब तक हम स्वस्थ नहीं रहेंगे हम अपने उत्तरदायित्वों का समुचित निर्वहन नहीं कर पाएंगे. उल्लेखनीय है कि वैश्विक स्तर पर व्याप्त मौजूदा स्वास्थ्य संकट ने इस सूक्ति की सार्थकता को गहराई से रेखांकित किया है.

गत एक वर्ष से संपूर्ण मानव जाति की प्राथमिकताएं बदल गई हैं. कोरोना की विभीषिका ने स्वस्थ रहने के लिए हम सभी को न केवल प्रेरित किया है बल्कि इसके लिए विवश कर दिया है. जहां भौतिकता की चकाचौंध और जीवन की आपाधापी में हम अपने स्वास्थ्य और अनुशासित दिनचर्या से विमुख होने लगे थे, वहीं इस स्वास्थ्य संकट ने हमें पुनः अपने और अपनों के स्वास्थ्य के प्रति सचेत कर दिया है.

मौजूदा दौर में बैंकिंग क्षेत्र काफी चुनौतीपूर्ण होता जा रहा है. ग्राहकों की अपेक्षाएं निरंतर बढ़ती जा रही हैं जिसके लिए सेवा के स्तर में क्रमिक उन्नयन आवश्यक है. हमारे बैंक में भी ग्राहकों के लिए नवोन्मेषी योजनाएं और सुविधाएं आरंभ की जा रही हैं ताकि उनके आधार पर हम ग्राहक परितोष के उच्चतम स्तर को हासिल कर सकें. ऐसे में हमारे लिए यह अत्यंत आवश्यक है कि हम सदैव स्वस्थ रहें. **स्वस्थ तन में ही स्वस्थ मन और मस्तिष्क की कल्पना की जा सकती है.** इसलिए आवश्यक है कि हम अपने आहार-विहार पर ध्यान दें तथा नियमित रूप से व्यायाम और योगाभ्यास करें. इससे न केवल हम अपने व्यक्तिगत अपितु पेशेवर जीवन में भी सभी वांछित लक्ष्य हासिल कर पाएंगे. इस संदर्भ में एक सुभाषित का उल्लेख करना उचित होगा कि:

**व्यायामात् लभते स्वास्थ्यं, दीर्घायुष्यं बलं सुखम्.**
**आरोग्यं परमं भाग्यं, स्वास्थ्यं सर्वार्थसाधनम्..**

अर्थात् व्यायाम से स्वास्थ्य, लंबी आयु, बल और सुख की प्राप्ति होती है. निरोगी होना परम सौभाग्य है और स्वास्थ्य ही सभी कार्यों का साधक है.

'**अक्षय्यम्**' पत्रिका के माध्यम से हम अपने सुधी पाठकों को समयोचित सामग्री उपलब्ध कराने का प्रयास करते हैं. इस पत्रिका को समृद्ध बनाने में हमारे स्टाफ सदस्यों की महती भूमिका रहती है. अतः मेरा उनसे आग्रह है कि पत्रिका के गुणवत्ता में निरंतर अभिवृद्धि हेतु अपनी रचनाएं हमें भेजते रहें ताकि आपकी रचनाधर्मिता को एक मंच भी प्राप्त हो सके और हमारे अन्य सुधी पाठक उससे लाभान्वित भी हो सकें.

उत्तम स्वास्थ्य की मंगलकामनाओं सहित,

पुनीत कुमार मिश्र

# 'अपनी भाषाई विरासत को जानना और समझना जरूरी'

## प्रसिद्ध साहित्यकार एवं भाषाविद् प्रो. कानजी पटेल के साथ साक्षात्कार

**भाषाओं के संरक्षण कार्य के क्षेत्र में प्रो. कानजी पटेल का उल्लेखनीय योगदान रहा है. गुजरात के महीसागर जिले से अपना जीवन शुरू कर आपकी प्रारंभिक जीवन शैली ग्रामीण वातावरण में विकसित हुई. ग्रामीण भारत की विशिष्टताओं ने आपको काफी प्रभावित किया और आपने आगे भी इससे जुड़े प्रत्येक विशेषताओं को संजोने और विकसित करने की दिशा में अहम योगदान देने का निर्णय लिया है. यही वजह रही कि आपने मातृभाषाओं की विरासत के संरक्षण और इनके विकास के क्षेत्र में कार्य करने की राह चुनी. *'अक्षय्यम्' के पाठकों के लिए उनके साथ लिए गए साक्षात्कार के प्रमुख अंश प्रस्तुत हैं:***

**1. कृपया अपने प्रारंभिक जीवन एवं शैक्षणिक पृष्ठभूमि के बारे में बताएं?**

गुजरात के महीसागर जिले के एक छोटे से गांव 'ऊकेड़ी' में मैंने प्राथमिक शिक्षा पायी. मेरी माध्यमिक व उच्च शिक्षा लूनावाडा कस्बे में हुई. बाल्यावस्था, किशोरावस्था व तरूणावस्था आसपास के लोकजीवन, लोकभाषा व कृषि के वातावरण में बहुत कुछ सीखते, लिखते, पढ़ते हुए मस्ती में बीता. स्नातक व स्नातकोत्तर शिक्षा के समय संस्कृत, अंग्रेज़ी साहित्य व कला का अभ्यास किया. ग्रामीण जीवन व भाषाई संस्कार मेरे साहित्य की समझ को विकसित करने में और अपना लेखन करने में बहुत मददगार रहे. इसमें भाषाशास्त्र भी मेरी समझ को बृहद करता गया. गुजराती भाषा में लिखना भी उन दिनों मेरी अभिव्यक्ति का स्वाभाविक रास्ता बनता गया.

**2. भाषाओं के संरक्षण के क्षेत्र में कार्य करने की प्रेरणा आपको किस प्रकार मिली?**

मैं अपनी ग्रामीण पंचमहाल भीली भाषा में कविता, लघु उपन्यास लिखता रहा था. कथा व गद्य के सामयिक 'गद्यपर्व' में 1988 से लेकर ग्रामीण भाषा में लिखी मेरी कहानियाँ प्रकाशित हो रही थीं. आगे चलकर उसी सामयिकी का संपादन मैंने सम्हाला. गुजरात की अनेक प्रादेशिक भाषाओं से परिचय और बढा. 1993 में राठवी मौखिक व लिखित कथाओं का 'गद्यपर्व' विशेषांक मैंने संपादित किया. बाद में, आदिवासी, विमुक्त व घुमन्तू समाजों की संस्कृति और भाषाओं के प्रति मेरा जो लगाव था वह 'भाषा केन्द्र' तक मुझे लाया. उस दौरान आदिवासी समुदायों में, उनकी भाषाओं के बारे में सोचने व कुछ करने का कार्य शुरू किया.

3. **कृपया पीपल्स लिंगग्विस्टिक सर्वे ऑफ इंडिया के बारे में बताएं।**

भाषा केन्द्र, बड़ौदा द्वारा पीपल्स लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ इन्डिया (पीएलएसआई) की स्थापना की गई. यह शासकीय या भाषा शास्त्रीय विद्वानों द्वारा नहीं किन्तु भारत के लोगों द्वारा किया गया सर्वेक्षण है. इस सर्वेक्षण में शामिल स्थानीय व्यक्तियों ने शिविरों में चर्चा करके सामग्री संपादन का एक ढांचा तैयार किया. इससे जुड़े अधिकांश लेखकों को जानकारी इकट्ठा करने के लघुत्तम तौर-तरीके प्राप्त थे. सर्वेक्षण में मोटे तौर पर भाषाशास्त्रियों के विहंगावलोकन के बारे में हम अवगत हो पाते हैं. इससे वर्ष 2015 तक की पर्यावरणीय, सामाजिक, सांस्कृतिक और भाषाई स्थिति का परिचय मिलता है. इसके द्वारा भाषक संख्या, भाषा प्रदेश, पर्यावरण व मौखिक साहित्य, व्याकरण, विश्वदृष्टि आदि अनेक मुद्दों पर भी महत्वपूर्ण जानकारी मिलती है.

4. **पीपल्स लिंगग्विस्टिक सर्वे ऑफ इंडिया ग्रियर्सन के भाषायी सर्वेक्षण से किस प्रकार अलग है?**

जार्ज ग्रीयर्सन ने 1904-1927 के बीच संपन्न भाषा सर्वेक्षण में 179 भाषाएं व 544 बोलियाँ बताईं जिसके कम से कम दस हजार भाषक थे. पीएलएसआई द्वारा किए गए सर्वेक्षण में लोकदृष्टि की प्रमुखता थी. यह वैश्वीकरण के दौर में किया गया सर्वेक्षण है. पीएलएसआई अनुसार भारत में 780 भाषाएं हैं. संभव है कि इसमें भी अनेक भाषाओं को शामिल करना रह गया हो. इस सर्वेक्षण से लोकतंत्र और भाषाई लोकतंत्र को और ताकत मिलने की संभावनाएं बढती हैं. भाषाओं के बीच जो उच्चावचता है वह भी दूर हो सकती है. भारतीय संविधान की सूची में समाविष्ट मान्य भाषाएं भी इसी के अन्तर्गत आ जाती हैं. पर्यावरण, भाषा-नीति, शिक्षा, राजनीति, स्थानिक अर्थतंत्र आदि समाजोपयोगी विषयों पर अहम जानकारी सर्वेक्षण से प्राप्त सामग्री में शामिल हैं. ग्रियर्सन के सर्वेक्षण में शासकीय नजरिया स्वाभाविक तरीके से दिखता है. ग्रियर्सन के भाषा सर्वेक्षण का मकसद भारतीय भाषाई जानकारी की मदद लेकर अंग्रेजी शासन को दृढ व कारगर बनाना था. दोनों सर्वेक्षणों के उद्देश्य व सिद्धि भिन्न हैं. इतने विशाल देश के विभिन्न समाजों के भाषाई पहलू का पूर्णतः सर्वेक्षण करने का दावा नहीं किया जा सकता, खासकर विचरणशील समाजों की भाषाओं के बारे में.

5. **इस सर्वेक्षण के वक्त किस तरह की चुनौतियां सामने आयीं?**

मैं गुजरात, दीव, दमण, दादरा नगर हवेली की भाषाओं के ग्रन्थ का संपादक होने से उससे संबद्ध बातें बताना चाहूंगा. जो भाषाएं विलुप्त होने के कगार पर हैं उनके बारे में जानकारी जुटाना बहुत मुश्किल रहा, जैसे ईरानी, मावची, हळपति, सीदी, कोळी, मेर, नायकी, बान्तु, डफेर, थोरी, मीरमिरासी, बहुरूपी आदि भाषाओं की जानकारी देने वालों की कमी रही. कोई भी सर्वेक्षण पूर्णता का दावा नहीं कर सकता.

6. **आज के समय में आदिवासी लोगों में अपनी भाषाओं को लेकर कितनी जागरूकता है?**

आदिवासी समाज अपनी पहचान के साथ अपनी भाषा को जोड़ते हैं. प्राथमिक शिक्षा पानेवाले बच्चों को राज्य की शासकीय भाषा में अनिवार्यतः पढ़ना पड़ता है. राज्य की मुख्य भाषा के साथ उस बच्चे का परिचय नहीं होने से और कुछ डर होने से बच्चे पाठशाला से 'पुश आउट' हो जाते हैं. आदिवासी शहर व बड़े गांवो में श्रम करने के लिये बच्चों के साथ चल पड़ते हैं. प्राथमिक शिक्षा में उनकी अपनी भाषा में पढ़ाई नहीं होती. स्थिति ही ऐसी हो जाती है कि चाहते हुए भी माता-पिता उन्हें नहीं पढ़ा सकते. शहरों में माँ बाप के साथ मजदूरी के स्थानों पर बच्चे जाते हैं. जो गांव से स्थानांतरण नहीं होते उन्हीं के बच्चे कुछ पढ़ाई कर सकते हैं. अपनी भाषा की जागरूकता का सवाल यहां अलग परिमाण धारण करता है. दो वक्त की रोटी पाने में लगे रहने वालों को भाषाई जागरूकता कुछ बाद में आती है.

7. **कृपया मातृभाषाओं को बचाने के लिए विभिन्न स्तरों पर किए जा रहे प्रयासों के बारे में बताएं?**

हर बच्चे को अपनी मातृभाषा में पढ़ने का अधिकार होना चाहिए. यह अधिकार हमारे यहां सीमित है. कोई भी भाषा को जब उपयोग में लाया जाए तभी वह जीवित रहेगी. भाषा एक पर्यावरण है, कोई चीज नहीं. इसकी रक्षा उस भाषा को शिक्षा, शासन व जीवन का हिस्सा बना कर ही की जा सकती है. अन्यथा वह समाप्त हो जायेगी. अनेक स्वयंसेवी संस्थायें इस दृष्टि से कार्यरत हैं. किसी भाषा में अगर साहित्य, वाणिज्य, शिक्षा, राजनीति का कामकाज जारी रहता है तो वह भाषा विकसित होती जाती है. मानव उर्जा को विकसित करने की दृष्टि वाला समाज या शासन सभी समाजों की मातृभाषाओं को विकसित करेगा ही. मातृभाषा ही मानव के लिए सर्वोच्च प्रगति करने का मार्ग

है. छत्तीसगढ, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, राजस्थान व गुजरात में विभिन्न स्वयं सेवियों द्वारा मातृभाषाओं को प्राथमिकता देने का प्रयास रहा है.

समावेशी शिक्षा के शासकीय प्रकल्पों द्वारा मातृभाषाओं में शिक्षा देने की सोच तो समाज में है लेकिन उसमें व्याप, तीव्रता, गंभीरता अभी आना बाकी है. सभी क्षेत्रों में निजीकरण के साथ शिक्षा क्षेत्र भी निजीकृत हो रहा है. ऐसी स्थिति में मुनाफ़े की दृष्टिवाले मालिक मातृभाषाओं में वंचित समुदायों की भाषाओं में शिक्षा देंगे क्या? इसपर विचार करने की जरूरत है.

**8. भाषाएं किस प्रकार सामाजिक विकास में भूमिका निभाती हैं?**

भाषा ही तो मानवों को मानव होने का अर्थ देती है. बिना भाषा समाज की कल्पना असंभव है. इसके बिना सोच व ज्ञान का विकास असंभव है. बिना भाषा सामाजिक विकास संभव नहीं. कुछ भी करने, बोलने के लिए भाषा विकास का उचित वातावरण होना चाहिए. भाषा मानव-इच्छा, विचार, योजना, कार्य, कला, वस्तु-उत्पादन, वितरण, कर सुख पैदा कर भौतिक व मानसिक प्रकार का सामाजिक विकास करता है. भाषा के उपयोग के माध्यम से मनुष्य विकास करता है. वह लिखित स्वरूप में ज्ञान संचित कर सकता है. इसलिए भाषा को चेतना, आत्मा की खुराक मानकर और भौतिक विकास को आधार मानकर हर मनुष्य अपनी तौर से भाषा को अपने जीवन में प्रयोग करता है. सूक्ष्म और स्थूल दोनों स्तरों पर भाषा ही सामाजिक विकास का माध्यम होती है.

**9. किसी भाषा का विलुप्त होना समाज के लिए किस प्रकार हानिकारक है?**

किसी भाषा का विलुप्त हो जाना बड़ी करूण बात है. क्योंकि अपनी भाषा चली जाने से वह समाज की विशिष्ट शक्ति भी खो जाती है. वह समाज अगर नयी भाषा को स्वीकार करता है तो भी एक प्रकार से वह एक शरणागति हो जाती है. इससे मानव की संस्कृति कमजोर हो जाती है. मातृभाषा लुप्त होने से व्यक्ति की संवेदनशीलता, विचारशक्ति, अभिव्यक्ति के आधार स्वरूप समृद्ध विरासत खो जाती है, जिसकी कीमत रूपये पैसों से नही आंकी जाती. 500 साल पहले मनुष्य के पास पंद्रह हजार भाषायें थीं. आज 5 हजार रह गई हैं. भाव व विचार को व्यक्त करने की हर भाषा की विशिष्ट क्षमता होती है. एक भाषा के लुप्त हो जाने से हमारी वह क्षमता कम होती है. चपल विकास के लिये रास्ते, बांध, इमारतें एवं उद्योगों के बारे में ही सोचा जाता है. चपल विकास में हमारी सभ्यता और ज्ञान की मूल सामग्री ऐसी भाषा के जिन्दा रखने व समृद्ध करने की सर्वग्राही योजनाएं भी होनी चाहिए. भाषा को किनारे पर रखकर हमारी कोई भी सोच व योजना का कोई अर्थ नहीं रहता.

**10. सामाजिक उत्थान में बैंकों की भूमिका को आप किस प्रकार देखते हैं, विशेषतया बैंक ऑफ़ बड़ौदा के सन्दर्भ में?**

सामाजिक उत्थान में बैंकों की भूमिका अहम है. मात्र भौतिक उत्पादन ही नहीं परन्तु मानसिक व सूक्ष्म, स्वस्थ व्यक्तित्व के विकास के लिए बैंक को खास क्षेत्र में लोगों की मदद करनी चाहिए. बैंक को खुद अपना एक दर्शन ऐसे कार्यों के लिए रखना चाहिए. जैसे कि - शहरों में मकान निर्माण में जुड़े आदिवासी श्रमिकों के बच्चों की शिक्षा का कार्य कर्तव्य समझकर करना चाहिए. प्रति वर्ष बड़े शहरों में ऐसी जगहों पर बच्चों के लिए पाठशालाएं चलानी चाहिए. पाठशालाओं से जो वंचित बच्चे ड्रॉपआउट/पुशआउट हो जाते हैं ऐसे बच्चों को पुन: अभ्यास में जोड़ने के लिए सर्वेक्षण कराके जहां भी जरुरी हो उनकी मदद के लिए अपने संसाधन का उपयोग करना जाहिए. इसके लिए निष्णातों की मदद भी लेनी चाहिए. बैंकों का लक्ष्य सिर्फ मुनाफा कमाना ही न हो. आखिर में यह सब धन समाज का ही है तो सामाजिक उत्तरदायित्व भी सही तौर से होना चाहिए. मुझे खुशी है कि बैंक ऑफ़ बड़ौदा भाषा विकास की दिशा में भी कुछ हटकर कार्य कर रहा है.

**11. भाषाओं के संरक्षण और विकास के संबंध में आप नयी पीढ़ी को क्या संदेश देना चाहेंगे?**

नयी पीढी को अपनी भाषाई विरासत को जानना और समझना चाहिए. अपनी भाषा का मौखिक साहित्य संग्रहित व प्रकाशित करना चाहिए. मातृभाषा बोलने के हरेक मौके का उपयोग करना चाहिए और गौरव महसूस करना चाहिए. मातृभाषा में लिखने की आदत डालें. विविध भाषाओं के साथ अनुवाद से जुडें. अपनी भाषा के अलावा देश व दुनिया की हर संभव भाषा सीख लें. विविध भाषा बोलनेवालों से सम्बन्ध रखें. कार्यस्थलों पर विविधतापूर्ण भाषिक सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित करें. भाषाई लोकतंत्र ही राजनीतिक लोकतंत्र का प्रथम सोपान है. इससे ही हमारी समझ व अनुकूलन बढती है. देश व विश्वमें स्वातंत्र्य, शांति और भाईचारा तभी प्रतीत होंगे. ❑❑❑

# 'बैंकिंग में अनुपालन संस्कृति' विषय पर अखिल भारतीय वेबिनार का आयोजन

**बैं**क द्वारा वर्ष 2013 में बैंकिंग विषयों पर हिंदी में शुरू किए गए अखिल भारतीय सेमिनारों की शृंखला की 8वीं कड़ी में दिनांक 22.03.2021 को प्रधान कार्यालय, बड़ौदा में भारतीय रिज़र्व बैंक/ सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों/ वित्तीय संस्थाओं के सभी स्टाफ सदस्यों के लिए '**बैंकिंग में अनुपालन संस्कृति**' विषय पर ऑनलाइन अखिल भारतीय वेबिनार का आयोजन किया गया. वर्तमान महामारी को देखते हुए इस बार यह सेमिनार बैंक ऑफ़ बड़ौदा ने अपने प्रधान कार्यालय, बड़ौदा में ऑनलाइन माध्यम से अखिल भारतीय वेबिनार के रूप में आयोजित किया. इस वेबिनार की अध्यक्षता बैंक के मुख्य महाप्रबंधक (परिचालन) और प्रभारी- राजभाषा, संसदीय समिति एवं कार्यालय प्रशासन श्री वेणुगोपाल मेनन ने की. कार्यक्रम की शुरुआत बैंक के महाप्रबंधक और प्रमुख (क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक) श्री जी.के पानेरी के स्वागत वक्तव्य से हुई, जिसमें उन्होंने भारतीय रिज़र्व बैंक, सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों और बीमा कंपनियों से आमंत्रित अतिथियों और प्रतिभागियों का स्वागत किया.

उद्घाटन सत्र को वित्तीय सेवाएं विभाग, वित्त मंत्रालय, भारत सरकार के उप निदेशक श्री भीम सिंह, बैंक के महाप्रबंधक (अनुपालन) श्री एल श्रीधर आई वी और भारतीय रिज़र्व बैंक के महाप्रबंधक श्री हेमंत कुमार सोनी ने संबोधित किया. सभी प्रमुख वक्ताओं ने बैंक द्वारा की गई इस पहल की प्रशंसा की. वेबिनार को संबोधित करते हुए श्री भीम सिंह ने कहा कि वेबिनार का विषय आज के दौर में बहुत प्रासंगिक है और यह प्रशंसनीय है कि सामान्य बैंकिंग प्रदान करने के अलावा बैंक इस तरह की गतिविधियों का आयोजन भी करते हैं जो कि हम सभी के लिए जागरूकता कार्यक्रम से संबंधित एक अहम पहल है. बैंक के मुख्य महाप्रबंधक श्री वेणुगोपाल मेनन ने आज के परिवर्तनशील बैंकिंग उद्योग में अनुपालन के महत्व पर प्रकाश डाला. बैंक के महाप्रबंधक (अनुपालन) एल श्रीधर ने इस कार्यक्रम में बैंक में अनुपालन संस्कृति के व्यापक पहलुओं का उल्लेख किया. भारतीय रिज़र्व बैंक के महाप्रबंधक श्री हेमंत कुमार सोनी ने कहा कि बैंक का तकनीकी पहलू बहुत मजबूत है और यह विभिन्न बैंकिंग कार्यों में इसकी प्रतिबद्धता को दर्शाता है कि पिछले 7 वर्षों से बैंक नियमित रूप से विभिन्न प्रासंगिक विषयों पर हिंदी माध्यम से अखिल भारतीय सेमिनार आयोजित कर रहा है.

इस अवसर पर बैंक ने पिछले वर्ष 'भारत को 5 ट्रिलियन अर्थव्यवस्था बनाने में सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों की भूमिका' विषय पर आयोजित सेमिनार में प्राप्त चुनिंदा प्रविष्टियों के संकलन के रूप में एक पुस्तक का भी विमोचन किया. उद्घाटन सत्र के बाद यह कार्यक्रम तीन सत्रों में विभाजित रहा. इन सत्रों की अध्यक्षता भारतीय रिज़र्व बैंक और बैंक ऑफ़ बड़ौदा के विभिन्न उच्चाधिकारियों ने की. देश भर से जुड़े चयनित (13) प्रतिभागियों ने अनुपालन के महत्व, व्यवसाय विकास में इसकी भूमिका और इसके विभिन्न पहलुओं पर अपनी प्रस्तुतियां दी. कार्यक्रम के दौरान बैंकों के वर्तमान परिदृश्य, अर्थव्यवस्था विकास, वित्तीय समावेशन, वित्तीय साक्षरता में बैंकों की भूमिका, विश्व स्तर के बड़े बैंकों के साथ प्रतिस्पर्धा करने की क्षमता और मजबूत अनुपालन संस्कृति अपनाने जैसे मुद्दों पर विस्तार से चर्चा की गई. वेबिनार में देशभर से 116 स्टाफ सदस्यों ने प्रतिभागिता की.

वेबिनार का समापन बैंक के महाप्रबंधक (अनुपालन) श्री एल श्रीधर के वक्तव्य के साथ हुआ. कार्यक्रम का समग्र समन्वय एवं आभार प्रदर्शन, सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा एवं संसदीय समिति) श्री पुनीत कुमार मिश्र ने किया.

# ई-कॉमर्स : सुविधाएं और चुनौतियाँ

व्यापार एक ऐसी व्यवस्था है जिसमें वस्तुओं एवं सेवाओं का आदान-प्रदान होता है. पुराने समय में एक वस्तु के बदले दूसरे वस्तु की खरीद-बिक्री होती थी. समय के साथ सोने चाँदी की मुहरों और उसके बाद करेंसी का प्रचलन हुआ और इससे वस्तुओं की खरीद-बिक्री होने लगी. व्यापार का स्वरूप हमेशा बदलता रहा है. 18वीं सदी के उपरांत जहां औद्योगिक क्रांति के बाद एक देश द्वारा दूसरे देश में अपने सामानों की बिक्री के लिए व्यापरिक, राजनीतिक और औपनिवेशिक नीति को अपनाया गया वहीं 21वीं सदी में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी की उन्नति ने आज पूरे विश्व को एक वैश्विक गाँव के रूप में जोड़ दिया है जिसमें न केवल कुछ घंटों में आप एक से दूसरे देश में आसानी से यात्रा कर सकते हैं बल्कि अपने सामानों को भी पहुंचा सकते हैं यानी आज के समय में वैश्विक बाज़ार की व्यापकता बढ़ी है.

आज तेजी से बदलते परिवेश में डिजिटल क्रांति ने ई-कॉमर्स यानी ई-व्यापार व्यवस्था को सर्वाधिक लोकप्रिय व्यावसायिक माध्यम बना दिया है. आज प्रत्येक व्यक्ति न केवल आर्थिक एवं व्यावसायिक लेन-देनों के प्रभावी निष्पादन के लिए प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से ई-कॉमर्स गतिविधियों से प्रभावित हो रहा है, बल्कि वस्तुओं और सेवाओं की खरीद-बिक्री के लिए नवीनतम प्रौद्योगिकीयुक्त बाजार प्रक्रियाओं की ओर उन्मुख भी होता जा रहा है. अगर गौर किया जाए तो 'ई-कॉमर्स' कोई व्यावसायिक अवधारणा नहीं है, बल्कि यह एक ऐसी बाजार प्रक्रिया है जिसमें विश्वसनीय और सुरक्षित इलेक्ट्रॉनिक संसाधनों के द्वारा त्वरित गति से वस्तुओं और सेवाओं की खरीद-बिक्री का कार्य पूरा किया जाता है एवं लेन-देन किया जाता है. उपभोक्ता बाज़ार को प्रभावित करने वाली इस नवीन व्यापारिक प्रक्रिया को इंटरनेट नेटवर्क, वेब पोर्टल, पेमेंट गेटवे, कम्प्यूटर, मोबाइल एप्स, लैपटॉप, सर्वर, डिजिटल लाइब्रेरी व अन्य डेटा बेस्ड डिवाइसेज की सहायता से निष्पादित किया जाता है.

इंटरनेट एंड मोबाइल एसोसिएशन ऑफ इंडिया (आई .एम.ए आई.) द्वारा किए गए सर्वेक्षण रिपोर्ट ''इंडिया इंटरनेट 2019'' के अनुसार जून, 2018 में कुल वैश्विक जनसंख्या की 55 प्रतिशत जनसंख्या द्वारा इंटरनेट का उपयोग किया जा रहा था और भारत में करीब 50 करोड़ नागरिक इंटरनेट परिचालन प्रक्रिया में सक्रिय थे. पूरे विश्व में ई-रिटेल सेल्स 2019 में 14% था जिसके 2023 तक 22% हो जाने का अनुमान है. ई-मार्केटर ''ग्लोबल ई-कॉमर्स फोरकास्ट-2019'' की रिपोर्ट के अनुसार वर्ष 2019 में 46.05 बिलियन की खरीद-बिक्री के साथ ई-कॉमर्स व्यवसाय में भारत 9वें स्थान पर था जबकि चीन लगातार पहले स्थान पर बना हुआ है. विशेषज्ञों के मतानुसार वैश्विक स्तर पर जैसे-जैसे इंटरनेट उपयोगकर्ताओं की संख्या बढ़ती जा रही है, वैसे-वैसे 'ई-कॉमर्स' के विकास और विस्तार की सम्भावनाएं प्रबल होती जा रही हैं. वर्तमान वैश्विक महामारी ने पूरे विश्व में ज्यादा से ज्यादा लोगों को इंटरनेट और डिजिटल प्लेटफॉर्म अपनाने के लिए विवश किया है. पिछले एक वर्ष के दौरान भारत में डिजिटल माध्यम को अपनाने वालों की संख्या में तेजी से वृद्धि हुई है और अब भारत के गांवों में भी तेजी से इंटरनेट युक्त स्मार्टफोन के उपयोग में वृद्धि हुई है. आंकड़े यह भी बताते हैं कि ई-रिटेल का एक बड़ा हिस्सा पीसी की बजाय स्मार्ट फोन से संचालित होता है और फ्री शिपिंग इसके लोकप्रिय होने का एक महत्वपूर्ण कारक है. ऐसा अनुमान है कि वर्ष 2040 तक 95% खरीद-बिक्री ई-रिटेल के माध्यम से हो सकती है.

दिसंबर 2017 के अन्त में वैश्विक स्तर पर ई-कॉमर्स का कुल कारोबार 2-3 ट्रिलियन डॉलर था, जिसके 2022 में 4.5 ट्रिलियन डॉलर तक पहुँचने की सम्भावना है. इसी प्रकार दिसम्बर 2017 के अन्त में भारतीय ई-व्यापार 25 बिलियन डॉलर था, जिसके 2022 तक 52 बिलियन डॉलर तक पहुँचने का अनुमान है, भारतीय ई-कॉमर्स की प्रगति सूचकांक को इंगित करने वाले इस तथ्य से स्पष्ट है कि आने वाले समय में हमारा देश इलेक्ट्रॉनिक बाजार व्यवस्था के क्षेत्र में अनेक कीर्तिमान स्थापित करने में सक्षम होगा. आज भारत में उचित कीमत पर कम से-कम समय में वस्तुओं और सेवाओं की आपूर्ति करने लिए प्रतिबद्ध और ई-बाजार गतिविधियों से जुड़े अमेजन, फ्लिपकार्ट, इंडिया मार्ट, स्नेपडील, पे यू पेमेंट, पे-टीएम, मेक माय ट्रिप इंडिया, जस्ट डॉयल, मींत्रा, टाटा क्लिक, लेंस कार्ट आदि कंपनियों का कारोबार निरन्तर प्रगति पथ की ओर अग्रसर है. उल्लेखनीय है कि अभी तक भारत के ई-बाजार तंत्र पर बड़ी-बड़ी कंपनियों का ही आधिपत्य बना हुआ था, किन्तु हाल ही में केन्द्र सरकार ने ग्रामीण कारीगरों, लघु उद्यमियों एवं महिलाओं द्वारा संचालित स्वयं सहायता समूहों द्वारा विनिर्मित उत्पादों को ऑनलाइन बेचने

की सुविधा प्रदान करने के लिए इंडिया पोस्ट की ओर से ई-कॉमर्स पोर्टल लांच किया है. परिणामस्वरूप, ये सभी विनिर्माता अब डाक विभाग की सहायता से अपने उत्पादों की बिक्री स्थानीय बाजारों के साथ-साथ दूरदराज के ग्राहकों को भी कर सकेंगे.

**भारतीय बाज़ार के संदर्भ में नियम एवं नियंत्रण:** अब जब हमने देखा कि ई-कॉमर्स की लोकप्रियता बढ़ती जा रही है और यह व्यापार का एक सरल माध्यम बन कर उभरता जा रहा है तो फिर बार-बार ऐसे प्रश्न सामने आते हैं कि क्या इससे भारतीय रिटेल बाज़ार को खतरा है? क्या खुदरा प्रत्यक्ष व्यवसाय करने वाले व्यापारी इससे प्रभावित हो रहे हैं? सरकार ई-कॉमर्स को नियंत्रित क्यों नहीं कर रही है? और भारतीय किराना एवं खुदरा व्यावसायियों की हितों की रक्षा क्यों नहीं कर रही है? आइए हम यह जानने का प्रयास करते हैं कि ई-कॉमर्स कारोबार कैसे नियंत्रित होता है या किस अधिनियम के तहत परिभाषित होता है.

**अनुपालन एजेंसियों का प्रभाव:** भारत में ई-बाजार व्यवस्था के माध्यम से कारोबार करने वाले प्रत्येक पक्ष के लिए भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा समय-समय पर जारी किए जाने वाले नवीनतम दिशा-निर्देशों का पालन करना आवश्यक है. मूलत: रिज़र्व बैंक द्वारा ऑनलाइन भुगतान प्रक्रिया, डेबिट कार्ड, क्रेडिट कार्ड, पिन नम्बर, इमिडीएट पेमेंट सर्विस् (आईएमपीएस), यूनीफाइड पेमेंट इंटरफेस (यूपीआई), मोबाइल ई-वॉलेट, आधार इनेबल पेमेंट सर्विस (एईपीएस), नेट बैंकिंग, भारत इंटरफेस फॉर मनी (भीम) एवं चिप आधारित अन्य उपकरणों के प्रयोग से सम्बन्धित नियमों व विनियमों के अनुपालन पर बल दिया जाता है ताकि लेन-देन सुरक्षित एवं समयबद्ध तरीके से सम्पन्न हो सके और उपभोक्ता तथा आपूर्तिकर्ता को जोखिम व हानि से बचाया जा सके. इसके अलावा ई-कॉमर्स लेनदेन-कंपनी अधिनियम, आयकर अधिनियम, उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम, कारख़ाना अधिनियम, वस्तु एवं सेवा कर अधिनियम और सूचना तकनीक अधिनियम आदि जैसे अधिनियमों के प्रावधानों के अनुपालन के लिए भी बाध्य हैं.

**व्यावसायिक नीति का स्पष्टीकरण:** ई-कॉमर्स या डिजिटल व्यापार गतिविधियों के माध्यम से वस्तुओं और सेवाओं की आपूर्ति करने वाली प्रत्येक कंपनी के लिए यह अति आवश्यक है कि सर्वप्रथम वह अपनी नीति को स्पष्ट करें. साथ ही, उत्पाद की गारन्टी व वारन्टी, पैकिंग और शिपिंग का समय, सुपुर्दगी का माध्यम आदि का जिक्र भी व्यावसायिक नीति में अति आवश्यक है. मूल्य के भुगतान का माध्यम, अग्रिम भुगतान, कैस-ऑन-डिलिवरी आदि शर्तों के विवरण के साथ-साथ सुपुर्द किए गए माल की वापसी की शर्तों का उल्लेख भी व्यावसायिक नीति में करना जरूरी है.

उपर्युक्त के अलावा भारत सरकार समय-समय पर ई-बाजार व्यवस्था में कार्यरत कंपनियों के लिए दिशानिर्देश भी जारी करती रहती है. ''औद्योगिक नीति एवं संवर्धन विभाग, वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय'' भारत सरकार द्वारा 26 दिसम्बर, 2018 को ई-कॉमर्स विदेशी प्रत्यक्ष निवेश नीति (ई-कॉमर्स फ़ॉरेन डाइरेक्ट इनवेस्टमेंट पॉलिसी) में महत्वपूर्ण संशोधन किए गए हैं जिसके अनुसार:

ई-कॉमर्स की मार्केट प्लेस कम्पनियों को निर्देशित किया जाता है कि वे किसी भी विक्रेता को अपने प्लेटफार्म पर विशेष बिक्री की अनुमति प्रदान नहीं करेंगी. ई-कॉमर्स कम्पनियाँ विक्रय के लिए निर्माताओं के स्टॉक को न तो नियन्त्रित कर सकेंगी और न ही उस पर स्वामित्वाधिकार का प्रदर्शन कर सकेंगी. भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा समय- समय पर जारी किए जाने वाले नवीनतम दिशानिर्देशों का अनुपालन करते हुए प्रत्येक ई-कॉमर्स कम्पनी को प्रतिवर्ष 30 सितम्बर तक ''अनुपालन प्रमाण-पत्र'' भी प्राप्त करना होगा. सभी ई-कॉमर्स कम्पनियों को उत्पाद विक्रेताओं के साथ समान व्यवहार करना होगा तथा उनसे यथोचित दूरी बनाए रखनी होगी. यदि कोई ई-कॉमर्स कम्पनी किसी निर्माता के साथ साझेदारी समझौता करती है, तो उस कम्पनी को ऑनलाइन प्लेटफॉर्म पर उस निर्माता का माल बेचने की अनुमति नहीं होगी.

**ई-कॉमर्स प्रणाली के लाभ:** ई-बाजार व्यवस्था में मध्यस्थों का नगण्य स्थान होता है, परिणामस्वरूप अनेक प्रकार की आर्थिक बुराइयों, कीमतों में अनावश्यक वृद्धि, काला-बाजारी और व्यापक आपूर्ति श्रृंखला की परेशानियों आदि से छुटकारा मिल जाता है. उपभोक्ता अपने पास उपलब्ध समय और सुविधानुसार वस्तुओं एवं सेवाओं का न केवल सर्वेक्षण कर सकता है बल्कि अपनी भुगतान क्षमता के अनुसार वस्तु व सेवा की किस्म एवं मात्रा का चयन भी कर सकता है. इसमें आपूर्ति या विक्रय केन्द्र पर उपस्थिति की अनिवार्यता से छुटकारा मिल जाता है. घर, कार्यालय, यात्रा-प्रवास या अन्य स्थल से भी खरीद आदेश देकर सौदा किया जा सकता है. वस्तु या सेवा-आपूर्तिकर्ता और उपभोक्ता दोनों ही वर्तमान ऑफलाइन क्रय-विक्रय व्यवस्था में विद्यमान भारी भरकम कमीशन एवं मध्यस्थता व अन्य अनावश्यक स्थानीय शुल्क आदि से बच जाते हैं.

नए उपभोक्ता वस्तुओं और सेवाओं की खरीद से पहले उपभोक्ताओं द्वारा किसी वस्तु या सेवा पर दी गई समीक्षात्मक टिप्पणियों

और महत्वपूर्ण फीडबैक का अध्ययन करके अपना सटीक निर्णय ले सकते हैं. वहीं वस्तुओं और सेवाओं के विनिर्माताओं व आपूर्तिकर्ताओं को विज्ञापन तथा प्रचार-प्रसार पर बहुत अधिक खर्च नहीं करना पड़ता है.

ई-बाज़ार व्यवस्था के अन्तर्गत आपूर्तिकर्ता कम्पनियों को अपनी वस्तुओं के भंडारण एवं स्टॉक पोजीशन में पूँजी निवेश नहीं करना पड़ता है, क्योंकि ग्राहकों से खरीद आदेश मिलने पर तुरन्त विनिर्माताओं से सम्पर्क करके वस्तुओं की आपूर्ति सुनिश्चित कर दी जाती है.

ई-बाजार व्यवस्था के अन्तर्गत संभावित ग्राहक स्वत: जुड़ जाता है अर्थात ग्राहक विस्तार और बाज़ार विकास के लिए अतिरिक्त परिश्रम करने की आवश्यकता नहीं होती है. भौगोलिक दूरी ई-बाजार व्यवस्था के अन्तर्गत कोई मायने नहीं रखती है वहीं ऑफलाइन बाजार व्यवस्था में व्यावसायिक सफलता दुकान की पहुँच या लोकेशन पर ज्यादा निर्भर करती है.

**सीमाएं एवं दोष:** ई-बाजार व्यवस्था में वस्तुओं की गुणवत्ता पर सदैव संशय बना रहता है, कभी-कभी उपभोक्ता जिस वस्तु की खरीद आदेश देता है और उसे उससे भिन्न वस्तु प्राप्त हो जाती है. परम्परागत बाजार व्यवस्था में उपभोक्ता वस्तुओं का भौतिक अवलोकन एवं जाँच पड़ताल करके खरीदने का निर्णय ले सकता है, किन्तु ई-बाजार व्यवस्था में वस्तुओं का भौतिक अवलोकन एवं जाँच-पड़ताल करना सम्भव नहीं है. विदेशी ऑनलाइन आपूर्तिकर्ताओं के साथ वैयक्तिक सूचनाओं को साझा करने के कारण उपभोक्ता की निजता भंग होने का खतरा भी रहता है. ई-बाजार व्यवस्था में वस्तुओं की भौतिक जाँच-पड़ताल का कोई अवसर नहीं मिलता है, फलत: उपभोक्ता धोखाधड़ी के चंगुल में भी फंस सकता है. ई-बाजार प्रक्रिया के अंतर्गत सृजित दस्तावेजों के अधिकृत और वास्तविक न होने का भय सदैव बना रहता है. इन्टरनेट द्वारा जारी सूचनाओं और डिजिटल डाटा के चोरी होने तथा उनके डुप्लीकेट होने के कारण अनेक प्रकार की अनचाही कठिनाइयाँ उत्पन्न हो जाती हैं तथा ई-कॉमर्स के वेबसर्वर्स पर उपलब्ध दस्तावेजों को साइबर अपराधियों द्वारा नष्ट अथवा निरर्थक किए जाने की संभावना भी हो सकती है. विवाद की स्थिति में ई-बाजार प्रक्रियान्तर्गत सृजित दस्तावेजों और उन पर किए गए हस्ताक्षरों को वैधानिकता के दायरे में लाना और न्यायालय में प्रमाणित करना बहुत बड़ी चुनौती बन जाता है

ऑनलाइन वस्तु आपूर्तिकर्ताओं द्वारा ग्राहकों का विस्तार करने के लिए अनेक प्रकार के प्रलोभन जैसे घर तक सुपुर्दगी की सुविधा देना, मुफ्त उपहार प्रदान करना, नकद वापसी का लालच देना आदि दिये जाते हैं जिसके कारण ऑनलाइन क्रय प्रक्रिया की लोकप्रियता और व्यापकता निरन्तर बढ़ती जा रही हैं, फलस्वरूप छोटे- छोटे विक्रेताओं का व्यवसाय संचालन मुश्किलों में फंसता जा रहा है. कई बार ऑनलाइन वस्तुओं के आपूर्तिकर्ता इलेक्ट्रॉनिक संसाधनों की सहायता से नशीले पदार्थों व सरकार द्वारा वर्जित वस्तुओं की आपूर्ति करने में भी सफल हो जाते हैं. यह भी देखने में आया है कि ई-कॉमर्स कम्पनियाँ ग्राहकों से ऑनलाइन क्रय आदेश लेकर उसे सम्बन्धित विनिर्माता एवं आपूर्तिकर्ता को अग्रसारित कर देती है और उसके बाद खरीददार से जो मूल्य प्राप्त होता है उसमें से अपना कमीशन काटकर आपूर्तिकर्ता को शेष धनराशि का भुगतान कर देती हैं. इस प्रकार इस नए कारोबार में ई-कॉमर्स कम्पनियाँ मध्यस्थों की भूमिका में ही है. इसलिए उत्पादों की गुणवत्ता पर इनका कोई नियन्त्रण नहीं है.

**ई-कॉमर्स व्यवसाय में सुधार के कुछ सुझाव:** इस व्यवस्था में विद्यमान वर्तमान कमियों एवं इससे उत्पन्न होने वाली भावी चुनौतियों का सामना करने के लिए निम्नलिखित उपायों को अपनाया जा सकता है. 'ई-बाज़ार व्यवस्था' से सृजित होने वाले न्यूनाधिक ई-शोषण को रोकने के लिए सरकारी प्रयास तेज होने चाहिए. भारत सरकार को राज्य सरकारों के सहयोग से देशभर में साइबर सजगता का परिवेश सृजित करने की पहल करनी चाहिए. 'ई-बाजार व्यवस्था' को त्रुटिरहित बनाने तथा इसे और अधिक प्रभावी बनाने के लिए जहाँ एक ओर आपूर्तिकर्ताओं के समस्त कर्मचारियों को प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए, वहीं दूसरी ओर उपभोक्ताओं को भी सम्पूर्ण खरीद प्रक्रिया से अवगत कराना चाहिए. उपभोक्ताओं को ई-शोषण से बचाने के लिए आपूर्तिकर्ताओं की ओर से अपनी वेबसाइट्स पर ऑनलाइन भुगतान प्रक्रिया के संदर्भ में ''क्या करें क्या नहीं करें'' दिशानिर्देश जारी किए जाने चाहिए. उपभोक्ताओं को अधिकतम संतुष्टि प्रदान करने के लिए आपूर्तिकर्ताओं को प्रारम्भ में ही अपनी व्यावसायिक नीति के साथ-साथ, संग्रहण सुरक्षा व्यवस्था, सुपुर्दगी-विधि, भुगतान-विधि तथा नकद वापसी विधि को सरल एवं स्पष्ट तरीके से उजागर कर देना चाहिए. महत्वपूर्ण सूचनाओं और डिजिटल भुगतान की पूर्ण सुरक्षा के लिए आपूर्तिकर्ताओं को अपनी वेबसाइट को हैकर्स एवं वायरस आदि के आक्रमणों से बचाने वाली अद्यतन तकनीकों का उपयोग करना चाहिए.

वर्तमान परिवर्तित वैश्विक परिवेश में जहां एक ओर ई- कॉमर्स का निरन्तर विकास एवं विस्तार होता जा रहा है वहीं दूसरी ओर इस व्यवस्था में विद्यमान दोषों के कारण अनेक प्रश्न चिन्ह और संशय भी उत्पन्न हो रहे हैं. हालांकि आज ऑनलाइन या ई-कॉमर्स व्यवसाय निरंतर प्रगति पथ पर अग्रसर है भारत में इसे नियंत्रित करने के लिए पर्याप्त और उचित विधायी नीति भी है फिर भी ऑनलाइन बनाम ऑफलाइन व्यवसाय की बात करें तो दोनों अपने-अपने परिवेश में फल-फूल रहे हैं और निश्चय ही जो ज्यादा अच्छी सुविधा देगा ग्राहक उसी की ओर उन्मुख होगा. ❑❑❑

**– सर्वेश कुमार तिवारी**
*प्रबंधक (राजभाषा)*
*प्रधान कार्यालय, बड़ौदा*

# अभिप्रेरणा कार्यक्रम/कार्यशालाएं

## अंचल कार्यालय, मुंबई द्वारा 'राजभाषा अभिप्रेरणा' कार्यक्रम का आयोजन

दिनांक 22 फरवरी 2021 को अंचल कार्यालय, मुंबई में महाप्रबंधक एवं अंचल प्रमुख श्री मधुर कुमार की अध्यक्षता में अंचल स्थित सभी क्षेत्रीय प्रमुखों एवं उप क्षेत्रीय प्रमुखों हेतु 'राजभाषा अभिप्रेरणा' कार्यक्रम का आयोजन किया गया. इस कार्यक्रम में डॉ. सुष्मिता भट्टाचार्य, उप निदेशक (कार्यान्वयन), क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (पश्चिम), गृह मंत्रालय, भारत सरकार ने 'क्षेत्रीय प्रमुखों एवं उप क्षेत्रीय प्रमुखों से राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी अपेक्षाएं' विषय पर व्याख्यान दिया एवं प्रधान कार्यालय से सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा) श्री पुनीत मिश्रा ने 'क्षेत्रीय प्रमुखों के प्रति राजभाषा कार्यान्वयन के दायित्व को निभाने हेतु उनकी भूमिका एवं प्रधान कार्यालय की अपेक्षाएं' विषय पर मार्गदर्शन दिया.

## क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता मेट्रो द्वारा अभिप्रेरणा कार्यक्रम

दिनांक 24 फरवरी, 2021 को श्री सहायक निदेशक कार्यान्वयन, गृह मंत्रालय भारत सरकार श्री निर्मल कुमार दुबे की अध्यक्षता में क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता मेट्रो द्वारा राजभाषा अभिप्रेरणा कार्यक्रम का आयोजन किया गया. कार्यक्रम का उद्घाटन क्षेत्रीय प्रमुख व उप महाप्रबन्धक श्री गोबिन्दा बिश्वास ने किया. इस अवसर पर उप क्षेत्रीय प्रमुख श्री शंकर कुमार झा भी उपस्थित रहे.

**मदुरै क्षेत्र**

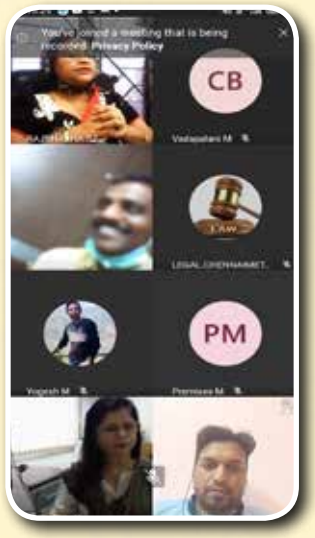


**भुवनेश्वर क्षेत्र**

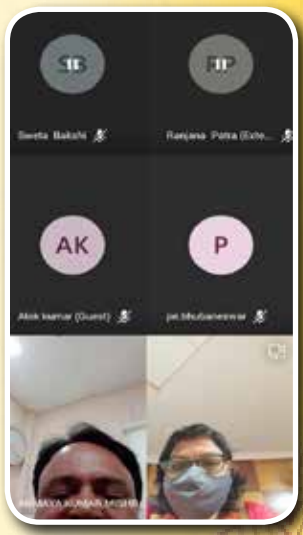


## पुणे अंचल एवं पुणे शहर द्वारा हिंदी कार्यशाला का आयोजन

दिनांक 12.जनवरी 2021 को पुणे अंचल एवं पुणे शहर द्वारा अधिकारियों एवं व्यवसाय सहयोगियों हेतु हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया. इस कार्यशाला में पुणे अंचल के सभी क्षेत्रों के 39 अधिकारियों/ व्यवसाय सहयोगियों ने सहभागिता की. प्रधान कार्यालय से विशेष अतिथि के रूप में मुख्य प्रबन्धक (राजभाषा) श्री महीपाल चौहान भी इस ऑनलाइन कार्यशाला से जुड़े एवं सभी का मार्गदर्शन किए.

## अहमदाबाद अंचल में हिंदी कार्यशाला आयोजन

अहमदाबाद अंचल में पदस्थ स्टाफ सदस्यों के लिए दिनांक 09 मार्च 2021 को माइक्रोसॉफ्ट टीम्स के माध्यम से कार्यशाला का आयोजन किया गया. कार्यशाला का आरंभ सुश्री वंदना जैन, मुख्य प्रबंधक (राजभाषा), अहमदाबाद अंचल एवं श्री केदार कुलकर्णी, प्रमुख, अहमदाबाद अकादमी के स्वागत उद्बोधन से किया गया.

# राजस्थान : पधारो म्हारे देश

राजस्थान के बारे में मन में विचार आते ही मस्तिष्क में महाराजा पृथ्वीराज चौहान व महाराणा प्रताप की शौर्य गाथा, मीराबाई की भक्ति, भव्य किलों और हवेलियों और सुदूर रेगिस्तान के कुछ चित्र प्रतिबिंबित हो जाते हैं. भारत गणराज्य का भौगोलिक आधार पर सबसे बड़ा यह राज्य देश-दुनिया में अपनी विशिष्ट पहचान रखता है. एक राज्य में इतनी भौगोलिक और सांस्कृतिक विविधताएँ बहुत कम देखने को मिलती है जितनी राजस्थान में देखने को मिलेगी. एक तरफ विशाल थार का रेगिस्तान तो दूसरी तरफ विश्व की सबसे प्राचीनतम पर्वतमालाओं में से एक अरावली गले के हार के रूप में राज्य का माल्यार्पण करती है. राजस्थान पर्यटन उद्योग का प्रचलित वाक्य **'पधारो म्हारे देश'** राज्य की समृद्ध संस्कृति का परिचायक है और स्वागत मनुहार का द्योतक है. राजस्थान का हर कोना अपनी विविधताओं खानपान, पहनावे, हवेलियां और किलों के कारण अपनी विशिष्ट पहचान रखता है. राजस्थान के प्रमुख दर्शनीय स्थल इस प्रकार हैं -

**जयपुर :** मध्यकाल से ही हिंदुस्तान की राजनीति में जयपुर का विशिष्ट स्थान रहा है. मुगल काल में दिल्ली के बाद सबसे अधिक प्रभावशाली जयपुर राजपरिवार ही रहा है. राजस्थान की राजधानी जयपुर अपनी स्थापत्य कला, संस्कृति, भौगोलिक स्थिति के कारण आरंभ से ही उत्तरी भारत के प्रमुख शहरों में से एक रहा है. यहाँ के कुछ मुख्य पर्यटन स्थलों में- हवा महल, आमेर का किला, जंतर-मंतर, नाहरगढ़ किला, सिटी पैलेस, चोखी धानी, अल्बर्ट हॉल म्यूज़ियम व बिरला मंदिर आदि शामिल है. यह शहर सुंदर किलों, मंदिरों व संग्रहालय आदि से अपनी शोभा बढ़ाता है. **यूनेस्को द्वारा जुलाई 2019 में जयपुर को वर्ल्ड हेरिटेज सिटी का दर्जा दिया गया है.** जयपुर को भारत का पेरिस भी कहा जाता है. पश्चिमी पहाड़ी पर नाहरगढ का किला बनवाया गया. पुराने दुर्ग जयगढ में हथियार बनाने का कारखाना बनवाया गया, जिसे देख कर आज भी वैज्ञानिक चकित हो जाते हैं, इस कारखाने और अपने शहर जयपुर के निर्माता सवाई जयसिंह की स्मृतियों को संजोये विशालकाय जयबाण तोप आज भी सीना ताने इस नगर की सुरक्षा करती महसूस होती है. शहर में बहुत से पर्यटन आकर्षण हैं, जैसे जंतर-मंतर, हवा महल, सिटी पैलेस, गोविंददेवजी का मंदिर, श्री लक्ष्मी जगदीश महाराज मंदिर, तारामण्डल, आमेर का किला, जयगढ़ दुर्ग आदि. जयपुर के रौनक भरे बाजारों में दुकानें रंग बिरंगे सामानों से भरी हैं, जिनमें हथकरघा उत्पाद, बहुमूल्य पत्थर, हस्तकला से युक्त वनस्पति रंगों से बने वस्त्र, मीनाकारी आभूषण, पीतल का सजावटी सामान, राजस्थानी चित्रकला के नमूने, नागरा-मोजरी जूतियाँ, ब्लू पॉटरी, हाथीदांत के हस्तशिल्प और सफ़ेद संगमरमर की मूर्तियां आदि शामिल हैं. जयपुर देश के सभी प्रमुख शहरों से हवाई, रेल एवं सड़क मार्ग से जुड़ा हुआ है.

**जैसलमेर :** यह राजस्थान का सबसे बड़ा जिला होने के साथ-साथ एक प्रमुख पर्यटन स्थल है जो अपने कई पर्यटन आकर्षणों की वजह से राजस्थान में घूमने की सबसे अच्छी जगहों में से एक है. आपको बता दें कि यह थार रेगिस्तान में सुनहरे टीलों के कारण इसे स्वर्णनगरी के नाम से भी जाना जाता है. जैसलमेर में विश्व प्रसिद्ध तनोट माता का मंदिर बाबा रामदेव की समाधि एवं और भी अनेक प्रसिद्ध देवी स्थान है साथ ही सामरिक दृष्टि से अति महत्वपूर्ण परीक्षण केंद्र - पोकरण जहां देश के परमाणु परीक्षण किए गए है, भी जैसलमेर जिले में ही है. यहाँ का सोनार किला राजस्थान के श्रेष्ठ धान्वन दुर्गों में माना जाता हैं. जैसलमेर के किले का निर्माण वर्ष 1156 में किया गया था और यह राजस्थान का दूसरा सबसे पुराना राज्य है. ढाई सौ फीट ऊंचा और सेंट स्टोन के विशाल खण्डों से निर्मित 30 फीट ऊंची दीवार वाले इस किले में 99 प्राचीर हैं, जिनमें से 92 का निर्माण वर्ष 1633 और 1647 के बीच कराया गया था. इस

किले के अंदर मौजूद कुंए पानी का निरंतर स्रोत प्रदान करते हैं. रावल जैसल द्वारा निर्मित यह किला जो 80 मीटर ऊंची त्रिकूट पहाड़ी पर स्थित है, इसमें महलों की बाहरी दीवारें, घर और मंदिर कोमल पीले सेंट स्टोन से बने हैं. यहाँ किले के भीतर नगर बसा हुआ है. यहाँ सबसे अधिक विदेशी पर्यटक आते हैं. जैसलमेर का सबसे नजदीकी बड़ा शहर जोधपुर देश के मुख्य नगरों से हवाई, सड़क और रेल मार्ग से जुड़ा हुआ है.

**जोधपुर :** राज्य की राजधानी जयपुर के पश्चात यह राजस्थान का दूसरा सबसे प्रमुख शहर है. यहाँ राजस्थान उच्च न्यायालय का मुख्यालय स्थित है यहाँ विश्व प्रसिद्ध आईआईटी, नेशनल लॉ युनिवर्सिटी, एम्स, काजरी, आयुर्वेदिक विश्वविद्यालय, कृषि विश्वविद्यालय स्थित है. इनके अलावा प्रतिष्ठित जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय हैं. राज्य का दूसरा अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा भी यहाँ स्थित है. मेहरानगढ़ दुर्ग पहाड़ी के बिल्कुल ऊपर बसे होने के कारण राजस्थान के सबसे खूबसूरत किलों में से एक है. 125 मीटर ऊँची पहाड़ी पर स्थित पांच किलोमीटर लंबा भव्य किला बहुत ही प्रभावशाली और विकट इमारतों में से एक है. बाहर से अदृश्य, घुमावदार सड़कों से जुड़े इस किले के चार द्वार हैं. **वर्ष 2014 के विश्व के अति विशेष आवास स्थानों (मोस्ट एक्स्ट्रा ऑर्डिनरी प्लेसेज़ ऑफ़ द वर्ल्ड) की सूची में प्रथम स्थान पाया था.** उम्मैद भवन पैलेस– महाराजा उम्मैद सिंह ने इस महल का निर्माण सन् 1943 में करवाया था. संगमरमर और बालू के पत्थर से बने इस महल का दृश्य पर्यटकों को खासतौर पर लुभाता है. जोधपुर बॉलीवुड और हॉलीवुड के ख्यातिप्राप्त कलाकारों की पसंदीदा जगहों में से एक है. यहाँ नजदीक ही जवाई बांध स्थित है जो प्रदेश के प्रमुख बांधों में से एक है.

**बीकानेर :** राव बीका द्वारा बसाया ये नगर ऐतिहासिक राजपूताना की प्रमुख रियासतों में से एक बीकानेर राजस्थान का एक महत्वपूर्ण संभाग मुख्यालय है. यहाँ वेटेनरी विश्वविद्यालय,

कृषि विश्वविद्यालय, महाराजा गंगासिंह विश्वविद्यालय स्थित है. राजस्थान का शिक्षा निदेशालय भी यहाँ स्थित है. जैसलमेर की भांति अंतर्राष्ट्रीय सीमा (168 किमी) से सटे होने के कारण सामरिक दृष्टि से भी अत्यंत महत्वपूर्ण है, सेना की बड़ी छावनी यहाँ स्थित है जहां प्रतिवर्ष कई अंतर्राष्ट्रीय स्तर के युद्धाभ्यास सफलता पूर्वक संपन्न होते हैं. यहाँ का जूनागढ़ किला, लालगढ़ किला, गजनेर पैलेस, रामपुरिया हवेलियाँ अपनी स्थापत्य कला के लिए अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्ध हैं. विश्व प्रसिद्ध करणी माता का मंदिर बीकानेर से 30 किमी दूरी पर देशनोक कस्बे में स्थित है जहां प्रतिवर्ष लाखों भक्त दर्शन करने आते हैं. यहाँ के महाराजा गंगासिंह को आधुनिक भारत का भागीरथ कहा जाता है जिन्होने गंग नहर (इंदिरागांधी नहर) के माध्यम से हिमालय की सतलुज का पानी थार मरुस्थल में पहुंचा दिया. इन्हीं की परिकल्पना से आज इंदिरा गांधी नहर का पानी जैसलमेर के सुदूर रेगिस्तानी इलाकों तक पहुंचा है. सामरिक दृष्टि से भी इस परियोजना का देश को बहुत लाभ मिला है. यहाँ का सिरेमिक, पापड़ और नमकीन उद्योग विश्वप्रसिद्ध है. बीकानेर देश के प्रमुख नगरों से रेल और सड़क मार्ग से जुड़ा हुआ है.

**उदयपुर, चित्तौड़गढ़, राजसमंद :** **''वेनिस ऑफ द ईस्ट''** नाम दिया गया है इस शहर को. झीलों की नगरी उदयपुर अरावली की पहाड़ियों से घिरा हुआ है. प्रसिद्ध लेक पैलेस पिछौला झील के मध्य में स्थित है जो कि उदयपुर के सबसे सुंदर स्थलों में से एक है. इसकी खूबसूरती दुनियां भर में मशहूर है. इस शहर की

स्थापना 1553 ई. में महाराणा उदयसिंह द्वितीय ने की थी, जिसे मेवाड़ राज्य की राजधानी घोषित किया गया था. यह नागदा के दक्षिण पश्चिम की घुमावदार पहाड़ियों और गिर्वा घाटी में स्थित है. नीली झीलों, अरावली की पहाड़ियों और हरे भरे जंगलों से घिरा उदयपुर शहर एक वैभवपूर्ण पर्यटन स्थल है. यहाँ पिछोला झील के बीच, सीप में मोती की तरह नज़र आता है - लेक पैलेस, जो यहाँ के सबसे प्रसिद्ध स्थलों में से एक है. एशिया की दूसरी सबसे बड़ी, मानव निर्मित मीठे पानी की जयसमंद झील भी उदयपुर ज़िले में है. वैभवशाली सिटी पैलेस और सज्जनगढ़ पैलेस स्थापत्य कला के बेहतरीन नमूने हैं. उदयपुर से कुछ ही दूरी पर चित्तौड़गढ़ और कुंभलगढ़ किला दुनिया के चुनिन्दा दुर्गम किलों में से एक है. राजपुताने का गौरव, शौर्यऔर बलिदान की स्थली - चित्तौड़, चित्तौड़गढ़ का क़िला, 180 मीटर ऊँची पहाड़ी पर बना और 700 एकड़ में फैला सर्वोत्तम तथा सबसे बड़ा क़िला है. चित्तौड़गढ़ में विजय स्तंभ, भैंसरोडगढ़ किला, कीर्ति स्तंभ तुलजा भवानी मंदिर, कालिका मंदिर, सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्मारक राणा कुम्भा पैलेस-अपने ऐतिहासिक महत्व और स्थापत्य कला का बेजोड़ नमूना है. यहाँ रानी पद्मिनी के साथ कई रानियों और राजपूत स्त्रियों ने ''जौहर'' (आत्म बलिदान) किया था.

कुम्भलगढ़ का क़िला- मेवाड़ के सशक्त, सबल और प्रसिद्ध योद्धा महाराणा प्रताप की जन्मस्थली है, उदयपुर से उत्तर की तरफ, लगभग 84 कि.मी. दूरी पर जंगलों के बीच मेवाड़ क्षेत्र में चित्तौड़गढ़ के बाद दूसरा सर्वाधिक महत्वपूर्ण किला है कुम्भलगढ़. राणा कुम्भा द्वारा 15वीं शताब्दी में बनवाया गया यह क़िला अरावली की पहाड़ियों की गोद में बसा है. मेवाड़ को शत्रुओं से बचाने व सुरक्षित रखने में इस क़िले की मुख्य भूमिका रही है.

इसके अतिरिक्त नाथद्वारा, हल्दीघाटी, चारभुजा मंदिर, एकलिंग जी मंदिर, कांकरोली, संवलिया सेठ जी मंदिर आदि उदयपुर, चित्तौड़गढ़ और राजसमंद क्षेत्र में ही आते हैं और उदयपुर से आसानी से भ्रमण किया जा सकता है. उदयपुर शहर देश के सबसे प्रसिद्ध पर्यटन स्थल में होने के कारण सड़क, रेल और हवाई मार्गों से देश के बड़े शहरों से जुड़ा हुआ है.

**कोटा :** चंबल नदी के पूर्वी तट पर बसा कोटा नगर राजस्थान के प्रमुख शैक्षणिक, औद्योगिक तथा पर्यटन महत्व का केन्द्र है. यहां पर कला, संस्कृति और प्रकृति का अनूठा संगम दृष्टिगोचर होता है. किशोर सागर तालाब के मध्य स्थित जगमंदिर, राजपूत स्थापत्य कला का बेजोड़ नमूना है. ब्रज विलास महल तथा छत्रविलास उद्यान शहर के मध्य मे स्थित उल्लेखनीय दर्शनीय स्थल हैं. चंबल नदी कोटा की जीवन रेखा है तथा इस पर निर्मित कोटा बैराज, जवाहर सागर और राणाप्रताप सागर यहां की समृद्धि के प्रमुख स्त्रोत हैं. कोटा नगर में बनने वाली सूती तथा ज़री के काम वाली कोटा डोरिया साड़ी के लिए तथा यहां चटपटी स्वादिष्ट दाल की कचौरियों के लिये कोटा भारत ही नहीं बल्कि विश्वभर में प्रसिद् हैं. ये शहर हाल ही में वर्ल्ड ट्रेड फोरम की सूची में दुनिया का सातवां सबसे ज्यादा भीड-भाड़ वाला शहर बना है. कोटा से 50 किलोमीटर दूर राष्ट्रीय चंबल वन्य जीव अभयारण्य है जो घड़ियालों और पतले मुंह वाले मगरमच्छों के लिए बहुत लोकप्रिय है. किशोर सागर के किनारे पर ही सैवन वंडर्स पार्क स्थित है. यह स्थान फिल्म शूटिंग तथा सैल्फी पॉइंट के रूप में विख्यात है. विश्व के सात अजूबे आश्चर्य के मॉडल्स यहां पर खूबसूरती से प्रर्दर्शित हैं. मुकुंदरा बाघ अभयारण्य, कोटा से लगभग 50 कि.मी. की दूरी पर रावतभाटा मार्ग पर स्थित है. गरडिया महादेव, कोटा से डाबी उदयपुर राष्ट्रीय राजमार्ग 76 पर स्थित दुर्गम वन क्षेत्र है, यह नैसर्गिक सौंदर्य का स्थल तथा चंबल की तराइयों में प्राचीन शिव मंदिर स्थित है. यहां से चंबल के ख़ूबसूरत व्यू को देखा जा सकता है. कोटा शहर दिल्ली-

मुंबई लाइन पर, पश्चिमी रेलवे क्षेत्र में कोटा एक प्रमुख जंक्शन है. अधिकतर ट्रेनों कोटा से गुजरती हैं.

**अजमेर:** अरावली की गोद में बसा अजमेर शहर राजस्थान के केंद्र में स्थित है. **अजमेर में ख़्वाजा मोईनुद्दीन हसन चिश्ती की दरगाह और 14 कि.मी. की दूरी पर पुष्कर में विश्व के एकमात्र ब्रह्मा जी के मंदिर के कारण, यहाँ दो संस्कृतियों का समन्वय होता है.** 7वीं शताब्दी में राजा अजयपाल चौहान ने इस नगरी की स्थापना 'अजय मेरू' के नाम से की. यह 12वीं सदी के अंत तक चौहान वंश का केन्द्र था. अजमेर में दरगाह के अलावा भी बहुत से दर्शनीय स्थल हैं. अजमेर में सर्वाधिक देशी व विदेशी पर्यटक ख़्वाजा मोईनुद्दीन चिश्ती की दरगाह पर मन्नत मांगने तथा मन्नत पूरी होने पर चादर चढ़ाने आते हैं. सभी धर्मों के लोगों में ख़्वाजा साहब की बड़ी मान्यता है. अजमेर से 13 किमी दूर तीर्थराज पुष्करजी प्राचीनकाल से ही हिन्दू आस्था का प्रमुख केंद्र है. प्रतिवर्ष देशभर से लाखों भक्त ब्रम्हाजी के दर्शन करने और पुष्कर सरोवर में स्नान करने के लिए आते हैं.

अजमेर में पर्यटन के मुख्य केन्द्रों में अकबर किला, आनासागर झील, महाराणा प्रताप स्मारक, पृथ्वीराज स्मारक, तारागढ़ किला, सुभाष उद्यान, नारेली जैन मंदिर, फोयसागर झील, टोडगढ़ अभयारण्य मुख्य है.

**अलवर – भरतपुर – धौलपुर :** पर्यटकों के लिए भरतपुर मूलतः पक्षी विहार है. भरतपुर का नाम भगवान श्रीरामचन्द्र जी के भ्राता भरतफ के नाम पर रखा गया. दूसरे भाई लक्ष्मण, भरतपुर के राज परिवार के कुलदेवता के रूप में प्रतिष्ठित है तथा इनके नाम की राज मुहरें और राज चिन्ह यहाँ देखने को मिलते हैं. केवलादेव घना राष्ट्रीय उद्यान, इसे 1971 में संरक्षित पक्षी अभ्यारण्य तथा 1985 में 'विश्व धरोहर' भी घोषित किया गया. लगभग 230 प्रजातियों के पक्षी यहाँ देखे जा सकते हैं. 18वीं सदी के मध्य में भरतपुर के दक्षिण-पूर्व में एक छोटे जलाशय के रूप में, 'घना पक्षी विहार' निर्मित किया गया था. आज इसे विश्व का सबसे ज्यादा शानदार व आकर्षक पक्षी विहार होने का गौरव प्राप्त है. महाराजा सूरजमल यहाँ के सबसे अधिक प्रतापी और प्रभावशाली राजा रहे. भरतपुर महल, धौलपुर पैलेस, गंगामंदिर, डीग, लोहागढ़ किला, लक्ष्मण मंदिर आदि प्रमुख दर्शनीय स्थल हैं.

अलवर जिला राजस्थान का सिंहद्वार माना जाता है. इसे आदिकाल में मत्स्य प्रदेश कहा जाता था. सरिस्का टाइगर रिजर्व - अलवर के सरिस्का क्षेत्र को '**दुनिया का पहला बाघ अभ्यारण्य**' कहा गया है. सन् 1955 में इसे अभ्यारण्य घोषित किया गया था तथा 1979 में इसे राष्ट्रीय उद्यान घोषित किया गया. इसका वन क्षेत्र 1203 कि.मी. में है. बाघ के अलावा यहाँ विविध पशु पक्षियों की प्रजातियाँ जैसे - नीलगाय, लोमड़ी, जंगली सुअर, ख़रगोश, तेन्दुआ, चीतल, सांभर, बन्दर पाए जाते हैं. अन्य महत्वपूर्ण स्थानों में बाला क़िला, अपनी रहस्यमयी कहानियों के लिए विश्वप्रसिद्ध भानगढ़ किला, अलवर सिटी पैलेस, मूसी महारानी की छतरी, पैलेस म्यूजियम, गरभाजी झरना, नीमराना फोर्ट, सिलिसेढ झील आदि प्रमुख हैं.

**माउंट आबू –** अरावली की पहाड़ियों की सबसे अधिक ऊँचाई पर, लगभग 1,722 मीटर समुद्र तल से ऊपर माउण्ट आबू राजस्थान का एकमात्र हिल स्टेशन है. महाराजाओं के शासन के समय शाही परिवारों के लिए, अवकाश बिताने का यह सर्वाधिक पसंदीदा स्थल हुआ करता था. यहाँ पर बने विशाल, आरामदेय बड़े-बड़े घर, ब्रिटिश स्टाइल के बंगले, हॉलिडे लॉज अपना अलग अनोखा अन्दाज दर्शाते हैं, वहीं दूसरी तरफ यहाँ के जंगलों में बसने वाली आदिवासी जातियों के डेरे भी देखे जा सकते हैं. प्राकृतिक सौन्दर्य से भरपूर इस हिल स्टेशन में बहुत से हरे-भरे जंगल, झरने और झीले हैं. इस क्षेत्र में फलने-फूलने वाले अदभुत प्रजाति के पौधे, फूल और वृक्ष भी अचंभित करते हैं. माउण्ड आबू कई धार्मिक स्मारकों के लिए भी प्रसिद्ध है जिसमें दिलवाड़ा के मंदिर, ब्रह्माकुमारी आश्रम, गुरूशिखर और जैन-तीर्थ मुख्य हैं. नक्की झील, माउण्ट आबू के मध्य में स्थित मनक्की लेकफ भारत की पहली मानव निर्मित झील है. लगभग 80 फुट गहरी और 1/4 मील चौड़ी इस झील को देखे बिना, माउण्ट आबू की यात्रा पूरी नहीं मानी जाती. गुरू शिखर- **अरावली की पहाड़ियों का सबसे ऊँचा शिखर गुरू-शिखर** की चोटी है. आध्यात्मिक कारणों तथा के साथ ही, 1772 मीटर समुद्रतल से ऊपर गुरू शिखर से माउण्ट आबू का विहंगम दृश्य देखने के लिए, प्रकृति की छठा को निहारने के लिए गुरू शिखर की यात्रा अनुपम है. टोड रॉक व्यू प्वाइंट, 12 वीं से 13वीं शताब्दी के बीच बना दिलवाड़ा जैन मन्दिर, ब्रम्हाकुमारी आश्रम द्वारा स्थापित पीस पार्क, अचलगढ़ की पहाड़ियों के बीच स्थित मंदिर और विस्तृत भाग में फैले वन्य जीव अभयारण्य इसकी सुंदरता को और अधिक बढ़ा देते हैं.

राजस्थान भौगोलिक, सांस्कृतिक और एतिहासिक विविधताओं से परिपूर्ण है और यहाँ का हर कोना किसी न किसी कारण से देश विदेश में प्रसिद्ध है. यहाँ का शांत और अनुकूल परिवेश पर्यटकों को आकर्षित करता है. **यहाँ की अपनत्व से परिपूर्ण स्वागत सत्कार की भावना 'पधारो म्हारे देश' पर्यटकों को बार बार आकर्षित करती है.**

❑❑❑

**– मनीष व्यास**
*प्रबंधक*
*क्षेत्रीय कार्यालय, अजमेर*

# मेधावी विद्यार्थी सम्मान समारोह

### क्षेत्रीय कार्यालय, कोल्हापुर

दिनांक 16 फरवरी 2021 को क्षेत्रीय कार्यालय, कोल्हापुर द्वारा शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर में विश्वविद्यालय के कुलपति महोदय डॉ. डी टी शिर्के की अध्यक्षता में बड़ौदा मेधावी छात्र सम्मान योजना के अंतर्गत सम्मान समारोह का आयोजन किया गया. उप क्षेत्रीय प्रमुख श्री किशोर बाबू केवीके की उपस्थिति में मेधावी विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया.

### क्षेत्रीय कार्यालय, पणजी

दिनांक 19 फरवरी 2021 को क्षेत्रीय कार्यालय, पणजी में बैंक की मेधावी विद्यार्थी सम्मान योजना के अंतर्गत गोवा विश्वविद्यालय के वर्ष 2019-20 के एम.ए. हिंदी में सर्वाधिक अंक पाने वाले दो मेधावी विद्यार्थियों को पुरस्कार राशि और प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया गया.

### पुणे, अंचल/शहर क्षेत्र

दिनांक 25 फरवरी 2021 को पुणे अंचल/शहर क्षेत्र द्वारा बड़ौदा मेधावी विद्यार्थी पुरस्कार का आयोजन किया गया. इस योजना के तहत सावित्रीबाई फुले पुणे विश्वविद्यालय के मेधावी विद्यार्थियों को अंचल प्रमुख श्री मनीष कौरा के कर कमलों द्वारा प्रशस्ति पत्र एवं पुरस्कार राशि प्रदान की गई.

### क्षेत्रीय कार्यालय, हुब्बल्ली

क्षेत्रीय कार्यालय, हुब्बल्ली द्वारा बड़ौदा मेधावी विद्यार्थी सम्मान योजना के अंतर्गत कर्नाटक विश्वविद्यालय, धारवाड़ में दिनांक 02 मार्च 2021 को एम.ए हिंदी परीक्षा में प्रथम व द्वितीय स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया.

### क्षेत्रीय कार्यालय, चंडीगढ़

फरवरी माह में अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रम में बड़ौदा मेधावी विद्यार्थी योजना के तहत पंजाब विश्वविद्यालय से एम.ए. हिंदी में प्रथम स्थान प्राप्त सुश्री रमा भारद्वाज को सम्मानित करते क्षेत्रीय प्रमुख, चंडीगढ़ श्री विमल कुमार नेगी.

### क्षेत्रीय कार्यालय, हिसार

फरवरी माह में क्षेत्रीय कार्यालय, हिसार में आयोजित कार्यक्रम में बड़ौदा मेधावी विद्यार्थी योजना के तहत महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक के मेधावी विद्यार्थियों को क्षेत्रीय प्रमुख हिसार श्री प्रवीण कुमार सिंह व क्षेत्रीय प्रमुख, करनाल श्री सत्य प्रकाश द्वारा सम्मानित किया गया.

### क्षेत्रीय कार्यालय, अमृतसर

दिनांक 17 मार्च 2021 को गुरुनानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर में बड़ौदा मेधावी सम्मान योजना के अंतर्गत क्षेत्रीय कार्यालय, अमृतसर द्वारा मेधावी विद्यार्थियों को विश्वविद्यालय परिसर में क्षेत्रीय प्रमुख श्री सरबजीत सिंह द्वारा सम्मानित किया गया.

### क्षेत्रीय कार्यलय, जोधपुर

बैंक ऑफ बड़ौदा की बड़ौदा मेधावी विद्यार्थी सम्मान योजना के तहत वर्ष 2018-19 के अंतर्गत जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर के एम.ए. (हिंदी) की परीक्षा में श्रेष्ठ स्थान प्राप्त करने वाले दो विद्यार्थियों को क्षेत्रीय प्रमुख व उप महाप्रबंधक श्री सुरेश चंद्र बुंटोलिया द्वारा सम्मानित किया गया.

## क्षेत्रीय कार्यालय, पूर्वी दिल्ली

दिनांक 01 मार्च, 2021 को पूर्वी दिल्ली क्षेत्र द्वारा बैंक की मेधावी विद्यार्थी सम्मान योजना के अंतर्गत जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय के एम. ए. (हिंदी) के मेधावी विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया. इस अवसर पर उप क्षेत्रीय प्रमुख श्री कमल कुड़िया, मेधावी विद्यार्थी भी उपस्थित रहे.

## क्षेत्रीय कार्यालय, मैसूरु

मैसूर विश्वविद्यालय में वर्ष 2019-20 के दौरान एम ए (हिंदी) परीक्षा में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को बड़ौदा मेधावी विद्यार्थी सम्मान योजना के अंतर्गत दिनांक 26 मार्च 2021 को क्षेत्रीय कार्यालय, मैसूरु द्वारा पुरस्कृत किया गया. इस कार्यक्रम में क्षेत्रीय प्रमुख श्री मुरली कृष्णा, उप क्षेत्रीय प्रमुख श्री लोकेश एम भी उपस्थित थे.

## क्षेत्रीय कार्यालय, पश्चिमी दिल्ली

दिनांक 01 मार्च, 2021 को पश्चिमी दिल्ली क्षेत्र द्वारा बैंक की मेधावी विद्यार्थी योजना के अंतर्गत जामिया मिल्लिया इस्लामिया विश्वविद्यालय के एम. ए. (हिंदी) के मेधावी विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया. इस अवसर पर अंचल प्रमुख एवं महाप्रबंधक श्रीमती सम्मिता सचदेव, क्षेत्रीय प्रमुख श्री बी. के. सबलोक तथा अन्य स्टाफ सदस्य उपस्थित रहे.

## अंचल कार्यालय, बेंगलूरु

बड़ौदा मेधावी विद्यार्थी सम्मान योजना के तहत बेंगलूरु विश्वविद्यालय से शैक्षणिक वर्ष 2019-20 के अंतर्गत एम.ए. (हिंदी) में प्रथम व द्वितीय स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया. इस अवसर पर प्रधान कार्यालय, बड़ौदा से सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा एवं संसदीय समिति) श्री पुनीत कुमार मिश्र भी उपस्थित रहे.

## क्षेत्रीय कार्यालय, दक्षिणी दिल्ली

दिनांक 01 मार्च, 2021 को दक्षिणी दिल्ली क्षेत्र द्वारा बैंक की मेधावी विद्यार्थी सम्मान योजना के अंतर्गत दिल्ली विश्वविद्यालय के एम. ए. (हिंदी) के मेधावी विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया. इस अवसर पर उप अचल प्रमुख श्री सुबोध जैन, उप क्षेत्रीय प्रमुख श्री संदीप कुमार तथा अन्य स्टाफ सदस्य उपस्थित रहे.

## क्षेत्रीय कार्यलय, बर्द्धमान

दिनांक 31 जनवरी, 2021 को क्षेत्रीय कार्यालय, बर्द्धमान द्वारा बर्द्धमान विश्वविद्यालय के वर्ष 2019-20 के मेधावी विद्यार्थियों के सम्मान हेतु समारोह का आयोजन किया गया जिसमें सुश्री प्रिया कुमारी सिंह एवं श्री विकास साव को बर्द्धमान क्षेत्र के क्षेत्रीय प्रमुख श्री प्रदीप कुमार बेहरा एवं उप क्षेत्रीय प्रमुख श्री तिमिर कांति साहा के कर कमलों द्वारा सम्मानित किया गया.

## क्षेत्रीय कार्यालय, सागर

बड़ौदा मेधावी विद्यार्थी सम्मान योजना के अंतर्गत दिनांक 03 मार्च 2021 को क्षेत्रीय कार्यालय, सागर में नेटवर्क डीजीएम, भोपाल अंचल, डॉ. रमेश कुमार मोहंती की अध्यक्षता में सम्मान समारोह का आयोजन किया गया. जिसमें डॉ. हरी सिँह गौर विश्वविद्यालय, सागर के एम ए हिंदी की परीक्षा में प्रथम एवं द्वितीय स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया.

## क्षेत्रीय कार्यालय, बनासकांठा

दिनांक 23 मार्च 2021 को क्षेत्रीय कार्यालय, बनासकांठा द्वारा हेमचंद्राचार्य उत्तर गुजरात विश्वविद्यालय, पाटन के हिंदी स्नातकोत्तर वर्ष 2019 - 20 में प्रथम एवं द्वितीय स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को पाटन मुख्य शाखा के मुख्य प्रबंधक श्री राजेन्द्र प्रसाद चटर्जी द्वारा सम्मानित किया गया. इस अवसर पर पाटन मुख्य शाखा के वरिष्ठ प्रबंधक श्री पंकज उपस्थित रहे.

# बैंकिंग में अनुपालन संस्कृति की आवश्यकता

सरल भाषा में कहा जाए तो अनुपालन का सीधा मतलब किसी भी नियम, कानून, आचार संहिताओं आदि का पालन करना है. बैंकिंग अनुपालन से तात्पर्य बैंकिंग से जुड़े विभिन्न कानूनों, नियमों, विनियमों और अनेक आचार संहिताओं का पालन करना ही अनुपालन है.

संस्कृति किसी भी समाज, संगठन, राष्ट्र में गहराई तक व्याप्त गुणों के समग्र स्वरूप का नाम है, जो उसके सोचने, विचारने, कार्य करने के स्वरूप में अन्तर्निहित होता है. स्थापित नीति- नियमों का स्वैछिक रूप से दैनंदिन व्यव्हार व कार्य में समाहित करना ही संस्कृति की मूलभूत पहचान है. संस्कृति में विनिमय के गुण होते हैं जिससे यह चिरस्थायीन होकर समयानुसार परिवर्तनशील होती रहती है. एक अच्छी संस्कृति संगठन को जागरूक और सचेत रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है.

निरंतर बदलती बैंकिंग नीति नियमावली की वजह से बैंकिंग की कार्य संस्कृति में भी बदलाव होते रहने की संभावना बनी रहती है. वैसे भी बैंको में दैनिक कार्यनिष्पादन के दौरान, जरा सी चूक व लापरवाही इसकी अनुपालन संस्कृति को बुरी तरह से प्रभावित करती है. अतः बैंकों द्वारा हर समय बैंकिंग व्यवसाय से जुड़े समस्त नीति-नियमों,कानूनों,आचार संहिताओं का अक्षरशः, बिना किसी दबाव के स्वैछिक रूप से पालन करते रहना ही अच्छी व सशक्त बैंकिंग अनुपालन संस्कृति की पहचान है.

अब प्रश्न यह है कि क्या इसकी जरूरत है या यूँ कहें कि अच्छी अनुपालन संस्कृति की आवश्यकता क्यों है? यह एक सर्वविदित तथ्य है कि किसी भी सकारात्मक पहलू की आवश्यकता को, उसके महत्व को जानना हो तो सबसे पहले अगर उसके नकारात्मक पहलू का दुष्परिणाम जान लिया जाय तो सकारात्मकता की समग्रता को बहुत ही जल्द, बिना किसी परेशानी व कठिनाई के समझ लिया जाता है. यही बात अच्छी अनुपालन संस्कृति की आवश्यकता के साथ भी सटीक बैठती है. भारतीय बैंकिंग के परिप्रेक्ष्य में, खराब अनुपालन संस्कृति की वजह से इसके स्वास्थ्य (तुलन पत्र) पर होने वाले असर पर अगर हम थोड़ा भी दृष्टिगोचर करें तो अनायास ही अच्छी अनुपालन संस्कृति की आवश्यकता, इसकी महत्ता और अपरिहार्यता समझ में आ जाती है.

भारत का बैंकिंग परिदृश्य पिछले कुछ दशकों में तेजी से बदला है. तकनीकी और प्रौद्योगिकी के विकास के साथ-साथ पूरे बैंकिंग उद्योग में बड़े पैमाने पर बदलाव हुए हैं जिससे वित्तीय प्रणाली के परिचालन के तौर-तरीके तथा वित्तीय संस्थानों के कामकाज के तरीके भी बदल गए हैं. वित्त और प्रौद्योगिकी के बीच गठजोड़ से बैंकिंग के कई पहलओं में क्रांतिकारी बदलाव आया है. इससे बैंकिंग क्षेत्र की संरचना में आमूलचूल बदलाव आया है. इस आमूलचूल बदलाव ने बैंकों के साथ-साथ उनके विनियामकों के समक्ष भी कई महत्वपूर्ण चुनौतियाँ पेश कर दी हैं. ऐसी ही एक महत्वपूर्ण चनौती अनुपालन की है, जो किसी भी बैंकिंग या वित्तीय प्रणाली की दीर्घकालिक सफलता के लिए बहुत महत्वपूर्ण पहलू है. यद्यपि नियामक द्वारा बैंकों की अनुपालान की जाँच करना उनकी एक महत्त्वपूर्ण ज़िम्मेदारी है जो एक अल्पकालिक क्रिया है तथापि बैंकों से यह अपेक्षा की जाती है कि वे अपनी अनुपालन संस्कृति को सशक्त एवं सुदृढ़ बनायें जिसमें न सिर्फ कानूनी रूप से बाध्यकारी नीति-नियमों, कानूनों, आचार संहिताओं बल्कि कारोबारी निष्ठा और नैतिक आचरण का पालन भी स्वैछिक रूप से, स्वतः ही और बिना किसी बाहरी दबाव के होता है.

**खराब अनुपालन संस्कृति के दुष्परिणाम:-**

खराब अनुपालान संस्कृति का सबसे त्वरित व शुरूआती दुष्परिणाम नियामक द्वारा लगाया जाने वाला जुर्माने के रूप में अर्थ दंड है. एक मीडिया रिपोर्ट के अनुसार भारतीय रिज़र्व बैंक ने भारत में कार्यरत बैंकों पर वर्ष 2019 में 109 करोड़ रू का जुर्माना लगाया है जो वर्ष 2018 में लगाये गये जुर्माने की रकम (रू 96 करोड़) की तुलना में 13.5 % ज्यादा है जबकि वर्ष 2017 में लगाये गये जुर्माने की रकम (रू 22 करोड़) की तुलना में 395 % ज्यादा है. इससे स्पष्ट है कि वर्तमान में बैंकों की अनुपालन संस्कृति को और बेहतर बनाने की आवश्यकता है. उपरोक्त के अलावा खराब अनुपालन संस्कृति की वजह से बैंकों को और भी निम्नलिखित दुष्परिणाम झेलने पड़े:

- अनुपालन जोखिम का बढ़ना.
- विनियमकीय प्रतिबंधों का सामना करना पड़ता है.
- वित्तीय नुकसान.
- पूँजी में ह्रास.
- प्रतिष्ठा में गिरावट.
- ब्राण्ड वैल्यू में कमी.
- व्यवसाय में हानि.

कर्मचारियों मे अप्रत्याशित दबाव जिससे उनके मनोबल में कमी आती है.

नियामक द्वारा कुछ व्यवसाय को करने से रोकने से लेकर संपूर्ण व्यवसाय को करने से रोकना. नियामक द्वारा प्रदत्त लाईसेंस को रद्द करना.

**अच्छी अनुपालन संस्कृति से होने वाले फायदे :–**

खराब अनुपालन संस्कृति के विपरीत अच्छी अनुपालन संस्कृति से बहुत ही सुखद और रुचिकर लाभ होते हैं जो किसी भी बैंक के अस्तित्व को न सिर्फ बनाये रखने के लिये वरन उसके सतत विकास के लिये भी जरूरी हैं. कुछेक लाभों का वर्णन नीचे किया गया है:–

- इससे न सिर्फ बैंकों की प्रतिष्ठा बनी रहती है बल्कि इसमें उतरोत्तर वृद्धि होते रहती है.
- प्रतिष्ठा में वृद्धि होने से बैंकों की ब्राण्ड वैल्यू भी बढ़ जाती है जो बैंकों को गुणात्मक व्यवसाय बढ़ाने में उत्प्रेरक का कार्य करती है.
- इससे पारदर्शिता बढ़ती है जिससे बेहतर निर्णय लेने में सहायता प्राप्त होती है.
- ग्राहकों, निवेशकों और विनियामकों का विश्वास जीतने में सहायता मिलती है.
- अप्रत्याशित जोखिम को कम करती है.
- पूँजी नियोजन से जुड़े निर्णयों के लेने में होने वाली कठिनाई को दूर करती है.
- नये निवशकों और ग्राहकों को अपनी ओर आकर्षित करती है.
- बैंकों की कार्यप्रणाली को दक्ष बनाती है.
- अनुमोदित नीतियों का प्रभावी क्रियान्वयन सुनिश्चित कराती है.
- कर्मचारियों में दबाव कम करके उनमें न सिर्फ आत्मविश्वास बढ़ाती है अपितु उनकी प्रतिबद्धता भी सुनिश्चित करती है.
- प्रतिभा को अपनी ओर आकर्षित करती है.
- आनेवाली किसी भी चुनौती को सफलतापूर्वक सामना करने मे सहायता प्रदान करती है.
- इससे बैंकों और ग्राहकों, निवेशकों और विनियामकों के बीच मधुर संबन्ध विकसित होते हैं.
- इससे व्यव्साय वृद्धि के लिये अनुकूल वातावरण का निर्माण होता है.
- ग्राहकों को संतुष्ट रखने मे सहायक सिद्ध होती है.

उपरोक्त वर्णित अच्छी अनुपालन संस्कृति से होनेवाले फ़ायदों और खराब अनुपालन संस्कृति से होनेवाले दुष्परिणामों से यह बिल्कुल स्पष्ट हो जाता है कि बैंकों में अनुपालन संस्कृति क्यों आवश्यक है.

यह कहने में कोइ अतिश्योक्ति नहीं होगी कि जिस प्रकार हमारे शरीर को जीवित रखने के लिये उसमें आत्मा का होना नितांत आवश्यक है ठीक उसी प्रकार से बैंकों को न सिर्फ सतत व सम्यक विकास के लिये अपितु अपने अस्तित्व को बचाये रखने के लिये,अपनी अस्मिता को अक्षुण्ण बनाये रखने के लिये और अपनी जीवंतता बरकरार रखने के लिये भी एक अच्छी अनुपालन संस्कृति का होना बहुत ही जरूरी है.

अनुपालन संस्कृति बैंकिंग जीवन विधि.
नीति–नियमन पोषित बहुमूल्य निधि ..
अमृत प्रदायिनी यह प्राण वायु का काम है करती.
अपनी उपस्थिति मात्र से ही बैंकों को खतरे से है बचाती..

❑❑❑

**– कमलेन्द्र कुमार पाण्डेय**
*मुख्य प्रबंधक, अनुपालन विभाग*
*कॉरपोरेट कार्यालय, मुंबई*

| अपने ज्ञान को परखिए उत्तर: – | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1. | ख | 6. | क | 11. | ग | 16. | घ |
| 2. | घ | 7. | ग | 12. | क | 17. | घ |
| 3. | ग | 8. | ख | 13. | घ | 18. | ग |
| 4. | क | 9. | ख | 14. | ग | 19. | ख |
| 5. | ख | 10. | घ | 15. | ग | 20. | घ |

# ग्राहकों के लिए वेबिनार का आयोजन

## भोपाल अंचल में ग्राहकों के लिए वेबिनार का आयोजन

दिनांक 08 फरवरी 2021 को भोपाल अंचल की शाखाओं के ग्राहकों हेतु रिटेल व डिजिटल उत्पादों की जानकारी प्रदान करने के लिए वेबिनार का आयोजन डॉ. आर के मोहंती (नेटवर्क, उप महाप्रबंधक, म.प्र) की अध्यक्षता में किया गया.

## पटना अंचल द्वारा अंतर विश्वविद्यालय हिंदी व्याख्यान प्रतियोगिता का आयोजन

दिनांक 17 मार्च 2021 को अंचल कार्यालय, पटना द्वारा उप अंचल प्रमुख श्री संजीव चौधरी की अध्यक्षता में 'सोशल मीडिया: वरदान या अभिशाप' विषय पर अंतर विश्वविद्यालय हिंदी व्याख्यान प्रतियोगिता का आयोजन किया गया.

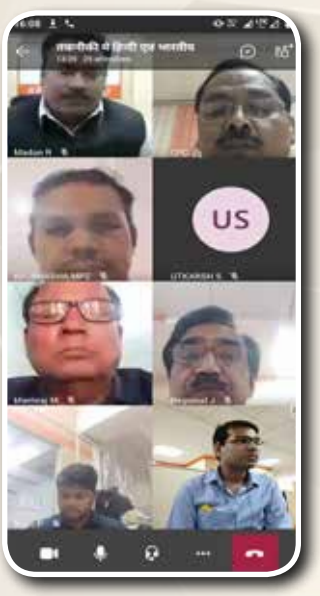


## जबलपुर व सागर क्षेत्र द्वारा ई–संगोष्ठी का आयोजन

जबलपुर व सागर क्षेत्र के स्टाफ सदस्यों हेतु, दिनांक 02 मार्च 2021 को तकनीक में हिंदी एवं अन्य भारतीय भाषाओं की उपयोगिता विषय पर ई–संगोष्ठी का आयोजन किया गया. उक्त संगोष्ठी में भूतपूर्व प्राचार्य, जैवन्ति हॉक्सर शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बैतूल डॉ. खेमराज मगरदे को मुख्य वक्ता के रूप में आमंत्रित किया गया.

## नई दिल्ली अंचल द्वारा डिजिटल तथा रिटेल बैंकिंग विषय पर वेबिनार

दिनांक 06 फरवरी 2021 को नई दिल्ली अंचल द्वारा अंचल के ग्राहकों के लिए डिजिटल तथा रिटेल बैंकिंग विषय पर हिंदी माध्यम से एक वेबिनार का आयोजन किया गया. बड़ौदा अकादमी, नई दिल्ली के वरिष्ठ प्रबंधक श्री प्रमोद कुमार ने ग्राहकों को बैंक के उत्पादों के बारे में जानकारी प्रदान की.

## पटना अंचल द्वारा ग्राहकों हेतु वेबिनार का आयोजन

दिनांक 12 फरवरी 2021 को उप अंचल प्रमुख श्री संजीव चौधरी की अध्यक्षता में डिजिटल बैंकिंग तथा बैंक के रिटेल ऋण उत्पाद विषय पर ग्राहकों हेतु वेबिनार का आयोजन किया गया गया.

## क्षेत्रीय कार्यालय भुवनेश्वर द्वारा तकनीक के संग उदीयमान राजभाषा हिंदी विषय पर संगोष्ठी

दिनांक 25 मार्च 2021 को क्षेत्रीय प्रमुख भुवनेश्वर 2 श्री अन्मय कुमार मिश्रा की अध्यक्षता में 'तकनीक के संग उदीयमान राजभाषा हिंदी' विषय पर राजभाषा संगोष्ठी का आयोजन किया गया. कार्यक्रम में सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा एवं संसदीय समिति) श्री पुनीत कुमार मिश्र भी शामिल हुए.

## श्रेष्ठ राजभाषा कार्यान्वयन हेतु सम्मान

अंचल कार्यालय, बड़ौदा में राजभाषा कार्यान्वयन को बढ़ावा देने के उद्देश्य से चलाए जा रहे राजभाषा उत्कर्ष पुरस्कार योजना के तहत मार्च 2021 तिमाही में बेहतर कार्य करने वाले विभागों को अंचल प्रमुख एवं उप अंचल प्रमुख ने रोलिंग ट्रॉफी प्रदान कर सम्मानित किया.

## जयपुर अंचल द्वारा ग्राहकों के लिए वेबिनार का आयोजन

दिनांक 05 फरवरी 2021 को श्री महेंद्र सिंह महनोत, महाप्रबंधक एवं अंचल प्रमुख, जयपुर अंचल एवं श्री योगेश अग्रवाल, उप अंचल प्रमुख, जयपुर अंचल के मार्गदर्शन में राजस्थान के ग्राहकों हेतु डिजीटल उत्पादों के प्रयोग एवं लाभ के विषय पर ऑनलाइन वेबिनार का आयोजन किया गया. कार्यक्रम में श्री प्रदीप कुमार बाफना, उप महाप्रबंधक (नेटवर्क), अंचल कार्यालय, जयपुर भी शामिल रहे.

## क्षेत्रीय कार्यालय, एर्णाकुलम को नराकास का पुरस्कार

वर्ष 2019-20 के लिए राजभाषा में श्रेष्ठ कार्यनिष्पादन हेतु एर्णाकुलम क्षेत्र को नराकास का द्वितीय पुरस्कार प्राप्त हुआ. पुरस्कार समारोह में अंचल प्रमुख श्री वेंकटेसन द्वारा, क्षेत्रीय प्रमुख श्री बाबू रविशंकर, तथा उप क्षेत्रीय प्रमुख श्री टोनी वेमपिललली उपस्थित रहे.

## मेरठ अंचल द्वारा ग्राहकों के लिए वेबिनार का आयोजन

दिनांक 03 मार्च 2021 को उप अंचल प्रमुख, बरेली अंचल श्री विश्वनाथ टी.एस की अध्यक्षता में ग्राहकों के लिए रिटेल एवं डिजिटल बैंकिंग विषय पर वेबिनार का आयोजन किया गया.

## लखनऊ अंचल द्वारा ग्राहकों के लिए वेबिनार

दिनांक 24 फरवरी 2021 को लखनऊ अंचल कार्यालय द्वारा अंचल के ग्राहकों के लिए रिटेल बैंकिंग /डिजिटल बैंकिंग विषय पर एक वेबिनर का आयोजन किया गया इस अवसर श्री महेंद्र कुमार वर्मा सहायक महाप्रबंधक, अंचल कार्यालय लखनऊ द्वारा ग्राहकों को विशेष रूप से संबोधित किया गया

## विश्व हिंदी दिवस

अंचल कार्यालय, राजकोट

अंचल कार्यालय, हैदराबाद

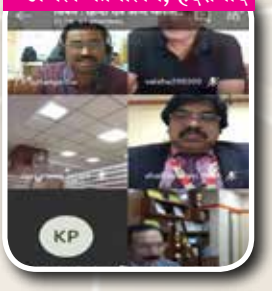


क्षेत्रीय कार्यालय, बरेली शहर

क्षेत्रीय कार्यालय, आगरा

क्षेत्रीय कार्यालय, मुरादाबाद

क्षेत्रीय कार्यालय, शाहजहाँपुर

क्षेत्रीय कार्यालय, जामनगर

क्षेत्रीय कार्यालय, जूनागढ़

क्षेत्रीय कार्यालय, राजकोट

क्षेत्रीय कार्यालय, कालिकट

अंचल कार्यालय, एर्णाकुलम

# आइये! सीखें

## आज्ञाएं

| क्र. | हिंदी | तेलुगु | तमिल | मलयालम | |
|---|---|---|---|---|---|
| 1. | मेरे लिए एक ग्लास पानी लाओ. | नाकु ओ ग्लासुडु नील्लु तीसुकु रा. | ओरु टम्ळर् तण्णीर् कोण्डु वा. | एनिक्कु ओरु ग्लास वेल्लं कोण्डु वरू. | |
| 2. | यहां गाड़ी खड़ी करना मना है. | इक्कड़ वाहनमु निलुपुट निषेधम. | इंगु वण्डियै निरुत्तकूडादु. | इविडे वण्डि नीरुत्तान पाडिल्या. | |
| 3. | मुझे प्रातः जल्दी उठा देना. | नन्नु उदयं त्वरगा निद्र लेपु. | एन्नै कालैयिल् सीक्किरम् एळुप्पिविडु. | एन्नै आतिराविले उणर्तणम् | |
| 4. | मेहमान को अंदर बुलाओ | अतिथुलनु लोपलकु पिलुवु. | विरुन्दाळियै उळ्ळे कूप्पिडु. | अतिथिये अकत्तेक विलिक्कू | |
| 5. | मेरे आने तक यहां प्रतीक्षा करें. | नेनु वच्चेवरकु इक्कड वेचि वुंडु | नान् वरुम् वरैयिल् इंगेये इरु. | ञान् वरुन्नतु वरे इविडे कात्तु निल्क्कू. | |
| 6. | पुनः मुझसे आकार मिलो. | मरल वच्चि नन्नु कलुसुको. | मींडुम् एन्नै सन्दिक्क वा. | वीण्डुं एन्ने वन्नु काणु. | |
| 7. | घूमा-फिरा कर बात मत करो. | डोंक तिरुगुडुगा माटलाडकु. | सुट्रि वळैत्तु पेसादे. | वलच्चु केट्टि संसारिक्करुतु. | |
| 8. | आप कभी भी आ सकते है. | मीरु एप्पुडैना सरे रावच्चु. | नींगळ् एप्पोदु वेण्डुमानालुम् वरलाम्. | तांग्ल्क् एप्पोल् वेणमेंगिलुम् वराम् | |
| 9. | यहां शोर न मचाएं | इक्कड गोल चेय्यकंडि. | इंगु सत्तम् पोड़ादीर्गळ. | ईविडे शब्दं उण्डाक्करुतु. | |
| 10. | इन कागजों को फ़ाइल कर दो | ई कागितालनु फैल्लो पेट्टु. | इंद कागिदंगळै कोप्पु सेय्युंगळ. | ई कडलासुकलेल्लां सूक्षिच्चु वय्क्यू. | |
| 11. | मुझे अखबार दो. | वार्ता पत्रिक तीसुकु रा. | एनक्कु सेय्दि एडु कोडु. | एनिक्यु पत्रं तरू. | |
| 12. | मुझे सहायता का अवसर दें. | नन्नु सहायम चेय्यनी. | एनक्कु उदवि सेय्य वाय्प्पु कोडुंगळ. | निंगले सहायिक्यान एन्ने अनुवदिक्कू . | |
| 13. | कुछ समय यहीं ठहरो. | कोंचेम सेपु इक्कडे उंडंडि. | सिरिदु नेरम् इंगेये इरु. | अल्पं सययं इविडे निल्कू. | |
| 14. | इन निमंत्रण-पत्रों को भेज दों. | ई आह्वान पत्रिकलनु पंपु. | इंद अळैप्पिदळ्कळै अनुप्पुंगळ. | ई क्षणक्कत्तुकल् अयक्युक. | |
| 15. | धैर्य से काम लो. | ओपिक पट्टु. | पोरुमैयाग इरुंगळ. | क्षमयोडे चेय्यू. | |

# प्रयोग' भारतीय भाषाएं

| | कन्नड | गुजराती | बांग्ला | मराठी |
|---|---|---|---|---|
| | ननगे ओन्दु लोटा नीरु तन्दु कोडु. | मारा माटे एक प्यालो पाणी लावो. | आमाके एक ग्लास जल दाओ. | माझ्यासाठी एक ग्लास पाणी आणा. |
| | इल्लि वाहनागळन्नु निल्लिसबारदु. | अहीं गाडी उभी राखवानी मनाई छे. | एखाने गाड़ी राखा निषेध. | येथे गाडी उभी करण्यास मनाई आहे. |
| | नन्नन्नु मुन्जाने बेगा एब्बिसु. | मने सवारे जल्दी उठाडजो. | आमाके सोकाले ताड़ाताड़ि उठिये देबेन. | मला सकाळी लवकर उठव. |
| | अतिथियन्नु ओळगे करे. | महेमानोने अंदर बोलावो. | ओतिथि के भितोरे डाको. | पाहुण्याला आत बोलावा. |
| | नानु बरुववरेगे इल्ले इरु. | हुं आवुं त्यां सुधी अहीं मारी राह जुओ. | आमार आसा पोर्जीन्तो एखाने अपेखा कोरून. | मी येईपर्यंत येथे वाट पहा. |
| | पुनः नन्नन्नु बन्दु नोडु. | फरी आवीने मने मळो. | फिरे एसे आमार संगे देखा कोरो. | मला पुन्हा येऊन भेटा. |
| | सुत्तुबळसि मातनाडा बेडा. | गोळ-गोळ वात न करो. | घूरिये-फिरिये कोथा बोलोना. | गोष्टी बनवू नका. |
| | नीवु यावागा बेकादरू बरबहुदु. | तमे क्यारे पण आवी शको छो. | आपनि जेकोने दिन आसते पारेन. | आपण कधीही येऊ शकता. |
| | इल्लि गलाटे माडबेडि. | अहीं अवाज न करशो. | एखाने कोलाहोल कोरोना. | येथे गडबड करू नका |
| | ई कागदगळन्नु फाइल माडु. | आ कागळोने फाइल करो. | कागोजगुलि फाइले राखो. | ही कागदपत्रें फाइल करा. |
| | ननगे समाचारा पत्रिकेयन्नु तन्दु कोडु. | मने छापुं आपो. | आमाके खबोरेर कागोजटी दाओ. | मला वर्तमान-पत्र द्या. |
| | ननगे सहाया माडलु अवकाशा कोडु. | मने मदद करवानो अवसर आपो. | आमाके साहाज्जो कोरते दाओ. | मला मदत करण्याची संधी द्या. |
| | स्वल्पा होत्तु इल्ले इरु. | थोडीवार माटे अहीं रोकाजो. | किचु खोन एखाने दाड़ाओ. | काही वेळ इथेच थांबा. |
| | ई आमंत्रणा पत्रिकेगळन्नु कळिसि कोडु. | आ निमंत्रणपत्रो मोकली दो. | ऐइ निमोंत्रन पत्रोगुलि पाठिये दाओ. | ही आमंत्रण पत्रे पाठवून द्या |
| | धैर्य इट्टुको. | धीरज राखो. | धैर्जो धरो. | धैर्य ठेवा. |

# हमारा स्वास्थ्य और कोलेस्टेरॉल की भूमिका

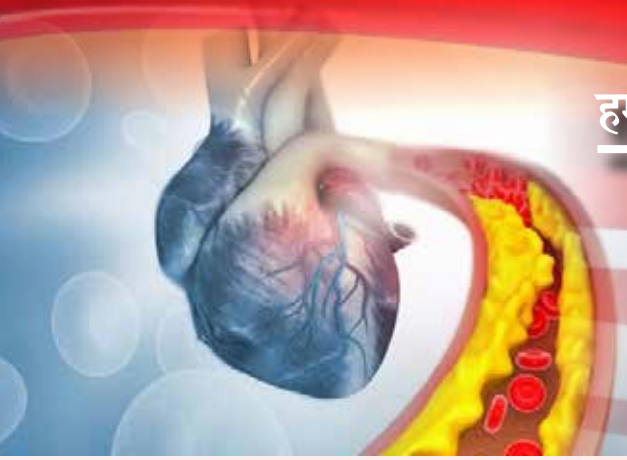

कोलेस्टेरॉल मोम जैसा एक चिपचिपा लिपिड होता है. यह शरीर की लगभग सभी कोशिकाओं में पाया जाता है. यह हॉर्मोन्स निर्माण, पाचन-क्रिया, तंत्रिका-तंत्र तथा विटामिन 'डी' के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है. कोलेस्टेरॉल हमारे खानपान का जरूरी हिस्सा है. कोलेस्टेरॉल को प्रायः दिल की सेहत से जोड़कर देखा जाता है. कई मामलों में यह दिल की बीमारियों की एक बड़ी वजह होता है. चूंकि सवाल दिल से जुड़ा है इसलिए लोग कोलेस्टेरॉल को लेकर प्रायः बड़े गंभीर होते हैं. आम तौर पर ऐसी मान्यता है कि आहार में कोलेस्टेरॉल की मात्रा न्यूनतम होनी चाहिए. पढ़ा-लिखा वर्ग तो कोलेस्टेरॉल दिल को लेकर बेहद चिंतित रहता है तथा यथासंभव इससे परहेज करता है. जबकि सच्चाई यह है कि हमारे खानपान में उपस्थित कोलेस्टेरॉल नुकसानदायक नहीं होता है. हाँ, ट्रांस फैट सेहत के लिए बेहद नुकसानदेह होती हैं. ये तेल या घी को बार-बार गरम करने, या फिर बहुत ज्यादा गरम करने से बनती हैं. वनस्पति घी में ट्रांस फैट अधिकांश मात्रा में पायी जाती है. व्यक्ति के शरीर में फैट की मात्रा जानने के लिए रक्त में उपस्थित कोलेस्टेरॉल तथा ट्राइग्लिसराइड का स्तर जाँच के जरिये पता किया जाता है. इनकी जाँच से यह अनुमान लगाया जाता है कि व्यक्ति की धमनियों में कोलेस्टेरॉल जमा होने और रक्त-प्रवाह अवरुद्ध होने की कितनी संभावना है. इससे हृदय संबन्धी बीमारियां होने के अंदेशे का पता चलता है.

**कोलेस्टेरॉल क्या है?**

कोलेस्टेरॉल रासायनिक तौर पर एक कार्बनिक यौगिक होता है. इसका आण्विक सूत्र $C_{27}H_{46}O$ है. यह स्टेरॉयड कुल का यौगिक है जिसमें कार्बन के 27 परमाणु उपस्थित होते हैं. इसका आई.यू. पी.ए.सी. नाम (3β)-कोलेस्ट-5-इन-8-आल है. कोलेस्टेरॉल शुद्ध अवस्था में सफेद, क्रिस्टलीय, गंधहीन तथा स्वादहीन होता है. कोलेस्टेरॉल चार हाइड्रोकार्बन रिंग से बनी एक स्टेरॉयड संरचना होती है. स्टेरॉयड का एक सिरा हाइड्रोकार्बन शृंखला तथा दूसरा सिरा हाइड्रोक्सिल समूह से जुड़ा रहता है. कोलेस्टेरॉल को 'स्टेरॉल' के नाम से भी जाना जाता है, क्योंकि यह स्टेरॉयड तथा ऐल्कोहॉल से मिलकर बनता है. कोलेस्टेरॉल मानव जीवन के लिए अत्यंत आवश्यक है. यह प्रारंभिक पदार्थ अथवा मध्यवर्ती यौगिक है जिसके द्वारा स्टेरॉयड हार्मोन्स, विटामिन 'डी' तथा पित्त अम्लों का संश्लेषण होता है. कोलेस्टेरॉल का संश्लेषण यकृत तथा अन्य अंगों द्वारा होता है तथा इसका परिसंचरण रक्तप्रवाह के साथ लिपोप्रोटीन वाहकों द्वारा होता है, क्योंकि यह रक्त में अधुलनशील होता है.

संघटनात्मक रूप से लिपोप्रोटीन दो यौगिकों- लिपिड तथा प्रोटीन से मिलकर बनता है. लिपोप्रोटीन का बाहरी आवरण प्रोटीन का तथा आंतरिक भाग लिपिड का होता है. इसमें प्रयुक्त प्रोटीन को 'ऐपोलिपोप्रोटीन' कहते हैं. ऐपोलिपोप्रोटीनों का वितरण विभिन्न लिपोप्रोटीनों में अलग-अलग होता है. काइलोमाइक्रॉन सबसे बड़ा लिपोप्रोटीन होता है, जिसका व्यास 75-600 नैनोमीटर तक होता है. इसमें प्रोटीन तथा लिपिड का अनुपात कम होता है, इसीलिए इनका घनत्व भी न्यूनतम होता है. इसमें लिपिड की मात्रा लगभग 90 प्रतिशत होती है. हाई डेंसिटी लिपोप्रोटीन (HDL), लो डेंसिटी लिपोप्रोटीन (LDL) तथा वेरी लो डेंसिटी लिपोप्रोटीन (VLDL) का संश्लेषण यकृत तथा अन्य अंगों द्वारा होता है. हाई डेंसिटी लिपोप्रोटीन (HDL) सबसे छोटा लिपोप्रोटीन होता है जिसका व्यास लगभग 10.8 नैनोमीटर होता है. इसमें लिपिड तथा प्रोटीन का अनुपात अधिक होता है, इसीलिए इसका घनत्व अधिक होता है. कोलेस्टेरॉल, कोलेस्टेरॉल एस्टर तथा ट्राइग्लिसराइड की सबसे अधिक मात्रा LDL में पायी जाती है.

**कोलेस्टेरॉल का वर्गीकरण**

कोलेस्टेरॉल को उनके गुणों के आधार पर मुख्य रूप से तीन श्रेणियों में वर्गीकृत किया जाता है-

1. हाई डेंसिटी लिपोप्रोटीन (HDL) अर्थात् गुड़ कोलेस्टेरॉल
2. लो डेंसिटी लिपोप्रोटीन (LDL) अर्थात बैड कोलेस्टेरॉल
3. वेरी लो डेंसिटी लिपोप्रोटीन (VLDL) अथवा बेरी बैड कोलेस्टेरॉल

वेरी लो-डेंसिटी लिपोप्रोटीन (वेरी बैड कोलेस्टेरॉल) हमारे हृदय की धमनियों में जम जाते हैं तथा अवरोध उत्पन्न करते हैं. इससे रक्तसंचार बाधित होता है तथा अक्सर यह हार्ट अटैक का कारण बनता है. लो डेंसिटी लिपोप्रोटीन (बैड कोलेस्टेरॉल) भी खतरनाक हो सकते हैं. ये धमनियों को अवरुद्ध भले ही न करें, लेकिन दिल की सेहत के लिए बुरे माने जाते हैं. हाँ, हाई डेंसिटी लिपोप्रोटीन दिल के लिए अच्छे माने जाते हैं. इनकी उचित मात्रा हृदय संबन्धी बीमारियों की संभावना को कम करती है. इसलिए स्वस्थ हृदय के लिए उपरोक्त कोलेस्टेरॉल एक नियत अनुपात में हो तो अच्छा माना जाता है. व्यक्ति के शरीर में वसा की मात्रा जानने के लिए रक्त में उपस्थित कोलेस्टेरॉल तथा ट्राइग्लिसराइड का स्तर जाँच के जरिये पता किया जाता है.

**हाई डेंसिटी लिपोप्रोटीन**

हाई डेंसिटी लिपोप्रोटीन (HDL) कोलेस्टेरॉल को स्वास्थ्य की दृष्टि से अच्छा माना जाता है. इसका घनत्व 1.063-1.210 ग्राम प्रति घन सेंटीमीटर होता है. इसमें प्रोटीन की मात्रा 40 प्रतिशत से 55 प्रतिशत तक होती है. इसका निर्माण यकृत में होता है. यह ऊतकों तथा धमनियों में उपस्थित अतिरिक्त कोलेस्टेरॉल को वापस यकृत में ले जाता है जहाँ वह पित्त अम्लों के रूप में परिवर्तित होकर उत्सर्जित हो जाते हैं. HDL कोलेस्टेरॉल की मात्रा का अधिक होना एक अच्छा संकेत है क्योंकि इसे हृदय के स्वास्थ्य का द्योतक माना जाता है. विशेषज्ञों के अनुसार, रक्त में HDL कोलेस्टेरॉल का स्तर 60 मिलीग्राम प्रति डेसीलीटर या उससे अधिक होना चाहिए. HDL कोलेस्टेरॉल का स्तर 40 मिलीग्राम प्रति डेसीलीटर से कम होना स्वास्थ्य के लिए नुकसानदेह हो सकता है. मछली का तेल, सोयाबीन उत्पाद एवं हरी पत्तीदार सब्जियां, अलसी के बीज आदि को HDL कोलेस्टेरॉल का प्रमुख स्रोत माना जाता है. सुबह की सैर, व्यायाम, योग आदि से भी शरीर में HDL की मात्रा ठीक रखने में मदद मिलती है. धूम्रपान कम करके या पूर्णतः बंद करके भी HDL को सुधारा जा सकता है. वजन कम करना भी अच्छे कोलेस्टेरॉल को बढ़ाने का अच्छा तरीका है.

**लो डेंसिटी लिपोप्रोटीन**

लो डेंसिटी लिपोप्रोटीन (LDL) कोलेस्टेरॉल स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होता है. इसका घनत्व 1.019-1.063 ग्राम प्रति घन सेंटीमीटर होता है तथा इसमें प्रोटीन की मात्रा 20 प्रतिशत होती है. इसका भी उत्पादन यकृत में होता है. यह लिपिड या वसा को विभिन्न ऊतकों, मांसपेशियों तथा हृदय तक रूधिर धमनियों के माध्यम से पहुँचाता है. विशेषज्ञों के अनुसार शरीर में LDL की मात्रा 100 मिलीग्राम प्रति डेसीलीटर से कम होनी चाहिए . इसकी मात्रा 160 मिलीग्राम प्रति डेसीलीटर से अधिक होना स्वास्थ्य के लिए अत्यधिक नुकसानदायक हो सकता है. LDL की मात्रा बढ़ने पर यह धमनियों तथा शिराओं की दीवारों पर परतों के रूप में एकत्रित होने लगता है, जिसके कारण इनसे होने वाले रक्तप्रवाह में बाधा उत्पन्न होती है और हार्ट अटेक तथा स्ट्रोक का खतरा कई गुना बढ़ जाता है. LDL बढ़ने का प्रमुख कारण हमारी खराब जीवन-शैली है.

**वेरी लो डेंसिटी लिपोप्रोटीन** (VLDL) **अथवा वेरी बैड कोलेस्टेरॉल**

वेरी लो डेंसिटी लिपोप्रोटीन (VLDL) कोलेस्टेरॉल को स्वास्थ्य के लिए बहुत हानिकारक माना जाता है. जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है, इसका घनत्व अत्यधिक निम्न लगभग 0.950-1.006 ग्राम प्रति घन सेंटीमीटर होता है. इसमें प्रोटीन की मात्रा लगभग 7 प्रतिशत तक होती है. इसका भी उत्पादन यकृत द्वारा होता है तथा यह काइलोमाइक्रॉन की तरह आँत की अवशोषण कोशिकाओं द्वारा स्रावित होता है. इसका भी उद्देश्य कोलेस्टेरॉल, कोलेस्टेरॉल एस्टर तथा ट्राई ग्लिसराइड को विभिन्न परिधीय ऊतकों तक पहुँचाना होता है. यह धमनियों तथा शिराओं में एकत्र होकर रक्त प्रवाह को बाधित करता है तथा प्रायः हृदय संबंधी बीमारियों का कारण बनता है.

रक्त में कोलेस्टेरॉल का स्तर अनुमन्य सीमा से बढ़ने पर यह रुधिर-धमनियों में परतों के रूप में एकत्र होने लगता है. इससे धमनियां सँकरी पड़ने लगती हैं तथा सामान्य रक्त प्रवाह में बाधा पैदा होती है. हृदय संपूर्ण शरीर को रक्त संचार करता है. साथ ही साथ हृदय को काम करने के लिए काफी ऊर्जा की जरूरत होती है. खुद हृदय को रक्त की आपूर्ति करने वाली धमनियों को कोरोनरी धमनियां कहा जाता है. अक्सर कोलेस्टेरॉल का स्तर ज्यादा होने पर कोरोनरी धमनी में अवरोध उत्पन्न होता है. जिससे दिल को पर्याप्त रक्तसंचार नहीं हो पाता. इसके चलते हृदयाघात तथा हृदयावरोध (हार्ट अटैक तथा हार्ट स्ट्रोक) का खतरा कई गुना बढ़ जाता है. ऐसा माना जाता है कि कोलेस्टेरॉल युक्त भोज्य पदार्थों (घी, पनीर, मक्खन, रेड मीट, क्रीम आदि) के सेवन से हृदय संबंधित बीमारियों का खतरा कई गुना बढ़ जाता है. इसलिए प्रतिदिन इसका सेवन 300 मिलीग्राम से अधिक नहीं करना चाहिए. पश्चिमी देशों तथा अमेरिकियों की तुलना में हिन्दुस्तानियों में हृदय की धमनी सकरी होती है. इससे एक औसत भारतीय में हृदय रोग का खतरा ज्यादा होता है. एक औसत जापानी की तुलना में भी एक भारतीय में हृदय रोग की संभावना ज्यादा पायी गयी है. इन

वजहों से भारतीयों को अपने खानपान तथा जीवनशैली के प्रति कहीं ज्यादा सजग रहने की सलाह दी जाती है.

हाल ही में अमेरिका में भोज्य पदार्थों के सेवन से संबंधी दिए गये दिशा-निर्देशों में कहा गया है कि भोज्य पदार्थों से मिलने वाले कोलेस्टेरॉल तथा रक्त में उपस्थित कोलेस्टेरॉल के बीच आम तौर पर कोई संबंध नहीं होता है. इसलिए जो कोलेस्टेरॉल हम भोजन के रूप में ग्रहण करते हैं उससे स्वास्थ्य संबंधी विशेष खतरा नहीं है. हाँ, हमें ट्रांस बसा युक्त भीज्य पदार्थों (फास्ट फूड, बेकरी उत्पाद, बर्गर, पिज्जा, समोसा, कचौरी आदि) के सेवन से बचना चाहिए क्योंकि ये स्वास्थ्य के लिए बेहद हानिकारक होते हैं. इस विषय की महत्ता का अनुमान इस बात से लगाया जा सकता है कि ''कोलेस्टेरॉल उपापचय के नियमन' से संबंधित उत्कृष्ट अनुसंधान के लिए वैज्ञानिक जोसेफ लियोनार्ड गोल्डस्टीन तथा माइकल स्टुआर्ट ब्राउन को सन् 1985 में आयुर्विज्ञान यानि शरीरक्रिया विज्ञान के नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया.

**शरीर में कोलेस्टेरॉल का निर्माण**

शरीर में कोलेस्टेरॉल का परिसंचरण रुधिर तथा लसीका-तंत्र के माध्यम से होता है. रुधिर परिसंचरण-तंत्र में उपस्थित लगभग 80 प्रतिशत कोलेस्टेरॉल का निर्माण हमारे शरीर के अन्दर (यकृत तथा अन्य अंगों द्वारा) होता है जब कि शेष 20 प्रतिशत कोलेस्टेरॉल हम भोजन के रूप में ग्रहण करते हैं. कहने का अभिप्राय यह है कि कोलेस्टेरॉल के अधिकांश भाग का उत्पादन यकृत द्वारा होता है. जितना अधिक कोलेस्टेरॉल युक्त भोजन का उपयोग हम करेंगे, हमारे यकृत को कोलेस्टेरॉल का निर्माण करने में उतनी ही कम मेहनत करनी पड़ेगी. अगर हम कोलेस्टेरॉल वाला आहार नहीं लेंगे तो शरीर को इसका निर्माण करना पड़ेगा. इसलिए हमें कुछ नुकसानदायक ट्रांस फैट तथा संतृप्त वसाओं को छोड़कर बाकी सभी कोलेस्टेरॉल युक्त भोज्य पदार्थों (शुद्ध घी, दूध, मक्खन, मछली, अण्डा आदि) का उचित मात्रा में सेवन करना चाहिए.

**विभिन्न पदार्थों में उपस्थित कोलेस्टेरॉल की मात्र**

| क्र. सं. | पदार्थ का नाम | कोलेस्टेरॉल की मात्रा (प्रति 100 ग्राम) |
|---|---|---|
| 1. | अंडा | 550 मि. ग्रा. |
| 2. | मक्खन | 250-280 मि. ग्रा. |
| 3. | समुद्री झींगा | 200 मि. ग्रा. |
| 4. | आइसक्रीम | 45 मि. ग्रा. |
| 5. | मार्जरीन | 65 मि. ग्रा. |
| 6. | दूध | 11 मि. ग्रा. |
| 7. | क्रीम | 120-140 मि. ग्रा. |
| 8. | मछली | 70 मि. ग्रा. |
| 9. | कच्चा गोश्त | 70 मि. ग्रा. |
| 10. | सुअर की चर्बी | 95 मि. ग्रा. |

आयुर्विज्ञान के क्षेत्र में कार्यरत विशेषज्ञों का मानना है कि विगत कुछ एक वर्षों में अनेक कंपनियों द्वारा अपने निहित स्वार्थ के लिए कोलेस्टेरॉल संबन्धित बहुत-सी भ्रान्तियाँ फैलाई गयी हैं. पश्चिम के डॉक्टरों, शोधकर्ताओं और दवा कंपनियों ने मिलकर, कोलेस्टेरॉल कम करने की दवाएं बेच कर करोड़ों अरबों डॉलर कमाए. पैथॉलॉजी में भी कोलेस्टेरॉल की जांच का धंधा खूब फल-फूल रहा है. लेकिन अमेरिकी सरकार द्वारा जारी स्वास्थ्य संबंधी दिशा-निर्देशों के अनुसार कोलेस्टेरॉल स्वास्थ्य के लिए प्रायः नुकसानदेह नहीं है. इसके अनुसार अच्छे स्वास्थ्य के लिए आहार में कोलेस्टेरॉल को उचित मात्रा में लेना आवश्यक है. इससे वसायुक्त भोजन का पाचन सरलता से होता है. तंत्रिका-तंत्र की कार्यप्रणाली तथा स्टेरॉयड हार्मोन्स के निर्माण में भी इसकी महत्वपूर्ण भूमिका होती है.

प्रायः सामान्य स्थितियों में हमारा यकृत शरीर में कोलेस्टेरॉल का संतुलन बनाए रखता है. लेकिन कभी-कभी यह संतुलन बिगड़ भी जाता है. इसके पीछे अनेक कारण हैं, जिनमें अधिक मात्रा में वसायुक्त भोजन का सेवन, शरीर के वजन में अत्यधिक वृद्धि, खानपान में लापरवाही तथा नियमित व्यायाम का अभाव प्रमुख हैं. अनेक लोगों में आनुवांशिक कारणों से भी कोलेस्टेरॉल वृद्धि की समस्या पायी जाती है. अकसर देखा गया है कि अगर किसी परिवार में कोलेस्टेरॉल ज्यादा होने की केस हिस्ट्री है तो इस बात की संभावना रहती है कि उनकी संततियों में कोलेस्टेरॉल ज्यादा हो. कुछ लोगों के शरीर में कोलेस्टेरॉल उम्र के साथ बढ़ जाता है. शरीर में कोलेस्टेरॉल की मात्रा का परीक्षण लिपिड प्रीफाइल परीक्षण के द्वारा किया जाता है. सामान्य लिपिड प्रोफाइल परीक्षण में कोलेस्टेरॉल, HDL, LDL तथा ट्राईग्लिसराइड की जांच की जाती है. विशेषज्ञों के अनुसार, ''स्वस्थ व्यक्ति में रक्त कोलेस्टेरॉल का स्तर 150 से 200 मिलीग्राम प्रति डेसीलीटर के बीच होना चाहिए''. रक्त कोलेस्टेरॉल के 200 से 239 मिल्रीग्राम प्रति डेसीलीटर तक के चिरस्थायी स्तर को अच्छा नहीं माना जाता है. रक्त कोलेस्टेरॉल का स्तर 240 मिलीग्राम प्रति डेसीलीटर से अधिक होने पर सेहत के लिए नुकसानदेय माना जाता है. लेकिन अगर रक्त कोलेस्टेरॉल का स्तर बढ़ा हुआ मिले तो चिंतित न होकर उसे नियंत्रित करने का उपाय करना चाहिए.

**दिनचर्या व खानपान संबंधी सुझाव**

कोलेस्टेरॉल के स्तर को नियंत्रण में रखने के लिए निम्नलिखित कदम उपयोगी होते हैं :

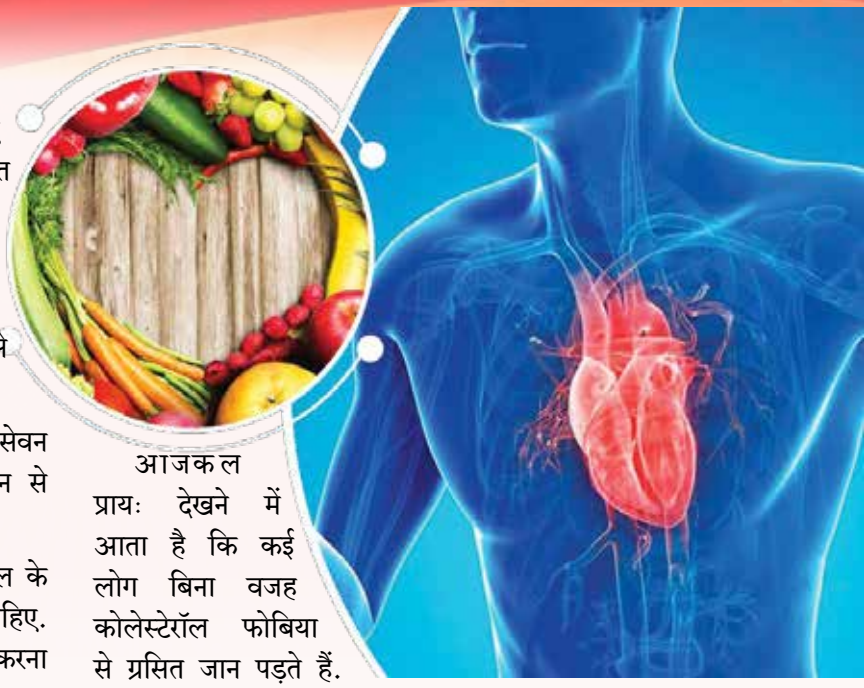

- संतुलित एवं पौष्टिक आहार का सेवन करना चाहिए जिनमें फलों तथा हरी पत्तेदार सब्जियों तथा अंकुरित अनाज का उपयोग प्रमुखता से करना चाहिए.
- फास्ट फूड (जैसे पिज्जा, बर्गर, कुकीज, पेटीज आदि) तथा अत्यधिक ट्रांसवसायुक्त वनस्पति तेलों से निर्मित वस्तुओं (समोसे, पकोड़े, छोले, कचौरी आदि) से परहेज करना चाहिए.
- शुद्ध दूध, दही, घी तथा पनीर आदि उत्पादों का सेवन करना चाहिए, तथा मिलावटी दुग्धोत्पादों के सेवन से बचना चाहिए.
- सोयाबीन, राइसब्रान, सरसों, जैतून, कुसुम तथा तिल के तेल से निर्मित भोज्य पदार्थों का सेवन करना चाहिए. वनस्पति तेलों का उपयोग एक से अधिक बार नहीं करना चाहिए क्योंकि इसे बार-बार गर्म करने से इसमें ट्रांसवसा का निर्माण होता है जो सेहत के लिए बहुत हानिकारक होते हैं.
- दूध से निर्मित चाय की बजाय अगर हरी चाय अथवा काली चाय का प्रयोग करें तो बेहतर होगा. इससे शरीर में कोलेस्टेरॉल का स्तर नियंत्रित रखने में मदद मिलती है.
- खानपान में दालों तथा अनाजों का उपयोग करना चाहिए. यह शरीर में कोलेस्टेरॉल के नियंत्रण में मददगार होता है.
- रिफाइन्ड कार्बोहाइड्रेट जैसे- सफेद चीनी, सफेद मेदा तथा सफेद चावल का उपयोग कम से कम करना चाहिए. ऐसा इसलिए क्योंकि ये वसा से कहीं ज्यादा नुकसानदायक होते हैं. इनकी जगह खाँड़, ब्राउन राइस तथा चोंकरयुक्त मैदे का प्रयोग ज्यादा उचित होगा.
- धूम्रपान तथा शराब के सेवन से परहेज करना चाहिए.
- नियमित रूप से व्यायाम तथा योगासन करना चाहिए.
- शरीर का वजन नियंत्रण में रखना चाहिए. आहार में मिलने वाली वसा में अधिकांशतः ट्राइग्लिसराइड्स, कोलेस्टेरॉल, और फॉस्फोलिपिड होते हैं. मनुष्य और दूसरे स्तनधारियों के आहार में कुछ वसा का समावेश होना आवश्यक है जैसे कि ऐल्फा लिनोलेनिक एसिड (ओमेगां-3 फैटी एसिड) और लिनोलेइक अम्ल (ओमेगा-6 फैटी एसिड). चूंकि विटामिन (ए, डी, ई, और के) और कैरोटिनायड्स वसा में घुलनशील होते हैं. अत : इनके अवशोषण के लिए आहार में वसा का सेवन करना जरूरी है. ये दोनों वसीय अम्ल 18-कार्बन वाले बहुअसंतृप्त वसीय अम्ल यानी PUFA (Polyunsaturated fatty Acids) हैं जिनमें कार्बन संख्या और द्विआंबध की रचना में भिन्नता है.

आजकल प्रायः देखने में आता है कि कई लोग बिना वजह कोलेस्टेरॉल फोबिया से ग्रसित जान पड़ते हैं. वे कोलेस्टेरॉल घटाने के लिए विभिन्न प्रकार की ऐलोपैथिक दवाइयाँ लेते हैं. इसका उनके स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है. क्योंकि इन दवाओं का यकृत पर साइड इफेक्ट होता है. इससे यकृत संबंधी बीमारियों का खतरा उत्पन्न हो जाता है. ध्यान देने की बात है कि बढ़े हुए कोलेस्टेरॉल से हृदय संबंधित बीमारियों का जोखिम जरूर बढ़ जाता है. लेकिन हर प्रकार की हृदय सम्बन्धी बीमारियों के लिए कोलेस्टेरॉल ही जिम्मेदार हो, यह भी जरूरी नहीं है . धमनियों की कोशिकाओं की क्रियाशीलता को बनाए रखने के लिए कोलेस्टेरॉल जरूरी होता है तथा विभिन्न प्रकार के हार्मान्स निर्माण में भी इसकी बड़ी अहम भूमिका होती है. पाचन-क्रिया तथा विटामिन 'डी' के निर्माण में भी कोलेस्टेराँल अहम भूमिका निभाता है. अत: कोलेस्टेरॉलयुक्त खाद्यपदार्थों का उपयोग कभी भी पूर्णतया बन्द नहीं करना चाहिए. आज अनेकानेक बीमारियों का कारण वास्तव में अनियमित जीवनशैली और असंतुलित आहार है. अगर संयमित जीवनशैली अपनायी जाए तथा खानपान पर ध्यान रखा जाए तो कोलेस्टेरॉल को नियंत्रण में रखा जा सकता है. नियमित शारीरिक श्रम, व्यायाम, योग तथा प्राणायाम रक्त कोलेस्टेरॉल को नियंत्रण में रखने में मददगार होते हैं. अतः निष्कर्ष के तौर पर कहा जा सकता है कि संयमित आहार-विहार तथा दिनचर्या अपनाकर कोलेस्टेरॉल को नियंत्रित रखा जा सकता है तथा दिल को भी सेहतमंद रखा जा सकता है.

❑❑❑

**– डॉ. कृष्ण कुमार मिश्र**
*एसोशिएट प्रोफेसर,*
*होमी भाभा विज्ञान शिक्षा केन्द्र,*
*टाटा मूलभूत अनुसंधान संस्थान, मुंबई*
*('विज्ञान' आपके लिए, जुलाई-सितंबर 2018, अंक से साभार)*

# विश्व हिंदी दिवस

**प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी बैंक के देश–विदेश स्थित कार्यालयों में विश्व हिंदी दिवस का आयोजन धूमधाम किया गया. हम पत्रिका के पाठकों के लिए इन आयोजनों की संक्षिप्त झलकियां प्रस्तुत कर रहे हैं:**

## अंचल कार्यालय

### मुंबई अंचल तथा सभी क्षेत्रीय कार्यालय

### नई दिल्ली

### अंचल एवं क्षेत्रीय कार्यालय पुणे

### मंगलूरु

### बेंगलूरु

### लखनऊ

### कोलकाता

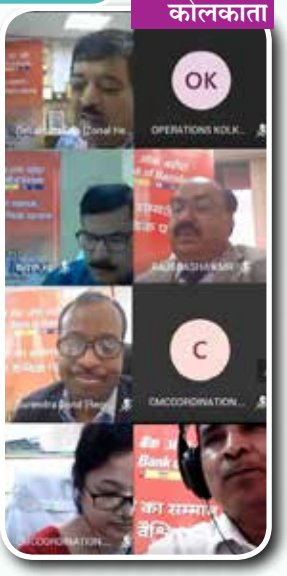


### अहमदाबाद अंचल एवं अहमदाबाद क्षेत्र 1

### भोपाल

### पटना

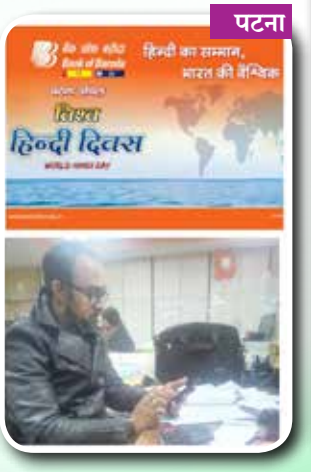


### चंडीगढ़

# विश्व हिंदी दिवस

## क्षेत्रीय कार्यालय

नाशिक

धमतरी

नागपुर क्षेत्र

जबलपुर

मंड्या

रायपुर

मैसूरु

बिलासपुर

दुर्ग

मदुरै

रतलाम

खेड़ा

# विश्व हिंदी दिवस

## क्षेत्रीय कार्यालय

लुधियाना

अयोध्या

संबलपुर

गोरखपुर

पूर्णिया

रायबरेली

मुजफ्फरपुर

सुल्तानपुर

गया

वाराणसी

प्रयागराज एवं प्रयागराज–2

बड़ौदा अकादमी, एसपीबीटीसी

# विश्व हिंदी दिवस

## क्षेत्रीय कार्यालय

महेसाणा

नवसारी

सिलीगुड़ी

बड़ौदा शहर 2

बर्द्धमान

बड़ौदा जिला

इंदौर

गोधरा

भरूच

बांसवाड़ा

**लेखक परिचय: फणीश्वरनाथ रेणु (04 मार्च, 1921– 14 अप्रैल, 1977)**

आजादी के बाद के कथा साहित्य में फणीश्वरनाथ रेणु जी भाव, शैली और 'ठेठ देशीयता' का विशिष्ट रंग ढंग लिए अलग धरातल पर खड़े दिखाई देते हैं. रेणु के उपन्यासों में ग्रामीण जन-जीवन की वास्तविक हलचलों, परिवर्तित स्थितियों, टकरावों, तनावों और जटिलताओं तथा विडंबनाओं का जिस प्रकार उजागर हुआ उससे वे हिंदी कथा साहित्य में प्रेमचंद के असली वारिस कहे जाने लगे. उन्होंने जिस स्थिति को जिया, भोगा उस पर प्रतिक्रिया की. उन्होंने लिखने की प्रक्रिया में कभी अपने को खोजा तो कभी अपने को खोजने की प्रक्रिया में लिखा. एक कलाकार की हैसियत से उनकी प्रतिबद्धता आम आदमी के प्रति रही. रेणु की कहानियों ने ग्रामीण आंचलिक परिवेश के साथ-साथ शहरी जीवन की विभिन्न स्थितियों को भी अपने वस्तु विन्यास में समेटा. उनकी प्रमुख रचनाएं हैं- मैला आंचल, ठुमरी, आदिम रात की महक, अगिन खोर, अच्छे आदमी तथा पलटू बाबू रोड.

स्रोत : rajbhasha.gov.in

### Balloon loan अंतिम बड़ी किस्त वाला ऋण

ऐसा दीर्घावधि ऋण, जिसमें ऋण की किस्तें इस तरह से निर्धारित की जाती हैं कि अंत में एक बड़ी राशि वाली किस्त शेष रह जाती है. आम तौर पर इस तरह के ऋणों पर ब्याज-दर कम रखी जाती है. चूंकि इस तरह के ऋणों में आखिरी किस्त में शामिल राशि अधिक होती है और ऋणी को उसकी एकमुश्त अदायगी करनी होती है, अतः इसमें सबसे बड़ा खतरा ऋणी द्वारा समय पर चुकौती न करने का रहता है. ऋण की पूरी अवधि के दौरान मूल राशि एवं ब्याज की छोटी-छोटी किस्तों में अदायगी करने से ऋणी को तो सहूलियत रहती है, लेकिन आखिर में बड़ी मात्रा में शेष राशि की वजह से ऋण की वसूली कई बार संदिग्ध भी हो जाती है.

### Class Banking वर्ग-बैंकिंग

भारतीय बैंक अपनी स्थापना के दौर से लेकर राष्ट्रीयकरण के दौर तक समाज के आर्थिक रूप से सक्षम एवं संपन्न वर्ग को अपना ग्राहक बनाने में ही अपनी सफलता मानते थे और उसकी वजह से बैंकिंग-सुविधा सीमित लोगों को ही उपलब्ध थी, जिसे वर्ग-बैंकिंग कहा जाता है. अक्सर बैंक बड़े औद्योगिक घरानों को बड़ी मात्रा में ऋण प्रदान करने में सहूलियत मानते थे जो आगे चलकर जोखिम की दृष्टि से बैंकों के लिए हानिकारक साबित हुआ क्योंकि यदि आपने एक ही जगह अधिक वित्तपोषण कर रखा है और वह इकाई फेल हो जाती है तो आपका पूरा ऋण एनपीए बन जाता है. इसका दूसरा पहलू यह भी यह भी था कि इस तरह के उधार में वसूली में कम ही दिक्कतें आती थीं, अतः बैंक कम जोखिम उठाकर अधिकाधिक प्रतिफल प्राप्त करने में ज्यादा विश्वास करते थे.

### Directed Credit निर्देशित ऋण

जब सरकार क्षेत्र-विशेष के लिए ऋण का आबंटन निर्धारित कर दें और स्वयं द्वारा विनियमित वित्तीय संस्थाओं और बैंकों के लिए उसका पालन करना बाध्यकारी बना दे तो ऐसे ऋण निर्देशित ऋणों की परिधि में आते हैं. उदाहरणार्थ, हमारे देश में छोटे और लघु स्तर के उद्यमियों की सहायता के लिए सरकार द्वारा वाणिज्यिक बैंकों को दिया गया निर्देश कि वे प्राथमिकता प्राप्त क्षेत्रों को एक निश्चित मात्रा में ऋण उपलब्ध कराएं.

### Floating Securities चल प्रतिभूतियां

ऐसी प्रतिभूतियां, जो किसी शेयर-दलाल के नाम पर खरीदी जाएं और लाभ कमाने के लिए उन्हें अल्पावधि में पुनः बेच दिया जाए. ये प्रतिभूतियां कभी भी लंबे समय तक किसी भी धारिता में नहीं होती.

### Hard Currency दुर्लभ मुद्रा

विदेशी मुद्रा, जिसकी मांग पूर्ति से अधिक हो. दुर्लभ मुद्रा सहज परिवर्तनीय होती है और उसे अंतर्राष्ट्रीय व्यापार-समझौतों में सम्मिलित देशों द्वारा अधिमान्यता प्राप्त होती है.

### Over the counter काउंटर पर

वित्तीय लिखतों जैसे स्टॉक, बॉन्ड्स वस्तुएं और व्युत्पन्नों का सीधे दो पक्षों के बीच लेनदेन. इस पद का प्रयोग संगठित एक्सचेंज में लेनदेन न किए जाने वाले लिखत का वर्णन करने के लिए विशेषण के रूप में किया जाता है.

### Red ink interest अग्रतिथि ब्याज (लाल स्याही ब्याज)

यदि दो पक्षों द्वारा अलग-अलग तारीखों में अनेक लेनदेन किए गए हों तो देय ब्याज की गणना गुणनफल पद्धति की सहायता से की जाती है. व्यवहार में लाल स्याही से दर्ज किए जाने के कारण इसे लाल स्याही ब्याज ( रेड इंक इंटरेस्ट) भी कहा जाता है.

### Subprime lending सब प्राइम उधार

यह एक ऐसी कार्यप्रणाली है, जिसमें ऋणदाता ऐसे उधारकर्ताओं को ऋण मंजूर करते हैं जो अपने ऋण संबंधी लेनदेन में कुछ विसंगतियां की वजह से ब्याज की सर्वोत्तम ब्याज-दर के लिए पात्र नहीं होते.

**(बैंकिंग पारिभाषिक कोश, भारतीय रिज़र्व बैंक से साभार)**

# सुखद पड़ाव

वैसे तो मनुष्य के लिए जीवन की रस्साकसी बचपन समाप्त होने के साथ ही शुरू हो जाती है, जब अकादमी परीक्षाओं के दौर की शुरुआत होती है. लेकिन असली चुनौती शुरू होती है विश्वविद्यालय का पड़ाव पार करने के बाद. यदि पहले से सही दिशा हो तब तो ठीक है, किन्तु अगर ज़िन्दगी को लेकर सही दिशा न हो तो हम अक्सर खोज में लग जाते हैं. कभी यह खोज जल्दी पूरी होती है तो कभी वर्षों लग जाते हैं, असल में इसका कोई भी नियत समय नहीं हो सकता है.

मैंने अपनी विश्वविद्यालय की पढ़ाई वर्ष 2014 में पूरी कर ली थी. उस समय कोई दिशा या समझ नहीं थी कि कैसे जीना है या आगे क्या करना है. एक दिन एक मित्र के साथ अकस्मात ही अपने शहर में स्थित नाट्य संस्था इप्टा जाना हुआ और उसी दिन उजालों से भरी इस दुनिया में अपने रास्ते का उजाला मैंने खोज लिया था और वह था - नाटक करना, अर्थात् थियेटर की दुनिया में कदम रखना, और तभी से यह सिलसिला शुरू हो गया. सौभाग्य से मुझे अपने पहले ही नाटक सुंदर में मुख्य किरदार की भूमिका निभाने का अवसर प्राप्त हुआ. इसके बाद तो लगातार नाटकों में शामिल होने और प्रदेश, प्रदेश के बाहर अन्य शहरों में नाटक करने और देखने जाने में रुचि बढ़ती ही गई. समय के साथ यह पता ही नहीं चला कि कब यह मेरी जीवन शैली का एक अभिन्न अंग बन गया. स्कूल, कॉलेज के तकनीकी सूत्र और सिद्धांत याद करने वाला मन अब अलग-अलग किरदारों में खुद को ढ़ालने के क्रम में उनके संवाद याद करते हुए बहुत खुश था.

इसी दौरान मुझे देशी-विदेशी साहित्य पढ़ने का मौका मिला और आसपास के हर एक व्यक्ति, जीव-जन्तु और प्रकृति आदि को अपने नज़रिए और उनके खुद के नज़रिए से जानने समझने और जीवन में उनके स्थान का उचित आकलन करने में भी मदद मिली. किरदारों के मनोभाव में उतरने के साथ-साथ आसपास की होने वाली रोज़मर्रा की घटनाओं सहित, समाज और लोगों के तौर तरीकों को क़रीब से देखने और उनके प्रति जागरूक होने की प्रेरणा, मुझे थियेटर से ही मिली. जैसे कि दही वाली औरत हमारे मोहल्ले में सालों से दही बेचती थी पर उसके ले..... दही ले..... बोलने के अंदाज़ पर अब जा कर मेरा ध्यान गया था. मैंने यह महसूस किया कि ठेलों पर मनियारी सामान बेचने वाले ज़्यादातर लोग खासतौर से अस्सी के दशक के अंत से लेकर नब्बे के दशक के बीच के ही फिल्मी गाने बजाते हैं, इसी तरह चाट वाले, सब्जी वाले पानवाले ज्यादातर एक खास तरह से ही अपना व्यवसाय करते हैं, और हां - पेशे से ड्राइवर का काम करने वालों की भी नब्बे के दशक के गानों में एक खास तरह की रुचि होती है. इसके अलावा चौपाया जानवरों के चलने का तरीका, उनके ख़ुर, बच्चों को चाटना अर्थात् हर वो चीज जो आसपास हो रही है उसे देखने में मज़ा आने लगा. यही नहीं, दैनिक जीवन में भी थियेटर के दौरान और उसके बाहर नए लोगों से मिलना और बातचीत करने में प्रतिदिन नवीनता का एक पुट था. वर्ष 2014 में शुरू हुआ ये सिलसिला लगभग तीन - चार साल तक चला.

एक मध्यम वर्गीय परिवार में किसी जवान बेटे का बिना कुछ कमाए कला को अपनाना या उस ओर जाना हमारे समाज में हमेशा से ही टेढ़ी खीर रहा है, आप ऐसा कर सकते हैं यदि आप कोई अपवाद हों. किन्तु मैं अपवाद नहीं था और मध्यम वर्गीय परिवार से संबंधित, कला को अपनाने की कोशिश करने वाले एक जवान बेरोजगार होने के नाते मुझे भी अपने लक्ष्यों के बारे में सोचने पर विवश होना पड़ा. अतः मैंने थियेटर से कुछ समय का अवकाश लेने का फैसला किया ताकि फिर से पढ़ाई शुरू कर सकूँ और जीविका हेतु कोई पक्की नौकरी की तैयारी करूँ. मेरे मन में यह बात थी कि एक बार सेटल होने के बाद मैं बचे हुए समय में थियेटर कर सकता हूँ. इसीलिए मैंने साहित्य की रुचि और थियेटर करना छोड़कर प्रतियोगी परीक्षाओं की जी तोड़ तैयारी शुरू कर दी. इस दौरान तैयारी करने के अलावा सबकुछ बंद रहा, यहां तक कि मित्रों से मिलना - जुलना भी लगभग न के बराबर हो गया. कभी-कभी कहीं से कोई नाटक के किरदार करने का प्रस्ताव आता भी तो मना करना एक मजबूरी थी.

जो भी हो, एक बात तो तय थी, नौकरी के बाद इसके अलावा सिर्फ़ थियेटर करना है'' सो मैं मन लगाकर जुट गया. दो-तीन असफल प्रयासों के बाद आखिरकार मैंने वर्ष 2019 में बैंक आईबीपीएस क्लर्क की मुख्य परीक्षा पास कर ली. मुझे याद है कि उस दिन मुझमें अतिउत्साह तो नहीं, पर मन में एक उमंग

ज़रूर था कि चलो अब बिना किसी सामाजिक, पारिवारिक रोकटोक के अपनी पसंद का कार्य आसानी से किया जा सकेगा. दिनांक 16 मई 2019 को मैं नौकरी ज्वाइन करने अंबिकापुर जिले के भित्तिकला गांव पहुंचा, तो लगा कि ये मैं कहां आ गया, छोटा सा बैंक का दफ़्तर था और वहाँ बेहाल कर देने वाली गर्मी थी. खैर वो एक क्षणिक अनुभूति थी. धीरे-धीरे मैंने अपने मन को रमाने लगा था. कुछ दिनों बाद एक हफ्ते के लिए बैंकिंग प्रशिक्षण हेतु भोपाल जाना हुआ, यह बैंकिंग जीवन का अब तक का सब से बेहतर अनुभव था, नए दोस्त भी बने. उस वक्त ऐसा लगा कि बैंकिंग जीवन बेहतर और रूचिपूर्ण भी हो सकता है. प्रशिक्षण के उपरांत वापस मैं अपने कार्यस्थल भित्तिकला गाँव आ गया.

मैं अपने जीवन के इस पड़ाव का अवलोकन करता हूं, तो इस पड़ाव के कुछ सकारात्मक पहलू नजर आते हैं. इस छोटे से शहर में लगभग आधे भारत के राज्यों के लोग उन राज्यों की संस्कृति का प्रतिनिधित्व करते हुए अलग-अलग टापुओं की तरह प्रतीत होते हैं, जिन्हें क़रीब से देख पाना एक रोमांचित करने वाला सुखद अनुभव है. यहां का वातावरण किसी उपन्यास में चित्रित वातावरण से कम प्रतीत नहीं होता है. इसके अलावा इस शहर के वातावरण पर हर मौसम का बराबर अधिकार होना वर्षभर इसकी प्राकृतिक सुंदरता को बनाए रखता है जो इसके दिनों को उचाट नहीं होने देता. रविवार या अवकाश के दिनों में किसी भी दिशा में यहां बस निकल चलो, प्रकृति द्वारा सजाए पहाड़ों और जंगलों का दीदार हो ही जाता है.

यहाँ से जाने के बाद एक दिन मैं इसी जगह, शहर को बहुत याद करूंगा शायद. प्रत्येक घटना या स्थिति के पीछे कोई कारण होता है. यहां की तैनाती ने मुझे जीवन के प्रति एक नया नजरिया दिखाया है. बैंकिंग समय की समाप्ति के बाद फिर से मेरी रुचि साहित्य के प्रति जागृत हो गयी है. गाँव की संस्कृति और जन जीवन को मैंने नजदीकी से समझना शुरू कर दिया है. शायद मुझे यह अवसर मिला है कि मैं इन अनुभवों का उपयोग आगे जाकर किसी अच्छे नाटक के मंचन में अवश्य कर सकूँ. ❑❑❑

**– अनिल साहू**
*व्यवसाय सहयोगी*
*भितिकलां शाखा*
*बिलासपुर क्षेत्र*

# नदी हूँ मैं

पहाड़ों से
झरनों से
मैं निकलती हूँ
बूँद-बूँद संग्रहित कर रूप नया धरती हूँ.
कभी ऊँचाई से गिरती हूँ
कभी मैदानों में सरपट दौड़ लगाती हूँ
मीलों का सफर तय कर
जीवों की प्यास बुझाती हूँ.
हरे-भरे रहते सबके खेत और खलिहान
मिट्टी ऐसी उपजाऊ बनाती हूँ
जीवनदायिनी हूँ मैं
इसलिए जीवन रेखा, भागीरथी कहलाती हूँ.
इंसानों ने कूड़ादान बना दिया है मुझको
अपना दर्द में कहूँ किसको
मुझे तो नित बहते रहना है
ममता, दया, परोपकार करते आगे बढ़ते रहना है.
नदी हूँ मैं
शेवालिका भी हूँ, प्रवाहिनी भी हूँ
दर्द सहन करते करते सागर से मिल जाना है
वाष्पित होकर फिर पहाड़ों से, झरनों से निकलकर बहना है.

**– श्री राहुल सिंह**
*व्यवसाय सहयोगी*
*कालापीपल शाखा, भोपाल क्षेत्र*

# अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस समारोह

## अंचल कार्यालय

पुणे

बड़ौदा

नई दिल्ली

चेन्नई

लखनऊ

मुंबई

चंडीगढ़

मंगलूरु

भोपाल अंचल व क्षेत्र

बेंगलूरु

कोलकाता

एसपीबीटी महाविद्यालय, मुंबई

# अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस समारोह

## क्षेत्रीय कार्यालय

कोल्हापुर

संबलपुर

पुणे जिला

पूर्णिया

औरंगाबाद

प्रयागराज एवं प्रयागराज–2

नागपुर

अयोध्या

लुधियाना

फतेहपुर

बनासकांठा

खेड़ा

रायबरेली

नाशिक

# अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस समारोह

## क्षेत्रीय कार्यालय

वाराणसी

बर्द्धमान

मैसूरु

रतलाम

सिलीगुड़ी

धमतरी

बिलासपुर

रायपुर

भरूच

जोधपुर

वलसाड

सवाईमाधोपुर

बड़ौदा शहर–2

जयपुर

# अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस समारोह

## क्षेत्रीय कार्यालय

सूरत जिला

अहमदाबाद–2

कोटा

मंड्या

चंडीगढ़ एवं शिमला

जालंधर

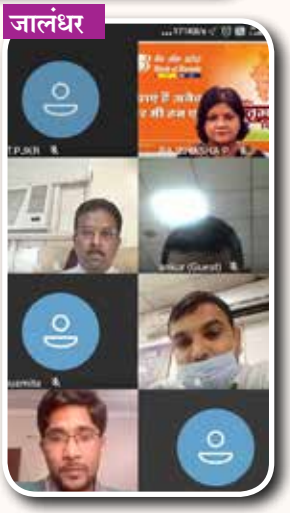

आणंद

मेहसाना

गोरखपुर

## क्षेत्रीय भाषा प्रशिक्षण कार्यक्रम

### क्षेत्रीय कार्यालय, सिलीगुड़ी

सिलीगुड़ी क्षेत्र में दिनांक 26 फरवरी 2021 से क्षेत्रीय भाषा प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रारंभ किया गया. कार्यक्रम से आरंभिक सत्र में क्षेत्रीय प्रमुख श्री दिलीप कुमार प्रसाद भी शामिल रहे.

### क्षेत्रीय कार्यालय, बर्द्धमान

दिनांक 25 मार्च, 2021 को बर्द्धमान क्षेत्रीय कार्यालय में क्षेत्रीय प्रमुख श्री प्रदीप कुमार बेहरा की अध्यक्षता में बंगला प्रशिक्षण कार्यक्रम के नए बैच की शुरुआत की गई.

### क्षेत्रीय कार्यालय, औरंगाबाद

दिनांक 25 जनवरी 2021 से 30 जनवरी 2021 तक औरंगाबाद क्षेत्र द्वारा गैर मराठी भाषी स्टाफ सदस्यों के लिए मराठी भाषा प्रशिक्षण चलाया गया. प्रशिक्षण सत्र का संचालन प्रबंधक श्री प्रमोद भोंबे ने किया.

# अपने ज्ञान को परखिए

1. आरबीआई ने हाल ही में, पेमेंट बैंक में बैलेंस की अधिकतम सीमा को रु. 1 लाख से बढ़ाकर कर दिया है.
   (क) रु. 1.5 लाख (ख) रु. 2.0 लाख
   (ग) रु. 2.5 लाख (घ) रु. 5.0 लाख
2. प्रतिवर्ष 'विश्व स्वास्थ्य दिवस' कब मनाया जाता है?
   (क) 03 अप्रैल को (ख) 05 अप्रैल को
   (ग) 06 अप्रैल को (घ) 07 अप्रैल को
3. भारत ने किस देश के साथ ब्रह्मोस मिसाइल समेत अन्य रक्षा उपकरणों की आपूर्ति हेतु समझौता किया है–
   (क) नेपाल (ख) चीन
   (ग) फिलीपींस (घ) रूस
4. विश्व का सबसे पुराना टेनिस टूर्नामेंट कौनसा है?
   (क) विंबलडन (ख) फ्रेंच ओपन
   (ग) यूएस ओपन (घ) ऑस्ट्रेलियन ओपन
5. भारत के 48वें मुख्य न्यायाधीश के रूप में किसे नियुक्त किया गया है?
   (क) के के गोखले (ख) एनवी रमना
   (ग) जेएस पालीवाल (घ) एमएस राव
6. हाल ही में, सभी नागरिकों को मुफ्त स्वास्थ्य बीमा सुविधा देने वाला भारत का पहला राज्य कौनसा है?
   (क) राजस्थान (ख) ओडिशा
   (ग) उत्तराखंड (घ) मणिपुर
7. 'काला नमक चावल महोत्सव' का आयोजन किस राज्य में किया जा रहा है?
   (क) मध्य प्रदेश (ख) राजस्थान
   (ग) उत्तर प्रदेश (घ) पश्चिम बंगाल
8. निम्नलिखित में से किसे भारतीय लघु उद्योग विकास बैंक (SIDBI) के नए अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक के रूप में चुना गया है?
   (क) के नागर (ख) एस रमण
   (ग) बी कृष्णा (घ) एस परमार
9. कौनसा विटामिन शरीर में प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाता है?
   (क) विटामिन ए (ख) विटामिन सी
   (ग) विटामिन डी (घ) विटामिन बी12
10. टी–20 अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट में 3000 रन बनाने वाले प्रथम खिलाड़ी का नाम है–
    (क) रोहित शर्मा (ख) बेन स्टोक्स
    (ग) डेविड वार्नर (घ) विराट कोहली
11. भारत की वह कौनसी कंपनी है जिसे अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सबसे बड़े (प्रमुख 10) ब्रांड के रूप में चयनित किया गया है?
    (क) टाटा कंसलटेंसी (ख) इंडियन ऑयल
    (ग) रिलायंस जियो (घ) इंफोसिस
12. निम्नलिखित में से किस संगठन द्वारा 'स्टेच्यू ऑफ यूनिटी' को विश्व के आठवें आश्चर्य के रूप में मान्यता प्रदान की है?
    (क) शंघाई सहयोग संगठन (ख) आसियान
    (ग) ब्रिक्स (घ) ओपेक
13. भारत का सबसे बड़ा बंदरगाह (पोर्ट) कौनसा माना जाता है?
    (क) कोलकाता (ख) कोचीन
    (ग) चेन्नई (घ) मुंबई
14. कौनसे शब्द को वर्ष 2020 का ऑक्सफोर्ड हिंदी शब्द के रूप में चुना गया है?
    (क) कोरोना (ख) मजदूर
    (ग) आत्मनिर्भरता (घ) पलायन
15. भारत की किस नदी को वृद्ध गंगा कहा जाता है?
    (क) कृष्णा (ख) कावेरी
    (ग) गोदावरी (घ) नर्मदा
16. निम्नलिखित में से कौनसा पदार्थ पेंसिल में पाया जाता है?
    (क) सिलिकॉन (ख) फास्फोरस
    (ग) चारकोल (घ) ग्रेफाइट
17. 'डेविस कप' किस खेल से संबद्ध है?
    (क) हॉकी (ख) पोलो
    (ग) टेबल टेनिस (घ) लॉन टेनिस
18. किस राज्य में भारत का पहला फायर पार्क खुला है?
    (क) तमिलनाडु (ख) झारखंड
    (ग) ओडिशा (घ) महाराष्ट्र
19. भारत का सबसे महत्वपूर्ण लघु उद्योग कौनसा है?
    (क) कपड़ा/वस्त्र उद्योग (टेक्सटाइल इंडस्ट्री)
    (ख) हथकरघा उद्योग (हैंडलूम इंडस्ट्री)
    (ग) कागज़ उद्योग (पेपर इंडस्ट्री)
    (घ) जूट उद्योग (जूट इंडस्ट्री)
20. दिल्ली सरकार ने हाल ही में, इलेक्ट्रिक वाहनों को बढ़ावा देने हेतु किस अभियान की शुरुआत की है?
    (क) स्टार्ट दिल्ली (ख) इलेक्ट्रो दिल्ली
    (ग) क्लीन दिल्ली (घ) स्विच दिल्ली

*(उत्तर के लिए पृष्ठ संख्या 23 देखें)*

# नराकास पुरस्कार

## क्षेत्रीय कार्यालय, रायपुर को नराकास का सम्मान

दिनांक 20 जनवरी 2021 को बैंक-नराकास, रायपुर की छमाही बैठक में क्षेत्रीय कार्यालय, रायपुर को प्रोत्साहन पुरस्कार प्राप्ति की घोषणा की गई. इस बैठक में क्षेत्रीय प्रमुख श्री सत्यरंजन महापात्र भी उपस्थित रहे. पुरस्कार वितरण दिनांक 29 जनवरी 2021 को नराकास बैंक की उपसमिति की बैठक में किया गया.

## क्षेत्रीय कार्यालय, पणजी को नराकास का प्रथम पुरस्कार

दिनांक 19 फरवरी 2021 को बैंक-नराकास पणजी द्वारा वर्ष 2020 के लिए क्षेत्रीय कार्यालय, पणजी को सर्वश्रेष्ठ हिंदी कार्यान्वयन के लिए प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया गया.

## क्षेत्रीय कार्यालय, भुवनेश्वर को नराकास का पुरस्कार

राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्यनिष्पादन करने हेतु क्षेत्रीय कार्यालय,भुवनेश्वर को नराकास,भुवनेश्वर से तृतीय पुरस्कार प्राप्त हुआ. यह पुरस्कार दिनांक 22 जनवरी 2021 को क्षेत्रीय प्रमुख श्री भारत भूषण, भुवनेश्वर क्षेत्र तथा क्षेत्रीय प्रमुख,भुवनेश्वर क्षेत्र 2श्री अन्मय कुमार मिश्र ने ग्रहण किया.

## क्षेत्रीय कार्यालय, दुर्ग को नराकास भिलाई का अग्रगण्य पुरस्कार प्राप्त

क्षेत्रीय कार्यालय दुर्ग को वर्ष 2020 हेतु नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति भिलाई-दुर्ग का अग्रगण्य पुरस्कार प्रदान किया गया. दिनांक 10 मार्च 2021 को क्षेत्रीय प्रमुख श्री अरविंद काटकर ने यह पुरस्कार ग्रहण किया.

## नराकास, धमतरी द्वारा ऑनलाइन क्विज़ प्रतियोगिता

नराकास भिलाई -दुर्ग द्वारा दिनांक 28 अगस्त 2020 को आयोजित ऑनलाइन क्विज़ प्रतियोगिता में क्षेत्र के स्टाफ श्री मोहनीश अंबाड़े को प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ. दिनांक 10 मार्च 2021 को आयोजित पुरस्कार वितरण सामारोह में उन्हें उक्त पुरस्कार प्रदान किया गया.

## मुंबई अंचल, कार्यशाला का आयोजन

दिनांक 17 मार्च 2021 को बैंक द्वारा नराकास, ठाणे एवं बैंक नराकास, मुंबई के तत्वावधान में अभिवाचन प्रतियोगिता का माइक्रोसॉफ़्ट टीम्स के माध्यम से ऑनलाइन आयोजन किया गया. कार्यक्रम का उद्घाटन अंचल प्रमुख, श्री मधुर कुमार एवं उप अंचल प्रमुख, श्री पीतबाश पटनायक ने किया.

## बैंक नराकास, जयपुर द्वारा सभी सदस्य कार्यालयों हेतु त्वरित अनुवाद प्रशिक्षण कार्यक्रम

दिनांक 06 जनवरी 2021 को बैंक नराकास, जयपुर द्वारा संयुक्त सचिव महोदया डॉ. मीनाक्षी जौली की विशिष्ट उपस्थिति में 'बैंकिंग क्षेत्र में परिभाषिक शब्दावली का महत्व और दैनिक प्रयोग की अभिव्यक्ति' विषय पर आधारित त्वरित अनुवाद प्रशिक्षण का आयोजन किया गया. कार्यक्रम में सभी सदस्य कार्यालयों के कार्यपालकों एवं अन्य अधिकारियों ने भाग लिया.

# नराकास की छमाही बैठक

## नराकास, जयपुर

बैंक नराकास, जयपुर की 71वीं अर्द्धवार्षिक बैठक दिनांक 29 जनवरी 2021 को श्री महेंद्र एस. महनोत, अध्यक्ष एवं महाप्रबंधक, बैंक नराकास, जयपुर की अध्यक्षता, श्री अरुण कुमार सिंह, क्षेत्रीय निदेशक, भारतीय रिज़र्व बैंक, जयपुर, एवं श्री नरेंद्र मेहरा, सहा.निदेशक, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, नई दिल्ली के विशेष मार्गदर्शन में आयोजित की गई.

## बैंक नराकास, जोधपुर

नराकास (बैंक), जोधपुर की 19वीं छःमाही समीक्षा बैठक का आयोजन दिनांक 11 फरवरी 2021 को समिति के अध्यक्ष एवं क्षेत्रीय प्रमुख श्री सुरेशचंद्र बुंटोलिया की अध्यक्षता में किया गया. इस बैठक में राजभाषा विभाग, भारत सरकार के सहायक निदेशक श्री नरेंद्र सिंह मेहरा तथा अन्य सदस्य बैंकों के प्रतिनिधि उपस्थित रहें.

## नराकास, जलंधर

बैंक नराकास, जलन्धर की 18 वीं अर्द्ध वार्षिक बैठक का आयोजन दिनांक 11 फरवरी 2021 को किया गया. बैठक की अध्यक्षता क्षेत्रीय प्रमुख, जलन्धर ,श्री राजेय भास्कर ने की इस बैठक में उप निदेशक (कार्यान्वयन), गृह मंत्रालय, भारत सरकार श्री कुमार पाल शर्मा का विशेष मार्गदर्शन प्राप्त हुआ .

## नराकास, बरेली

दिनांक 05 जनवरी 2021 को नराकास, बरेली की बैठक का आयोजन किया गया. बैठक में मुख्य अतिथि के रुप में माननीय श्री बी. एल मीणा, निदेशक (सेवा) भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, समिति के अध्यक्ष एवं अंचल प्रमुख श्री अमर नाथ गुप्ता भी उपस्थित रहे.

## नराकास, अहमदाबाद

बैंक नराकास, अहमदाबाद की 68वीं अर्धवार्षिक समीक्षा बैठक दिनांक 24 फरवरी, 2021 को श्री वी सी उपाध्याय, उप महाप्रबंधक एवं अध्यक्ष (एसएलबीसी), नराकास (बैंक) अहमदाबाद की अध्यक्षता तथा डॉ. सुस्मिता भट्टाचार्य, उपनिदेशक (कार्यान्वयन), गृह मंत्रालय, भारत सरकार के विशेष मार्गदर्शन में आयोजित की गयी.

## नराकास, टोंक

दिनांक 26 फरवरी 2021 को टोंक नराकास की तृतीय छमाही बैठक का आयोजन उप निदेशक कार्यान्वयन राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय भारत सरकार श्री कुमार पाल शर्मा जी के विशेष मार्गदर्शन एवं टोंक नराकास अध्यक्ष श्री एम पी जैन जी की अध्यक्षता में किया गया.

## नराकास, विजयवाड़ा

दिनांक 09 मार्च 2021 को बैंक नराकास, विजयवाड़ा की 7वीं अर्द्धवार्षिक समीक्षा बैठक का आयोजन किया गया. बैठक की अध्यक्षता क्षेत्रीय प्रमुख श्री सी एच राजशेखर ने की. इस अवसर पर उप निदेशक (कार्यान्वयन) श्री कुमार पाल शर्मा उपस्थित रहे.

## नराकास, भुज

दिनांक 15 फरवरी 2021 को नराकास, भुज की 29 वीं छमाही बैठक का आयोजन नराकास, भुज के अध्यक्ष एवं क्षेत्रीय प्रमुख श्री जगजीत कुमार की अध्यक्षता में किया गया. इस अवसर पर उप निदेशक, राजभाषा विभाग, भारत सरकार डॉ. सुस्मिता भट्टाचार्य विशेष रूप से उपस्थित रहीं.

# अभिप्रेरणा कार्यक्रम/कार्यशालाएं

क्षेत्रीय कार्यालय, भुवनेश्वर

क्षेत्रीय कार्यालय, जमशेदपुर

क्षेत्रीय कार्यालय, गुलबर्गा

क्षेत्रीय कार्यालय, हुब्बल्ली

भोपाल अंचल एवं भोपाल क्षेत्र

## क्षेत्रीय कार्यालय, अहमदाबाद क्षेत्र–2 द्वारा हिंदी प्रेरकों के लिए अभिप्रेरणा कार्यक्रम

16 फरवरी 2021 को अहमदाबाद क्षेत्रीय कार्यालय-2 द्वारा क्षेत्रीय प्रमुख श्री संजय कुमार चौधरी की अध्यक्षता में हिंदी प्रेरकों के लिए अभिप्रेरणा कार्यक्रम का आयोजन किया गया. कार्यक्रम में 43 हिंदी प्रेरकों को राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी विभिन्न कार्यों की जानकारी प्रदान की गई.

मुंबई अंचल

क्षेत्रीय कार्यालय, मुजफ्फरपुर

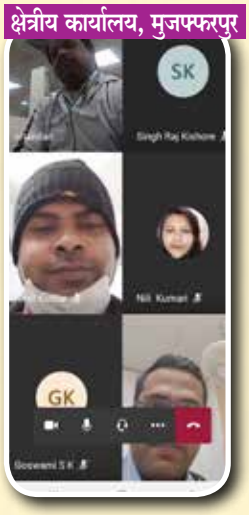


क्षेत्रीय कार्यालय, भरूच

क्षेत्रीय कार्यालय, मेहसाना

रायपुर व बिलासपुर क्षेत्र

## विश्व हिंदी दिवस क्षेत्रीय कार्यालय

साबरकांठा

राँची

जमशेदपुर

आणंद

# विभिन्न प्रतियोगिताएं

## क्षेत्रीय कार्यालय, औरंगाबाद

दिनांक 14 जनवरी 2021 से 28 जनवरी 2021 तक औरंगाबाद क्षेत्र द्वारा मराठी भाषा संवर्धन पंधरवडा का आयोजन किया गया. पंधरवडा के दौरान मराठी भाषा में आशुभाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया. यह प्रतियोगिता क्षेत्रीय प्रमुख श्री रामावतार पालीवाल और उप क्षेत्रीय प्रबंधक के मार्गदर्शन में आयोजित की गयी.

## क्षेत्रीय कार्यालय, दक्षिणी दिल्ली

दिनांक 03 मार्च, 2021 को दक्षिणी दिल्ली क्षेत्र द्वारा हिंदी ज्ञान प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया. इस अवसर पर उप क्षेत्रीय प्रमुख श्री संदीप कुमार ने विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया.

## क्षेत्रीय कार्यालय, उत्तरी दिल्ली

क्षेत्रीय कार्यालय, उत्तरी दिल्ली क्षेत्र में फरवरी, 2021 माह के दौरान अंतर्विभागीय हिंदी-ई मेल प्रतियोगिता का आयोजन किया गया. क्षेत्रीय प्रमुख श्रीमती निधि कुमार एवं उप क्षेत्रीय प्रमुख श्री अनुज चित्रांश के कर-कमलों से अनुपालन विभाग को रोलिंग ट्रॉफी प्रदान की गई.

## आदर्श हिंदी शाखा आदर्श सोसायटी, सूरत शहर क्षेत्र

दिनांक 10 मार्च 2021 को सूरत शहर क्षेत्र की आदर्श हिंदी शाखा आदर्श सोसायटी के स्टाफ सदस्यों के लिए सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता का आयोजन किया गया. सफल प्रतिभागियों को शाखा प्रमुख श्री अमित आशीष द्वारा पुरस्कृत किया गया.

दिनांक 20 जनवरी 2021 को खेडा क्षेत्र की आदर्श शाखा उत्तरसंडा में सामान्य बैंकिंग प्रतियोगिता का आयोजन किया गया. यह प्रतियोगिता क्षेत्रीय प्रमुख श्री हेमेन्द्र चोकसी एवं उप क्षेत्रीय प्रमुख श्री मयुर पी ईदनानी की उपस्थिति में आयोजित की गई.

## क्षेत्रीय कार्यालय, नागपुर

क्षेत्रीय कार्यालय, नागपुर में दिनांक 14 जनवरी 2021 से 28 जनवरी 2021 के दौरान भाषा संवर्धन पंधरवडा का आयोजन किया गया. इस दौरान ऑनलाइन सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता तथा गीत गायन/कविता प्रस्तुतीकरण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया.

## अंचल कार्यालय, मंगलूरु

अंचल कार्यालय, मंगलूरु द्वारा 5 फरवरी 2021 को क्षेत्रीय प्रबंधक (मंगलूरु-शहर) श्री सुनिल के पै की अध्यक्षता में कविता पाठ प्रतियोगिता का आयोजन किया गया. इस अवसर पर मुख्य प्रबन्धक श्री रजनीश भी उपस्थित रहे.

## क्षेत्रीय कार्यालय, जबलपुर

क्षेत्रीय कार्यालय, जबलपुर द्वारा दिनांक 23 फरवरी 2021 को उप क्षेत्रीय प्रमुख श्री राजीव कुमार मुख्य प्रबन्धक की अध्यक्षता में जबलपुर शहर स्थित बैंकों के स्टाफ सदस्यों हेतु अंतर बैंक तात्कालिक निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया.

## आदर्श हिंदी शाखा रनौली/रणु

बड़ौदा शहर I. क्षेत्र की आदर्श हिंदी शाखा रनौली द्वारा दिनांक-11 फरवरी 2021 तथा आदर्श शाखा रणु द्वारा 19 फरवरी 2021 को स्टाफ सदस्यों के लिए हिंदी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया.

## आदर्श हिंदी शाखा उत्तरसंडा, खेड़ा क्षेत्र

# डार्क हॉर्स

## मायावी मृगतृष्णा की वास्तविकता और स्वतंत्र अभिव्यक्ति की कहानी

साहित्य अकादमी युवा पुरस्कार 2016 से सम्मानित 'डार्क हॉर्स' नीलोत्पल मृणाल द्वारा लिखित उपन्यास है. डार्क हॉर्स का अर्थ है रेस का ऐसा घोड़ा जिस पर किसी ने भी दाँव नहीं लगाया है और न ही किसी ने जीतने की उम्मीद की हो. और यदि वही घोड़ा सबको पीछे छोड़ आगे निकल जाए, तो उसी को 'डार्क हॉर्स' कहते हैं.

इस उपन्यास का मुख्य किरदार संतोष बिहार के भागलपुर से सिविल सर्विस की तैयारी के लिए दिल्ली आता है. संतोष दिल्ली में आते ही समझौतावादी हो जाता हैं. उत्तर प्रदेश, बिहार जैसे हिंदी राज्यों के आर्थिक रूप से कमजोर छात्र सिविल सर्विस की तैयारी करने के लिए इलाहाबाद का रुख करते हैं और जो थोड़े साधन-संपन्न होते हैं, वे दिल्ली के मुखर्जी नगर को अपना आशियाना बनाते हैं. उपन्यास को पढ़ते समय ऐसा लगता है हम मुखर्जी नगर की किसी ऐसी जगह बठे हैं जहाँ से इस उपन्यास के सारे किरदारों को आते-जाते, उठते-बैठते, पढ़ते-लिखते, खाते-पीते देख रहे होते हैं. सबसे अच्छी बात है कि इस उपन्यास के सारे किरदार जिस जगह से आये हैं वहाँ की ही जुबान बोलते हैं. चाय पर चकल्लस के दौरान हुई किसी से एक छोटी सी गलती भी कैसे इतिहास की बड़ी से बड़ी गलती साबित हो जाती है. इसी गलती को जो पकड़ के अच्छी तरह से समझ लेता है, उसके लिए रिजल्ट के दिन जश्न और जो नहीं समझ पाता है उसके लिए मातम. इसी जश्न और मातम की संघर्षपूर्ण मगर सच्ची तस्वीर है 'डार्क हार्स'. जिसमें संघर्ष सिर्फ एक परीक्षा की तैयारी को लेकर नहीं है, बल्कि गांव-शहर की संस्कृतियों का भी संघर्ष है, खान-पान और रहन-सहन से लेकर भाषाई सुचिता और भदेसपन का भी संघर्ष है, बौद्धिकता और सहजता का संघर्ष है, गंवई बाप और शहर से समझौतावादी हो चला उसके पुत्र के बीच का संवाद संघर्ष है, सफलता और असफलता का संघर्ष है, कोचिंग क्लास में अपनी पहली प्रेमिका या प्रेमी खोजने का संघर्ष है, भारी-भरकम सिलेबस के बीच कहीं कोई मस्ती का कोना ढूँढने का संघर्ष है, मर्यादाएं-परंपराएं बनाए रखने या झट से तोड़ देने का संघर्ष है. खुद के मिजाज और व्यवस्था के लचीलेपन का संघर्ष है. ये सारे संघर्ष मिलकर एक आत्मकथा तैयार करते हैं. नीलोत्पल खुद भी सिविल सर्विसेज की तैयारी करते थे, इस लिहाज़ से यह उनकी आत्मकथा है. दरअसल यह उपन्यास छात्र जीवन की संघर्ष गाथा है.

'डार्क हॉर्स' उपन्यास की खास बात यह है कि सारे किरदार बोलते हैं. किरदारों ने जब चाहा, जो चाहा बोल दिया. इस उपन्यास में जीवन के सजीव चित्रण को ही अक्षरों, शब्दों और वाक्यों में पिरोया गया है. अपने उपन्यास में निलोत्पल ने साहस दिखाते हुए बेबाकी से यथार्थ की तलछट को कुरेदते हुए एक ऐसी रोचक और बौद्धिक दुनिया की गर्म भट्टी का सच लिखा है, जिसमें कई लोग तप के सोना हो जाते हैं तो कई जल कर खाक. 'डार्क हॉर्स' अंधेरे रास्ते से होकर उजाले तक का सफर है. भाषा में रवानगी है, व्यंग में धार है, संवादों में संवेदना के गहरे उतार-चढ़ाव हैं. किस्सागोई का अपना अलग अंदाज है, जो पाठक को पढ़ने के लिए मजबूर करता है.

यह कहानी बताती है कि छात्र किस तरह से अपने रास्ते से भटकते हैं और कुछ अपने उद्देश्य पर एकचित होकर अपने सपनों को हासिल करते हैं. यह मुखर्जी नगर की ऊबड़-खाबड़ भूमि में छात्रों के संघर्ष को नागरिक विकल्प चुनने से लेकर उच्च किराए के दबाव, चतुर मित्रों, धनवान जमींदारों, स्वार्थी रिश्तेदारों और परीक्षा में भाग्य के कारक को बतलाता है.

पूरी कहानी में मुख़र्जी नगर सपनों का महल है, जहाँ बसता है छोटा सा पुरबैया देस. बहती है गाँव की खाँटी सोंधी महक. बोली जाती है ठेठ बोली. टकराव होता है गँवई सहजता और शहरी बौद्धिकता का. जहाँ पहनावा, बोली और हिंदी माध्यम के नाम पर इन युवाओं के सामने कुंठायें परोसी जाती हैं. जहाँ सफलता और असफलता के पैमाने पर हर दिन उनकी कंडीशनिंग, उनके मूल्यों को परखा जाता है और जहाँ समझौतावादी प्रवृत्ति में लड़के अपनी स्वाभावगत मौलिकता स्वतः ख़त्म करते चले जाते हैं. जहाँ हर दिन मिलने वाले ये कल्चरल शॉक इनके आत्मविश्वास की जड़ें हिला जाता है.

वस्तुतः 'डार्क हॉर्स संतोष जैसे उन तमाम युवाओं की आत्मकथा है जो अपनी सुरक्षा और महत्वाकांक्षा के बीच उपजे द्वंद से लगातार जूझते रहते हैं. जो सिर्फ़ और सिर्फ़ अपनी जिजीविषा से हार और जीत के इस खेल में खुद को मज़बूती से बनाये रखते हैं. संवेदनाओं के गहरे उतार चढ़ाव से होते हुए एक अकुलाहट, एक छटपटाहट, एक बेचैनी, कुछ तनाव और ढेर सारे भटकाव से गुज़रते हुए सफ़लता के शिखर तक पहुँचने की कहानी है 'डार्क हॉर्स.

उपन्यास की कुछ बेहतरीन लाइनें

'जिंदगी आदमी को दौड़ने के लिए कई रास्ते देती है, जरूरी नहीं है कि सब एक ही रास्ते दौड़ें. जरूरत है कि कोई एक रास्ता चुन लो और उस ट्रैक पर दौड़ पड़ो. रुको नहीं, दौड़ते रहो. क्या पता तुम किस दौड़ के 'डार्क हॉर्स' साबित हो जाओ.'

'जेतना दिन में लोग एमए - पीएचडी करेगा, हौंक के पढ़ दिया तो ओतना दिन में तो आईएएसे बन जाएगा.'

हाँ डॉक्टर और इंजीनियर बनके आप अपना करियर बना सकते थे, पर अगर अपने साथ साथ कई पीढ़ियों का करियर बनाना है तो आईएएस बनना होगा.

उपन्यास बहुत ही सरल शब्दों में सफलता की तरह अवधारणाओं पर रत्नों का उत्पादन करता है. एक मूल अवधारणा के बावजूद, लेखक कहीं न कहीं परीक्षा में संतोष का चयन करके सकारात्मक प्रवृत्ति का शिकार होता है. यही पूरे काम को उपन्यास की समग्र भावना के विपरीत बनाता है. अंततः, जिन मूल्यों को चुनौती दी जा रही है, वे लेखक द्वारा स्पष्ट रूप से पुष्ट प्रतीत होते हैं. लेखक ने यदि मुखर्जी नगर के बजाय थोड़ा रुककर पूर्वी उत्तर प्रदेश और बिहार के गांवों की कहानी को ज़रा और विस्तार दिया होता तो साहित्य की दृष्टि से एक अच्छी कृति बनती. हालांकि कहानी समानान्तर है यानी आपको यह पता चल जाता है कि आगे क्या होनेवाला है. लेखक के पास कहने के लिए बहुत कुछ था. मसलन एग्ज़ाम क्लियर करने के बाद आनेवाले शादी के ऑफ़र और लड़कों के अपने प्रेम संबंध के चलते पैदा होनेवाली दुविधा. जैसे परीक्षा पास करनेवाले विमलेंदू के साथ होता है. पर कहानी में बहाव है, हल्के-फुल्के लम्हे हैं, गंभीर पल भी हैं, यही कारण है कि इसको पढ़ना शुरू करने के बाद आप इसे बंद करके बगल में नहीं रख सकते.

पुस्तक आपको हंसाती है, कुछ उदाहरणों में अपनी आँखें नम भी करती है और अंत में आपको एक सुखदायक मुस्कान के साथ छोड़ देती है. यह खुद को साबित करने के लिए आकांक्षाओं, आनंद, संघर्ष, हताशा, निराशा, दिल टूटना, डर, सफलता और संकल्प की कहानी है. 'डार्क हॉर्स' वास्तविकता की एक अभिव्यक्ति है जो यथार्थ के धरातल पर एक तरफ सफलता के आस्वाद को चिन्हित करता हुआ एक अदद नौकरी के लिए सिविल सर्विस को ही पैमाना मानता है, तो वहीं दूसरी तरफ बीए-एमए-पीएचडी की डिग्रियां हासिल करने के बाद भी उसी एक अदद नौकरी के न मिलने पर हमारी शिक्षा व्यवस्था पर कई सवाल भी खड़े करता है. कुल मिलाकर डार्क हॉर्स एक बेहद प्रेरणादायक उपन्यास है. यह उपन्यास एक मायावी मृगतृष्णा की वास्तविकता को चित्रित करने की कोशिश करता है. ❑❑❑

**– अशोक कुमार**
*मुख्य कार्यपालक*
*बैंक ऑफ़ बड़ौदा, सेशेल्स*

## विश्व हिंदी दिवस

# चित्र बोलता है

1

चेहरे का भोलापन आँखों की मासूमियत,
इन्हीं से तो ज़िंदा है धरती पे इंसानियत.
बचपन है नादानी करे बेज़ुबानों से भी प्यार,
इसी में तो छिपा है भाई प्रेम शब्द का सार.

**– रैना मराठे**
*प्रबन्धक, गुड़गांव मुख्य शाखा, गुड़गांव क्षेत्र*

3

चित्र नहीं, बचपन बोलता है,
इंसानियत का आइना हूँ मैं.
निर्मल, निश्छल, निडर, स्वाभाविक,
वो कस्तूरी हूँ जिसे तू दर दर खोजता है.

**– सौम्या सेठ**
*अधिकारी, मानव संसाधन प्रबंधन, अंचल कार्यालय, मेरठ*

2

शब्द नहीं पर बातें प्यारी,
बाल मनों की अद्भुत यारी.
अन्तर्मन की भाषा सारी,
एक दूजे के नेह निराली.
ईश्वर के कृत मोहक प्यारी,
प्रेम समर्पण प्रेम पुजारी.

**– प्रवीण कुमार झा**
*जी-28, सैक्टर-20, नोएडा-201301*

5

परसेवा का भाव तो देखो,
शिशु के मनोभावों में,
कितना अद्भुत दृश्य है,
मानवता के आविर्भावों में.

**– अंजली कुमारी**
*प्रबन्धक, विधि विभाग, अंचल कार्यालय, नई दिल्ली*

4

ये प्यार का रिश्ता है, जो भाषा से परे है,
जिसके मन मे कपट है वो ही इस क्षण से सिहरे है.
मैं तो बाल गोपाल हूँ, इन्सान रुपी जानवर नहीं,
जानते हो तुम भी ये, इसलिए मुस्कुराते हुए मेरे पास यूँ खड़े हो.

**– सुरभि पारीक**
*अधिकारी, क्षेत्रीय कार्यालय, पश्चिमी दिल्ली क्षेत्र*

7

मैं तुम्हारे संग खेलूं भैया, मेरे हाथों से तुम खाओ,
एक प्रकृति से उपजे सब जब, फिर कैसा भेदभाव.
ये ही सीख दें हम दोनो जग को, दूर करो हर दुराव,
जीवन है नश्वर अल्पकालिक, हंसी ख़ुशी बिताओ.

**– तनवीर सिद्धार्थ**
*मुख्य प्रबंधक, अंचल कार्यालय, कोलकाता*

6

मासूम हुई मासूमियत भी,
जानवर इंसान में फर्क नही जानती.
ज़िंदा है इंसानियत अभी भी,
जो दोनों में फर्क नहीं मानती.

**– श्रीमती नीलम परमार**
*अंचल कार्यालय, नई दिल्ली*

8

कितना मासूम है बचपन वो,
जो जानता नहीं.
कि हाथ बढ़ा गर दें कुछ,
हर एक नहीं लेता है.

**– शक्तिवीर सिंह**
*राजभाषा अधिकारी, मदुरै क्षेत्र*

## प्रथम तीन विजेताओं को पुरस्कार स्वरूप रू. 500 के गिफ्ट कार्ड / राशि दी जा रही है

'चित्र बोलता है' के स्थायी स्तंभ के अंतर्गत अक्तूबर-दिसंबर, 2020 अंक में प्रकाशित चित्र पर पाठकों से काफी उत्साहवर्धक प्रतिक्रयाएं/रचनाएं प्राप्त हुई हैं. पाठकों से अनुरोध है कि इस शृंखला में प्रकाशित इस चित्र पर आधारित अपने विचार पद्य के रूप में हमें अधिकतम चार पंक्तियों में लिख कर भेजें. श्रेष्ठ तीन रचनाओं को पुरस्कृत (प्रत्येक को रू. 500/-) किया जाएगा और उन्हें हम 'अक्षय्यम्' के आगामी अंक में भी प्रकाशित करेंगे. पाठक अपने विचार हमें डाक से या ई-मेल पर अपने व्यक्तिगत विवरण और स्वरचित घोषणा सहित 17 जुलाई 2021 तक भेज सकते हैं.

## प्रमुख गतिविधियां

### नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (बैंक) बड़ौदा की 66वीं छमाही बैठक का आयोजन

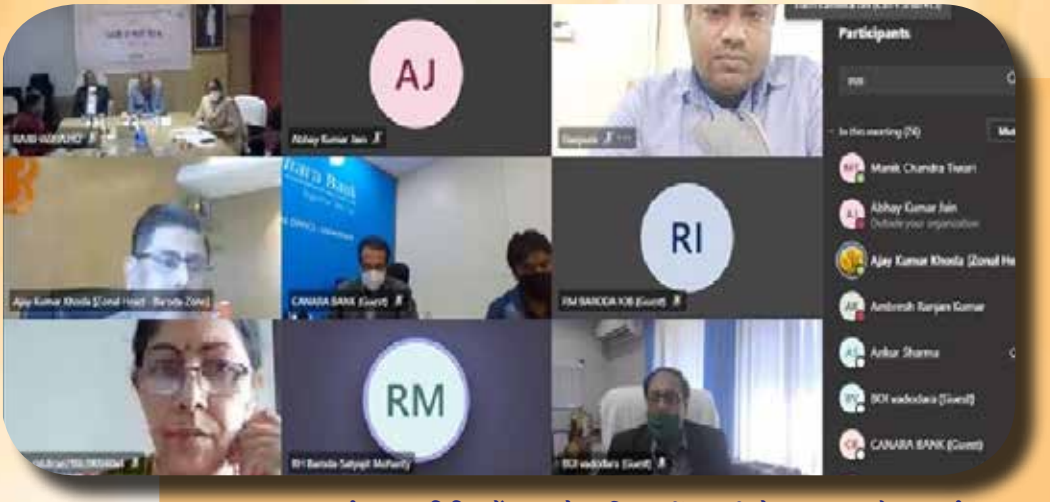


नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (बैंक) बड़ौदा की 66वीं छमाही बैठक का आयोजन वर्चुअल माध्यम से दिनांक 22 जनवरी 2021 को किया गया. इस बैठक में भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग की उप निदेशक डॉ. सुस्मिता भट्टाचार्य, समिति के अध्यक्ष एवं मुख्य महाप्रबंधक (परिचालन) श्री वेणुगोपाल मेनन, बड़ौदा अंचल के अंचल प्रमुख श्री अजय के खोसला एवं सदस्य कार्यालय के कार्यपालकगण तथा अन्य राजभाषा प्रभारी भी शामिल हुए.

## विदेशी कार्यालयों में विश्व हिंदी दिवस समारोह

### बैंक के फिजी कार्यालय में विश्व हिंदी दिवस का आयोजन

दिनांक 12 जनवरी 2021 को बैंक के फिजी परिचालन द्वारा विश्व हिंदी दिवस मनाया गया. बैंक की मुख्य शाखा, सुवा, फिजी में आयोजित कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में श्री योगेश जितेन्द्र करण, स्थायी सचिव (प्रधानमंत्री कार्यालय), आप्रवासन विभाग, गन्ना उद्योग एवं कार्यवाहक स्थायी सचिव (विदेश मंत्रालय) उपस्थिति रहे. कार्यक्रम में सम्मानित अतिथि के तौर पर कार्यवाहक भारतीय राजदूत फिजी, श्री सुकांता चरण साहू भी उपस्थित रहे. इस अवसर पर फिजी परिचालन के मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री सुधांशु शेखर खमारी ने अतिथियों का स्वागत किया.

### बैंक ऑफ़ बड़ौदा (युगांडा) में विश्व हिंदी दिवस समारोह आयोजित

बैंक ऑफ़ बड़ौदा (युगांडा) में विश्व हिंदी दिवस का आयोजन किया गया. इस अवसर पर बीओबी (युगांडा) के प्रबंध निदेशक श्री आर के मीणा, कार्यपालक निदेशक तथा अन्य स्टाफ सदस्य उपस्थित रहे.

# यहां थी वह नदी

जल्दी से वह पहुँचना चाहती थी
उस जगह जहां एक आदमी
उसके पानी में नहाने जा रहा था
एक नाव
लोगों का इंतज़ार कर रही थी
और पक्षियों की कतार
आ रही थी पानी की खोज में

बचपन की उस नदी में
हम अपने चेहरे देखते थे हिलते हुए
उसके किनारे थे हमारे घर
हमेशा उफनती
अपने तटों और पत्थरों को प्यार करती
उस नदी से शुरू होते थे दिन
उसकी आवाज़
तमाम खिड़कियों पर सुनायी देती थी
लहरें दरवाज़ों को थपथपाती थीं
बुलाती हुईं लगातार

हमें याद है
यहाँ थी वह नदी इसी रेत में
जहाँ हमारे चेहरे हिलते थे
यहाँ थी वह नाव इंतज़ार करती हुई

अब वहाँ कुछ नहीं है
सिर्फ रात को जब लोग नींद में होते हैं
कभी-कभी एक आवाज़ सुनायी देती है रेत से.

– मंगलेश डबराल